हिन्दी मासिक

जिनवाणी

श्री नमस्कार महामन्त्र

णमो अरिहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमो आयरियाणं
णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्वसाहूणं ॥
एसो पंच णमोक्कारो,
सव्व-पावप्पणासणो,
मंगलाणं च सव्वेसिं,
पढमं हवइ मंगलं ।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल जयपुर

वर्ष 59 अंक 7
जुलाई, 2002 आषाढ़ 2059

अलंकारों के सौंदर्य शिल्प!

देश के सुविख्यात स्वर्ण आभूषण प्रतिष्ठान " रतनलाल सी. बाफना ज्वेलर्स" जलगाँव के यहाँ। सोने - चांदी के यह सुंदर अलंकार शिल्प!

अलंकारों के सैंकडो विविधतम नये नमूने, एक से बढकर एक आकर्षक कलात्मक कारीगरी से सजे अनगिनत डिजाईन्स।

कुंदन-जडाव, मीनाकाम, ऑक्साईड पॉलीश, छिलाई व कारटींग काम की उच्चतम श्रेणी।

हीरों के आभूषणों की नई विशाल मालिका।

चांदी में बने नये मनमोहक वैभवशाली बर्तन हाजिर स्टॉक में उपलब्ध हैं।

गहनों की 'वापसी विश्वसनीयता' स्पष्ट रूपसे बिल पर और अलंकारों पर भी।

व्यापारियों के लिए सोने गहने एवं चांदी पात्रों की होलसेल बिक्री सेवा शुरू है।

रतनलाल सी. बाफना, ज्वेलर्स

पारस महल
चांदी बर्तन शोरुम
'शुद्ध आहार शाकाहार'

सुभाष चौक जलगाँव
दूरभाष : २२३९०३, २२५९०३, २२२६२९, २२२६३०

नयनतारा
स्वर्णालंकार शोरुम
डायमंड शोरुम
(रविवार अवकाश)

चेतावनी : हमारी कहीं भी शाखा एवं एजंट नहीं!

जिनवाणी हिन्दी-मासिक

मंगल-मूल, धर्म की जननी, शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी, फिर प्रगटी यह 'जिनवाणी'

- **प्रकाशक**
  प्रकाशचन्द डागा
  मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
  दुकान नम्बर 182-183 के ऊपर, बापू बाजार,
  जयपुर-302003 (राज.), फोन नं. 565997

- **संस्थापक**
  श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

- **सम्पादक**
  डॉ. धर्मचन्द जैन, एम.ए., पी-एच.डी.

- **सम्पादकीय सम्पर्क सूत्र**
  3 K 24-25, कुड़ी भगतासनी हाउसिंग बोर्ड
  जोधपुर- 342005(राज.)
  फोन नं. 0291-747981

- **सम्पादक मण्डल**
  डॉ. संजीव भानावत, एम.ए. पी-एच.डी.

- **भारत सरकार द्वारा प्रदत्त**
  रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57
  डाक पंजीयन सं. RJ2803/02

- **सदस्यता**

स्तम्भ सदस्यता	11000 रु.
संरक्षक सदस्यता	5000 रु.
आजीवन सदस्यता देश में	500 रु.
आजीवन सदस्यता विदेश में	100$(डालर)
त्रिवर्षीय सदस्यता	120 रु.
वार्षिक सदस्यता	50 रु.
इस अंक का मूल्य	10 रु.

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

मा य चंडालियं कासी,
बहुयं मा य आलवे ।
कालेण य अहिज्जित्ता,
तओ झाएज्ज एगगो ॥
-उत्तराध्ययन सूत्र 1.10

व्यवहार क्रूर ना करे कभी,
ना व्यर्थ किसी से बात करे ।
उचित समय पर पढे पाठ
और बैठ अकेला ध्यान धरे ॥10॥

जुलाई 2002
वीर निर्वाण सं. 2528
आषाढ, 2059

वर्ष : 59 **अंक** : 7

मुद्रक : दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोन : 562929

ड्राफ्ट 'जिनवाणी' जयपुर के नाम बनवाकर प्रकाशक के उपर्युक्त पते पर प्रेषित किया जा सकता है।

नोट : यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो।

विषयानुक्रमणिका

प्रवचन / निबन्ध

विवेकः परमो धर्म	: आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.	6
राग रहित (वीतराग) होना ही, बंधन मुक्त होना है	: श्री कन्हैयालाल लोढ़ा	13
सूर्यकिरणों का अद्भुत प्रभाव	: श्री चंचलमल चोरड़िया	16
महामंत्र णमोक्कार : स्वरूप एवं माहात्म्य(8)	: श्री जशकरण डागा	22
उपवास में करणीय और अकरणीय	: न्यायाधिपति श्री श्रीकृष्णमल लोढ़ा	26

विचार / आगम परिचय / पत्र

धर्म का मूल : विनय	: श्री भंवरलाल मेहता	12
स्वाध्याय : भविष्य को सुधारने का साधन	: श्री लक्ष्मीचन्द जैन	21
शिक्षा	: श्री पी.एम. चोरड़िया	29
उत्तराध्ययनसूत्र : छत्तीसवाँ अध्ययन(2)	: प्रो. चाँदमल कर्णावट	34
भैया का पत्र : कॉलेज में प्रवेश करने वालों के नाम	: श्री नवलसिंह जैन	41
साधु–श्रावक का अनुराग	: आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.	68

कथा / कविता / प्रसंग

दुर्लभ जग में जिनवाणी	: श्री नितेश नागोता 'जैन'	25
मेरा परिवार	: सुश्री शर्मिला गोलेछा	28
दशवैकालिक सूत्र : रचना कथा	: श्री प्रकाशचन्द्र जैन 'दास'	36
अहिंसाणुव्रत : छविच्छेद अतिचार	: श्री लालचन्द्र जैन	44
चोर का उत्तर	: श्री प्रकाश गुन्देचा	45
नमस्कार मंत्र पर श्रद्धा का फल	: श्री नारायण लाल मनारिया	47

स्तम्भ / अन्य

सम्पादकीय	: डॉ. धर्मचन्द जैन	3
जैनागम-विशेषांक पर अभिमत	: संकलित	39
साहित्य-समीक्षा	: डॉ. धर्मचन्द जैन	46
समाचार-संकलन	: संकलित	48
संक्षिप्त समाचार	: संकलित	62
बधाई	: संकलित	63
श्रद्धांजलि	: संकलित	65
राष्ट्रीय समाचार	: संकलित	67
साभार–प्राप्ति–स्वीकार	: संकलित	69

सम्पादकीय

सेवा श्रेष्ठ या सामायिक ?

डॉ. धर्मचन्द जैन

यह प्रश्न अनेक बार उठता है कि सेवा मुख्य है या सामायिक? समाज के कुछ लोग सामायिक को मुख्यता प्रदान करते हैं तो कुछ सेवा को। यहीं नहीं, कभी- कभी सामायिक के आराधक सेवाकार्य को आत्म-साधना की दृष्टि से अनुपयोगी बतलाते हैं। उनका कहना है कि सेवा व्यक्ति को बहिर्मुखी बनाती है, जबकि सामायिक अन्तर्मुखी बनाकर कषायों को दूर करने में उपयोगी बनती है। सेवाप्रेमी कहते हैं कि सामायिक में एक घण्टे बैठने की अपेक्षा दीन-दुःखियों, पीड़ितों एवं असहायों के दुःख का निवारण करना मानवता एवं प्राणिसेवा की दृष्टि से अधिक उपयोगी हे। दोनों पक्षों के अपने तर्क हैं, अपना चिन्तन है।

जैन धर्म-दर्शन की दृष्टि से विचार करें तो दोनों कार्यों की अपनी उपयोगिता है। दोनों का महत्त्व है। इस पर अनेकान्त दृष्टि से विचार करने की आवश्यकता है। सामायिक और सेवा दोनों साधनाएँ हैं। सामायिक का समावेश जहां संवर-साधना में होता है, वहाँ सेवा (वैयावृत्त्य) का समावेश निर्जरा-साधना में होता है। किसी अपेक्षा से सामायिक में निर्जरा और सेवा में संवर भी समाहित है, किन्तु प्रधानता से सामायिक को संवर में एवं सेवा को निर्जरा में वर्गीकृत किया जाता है।

सामायिक समभाव की साधना है। इसमें सावद्य प्रवृत्तियों से बचकर विषम परिस्थितियों में भी समभाव में रहने का अभ्यास किया जाता है। सामायिक साधक के मन को निर्मल एवं बलशाली बनाती है। वह आत्मजेता बनने के साथ संसार को भी प्रिय होता है। 48 मिनट की अल्पावधि में स्वाध्याय, ध्यान आदि के साथ की गई सामायिक-साधना जीवन को सम्यक् दिशा की ओर गतिशील करती है। सामायिक का साधक दूसरे जीवों के प्रति भी करुणा, अहिंसा एवं मैत्री के भावों से भरा होता है। वह दूसरे के दुःखों को देखकर अनुकम्पित होता है। उन्हें दूर करने के लिए सन्नद्ध होता है। यदि सामायिक के साधक के मन में दूसरे प्राणियों के प्रति मैत्री एवं वात्सल्य का भाव जागृत नहीं होता है एवं वह दूसरों के साथ छल-कपट और वंचना का ही व्यवहार करता रहता है तो उसकी सामायिक-साधना सफलीभूत नहीं कही जा सकती। सामायिक की साधना करने वाले के जीवन की प्रत्येक प्रवृत्ति में उसकी साधना बोलनी चाहिए। साधना का यह प्रभाव स्वतः स्फूर्त होता है, दिखावटी नहीं हुआ करता। कई साधक परिचितों के साथ दिखावटी मैत्री रखते हैं, और भीतर से उन्हें काटते रहते हैं, यह सामायिक का वास्तविक प्रभाव नहीं है, दिखावटी रूप है। सामायिक जब राग-द्वेष, ईर्ष्या आदि पापों पर विजय की साधना है तो उसमें समत्व, मैत्री, अहिंसा, उपकार आदि गुण स्वतः प्रकट होने

चाहिए। इस प्रकार सामायिक का साधक भी कथञ्चित् अपनी साधना के साथ सेवाभाव से जुड़ जाता है।

दूसरी और सेवाकार्य में रुचि रखने वाला व्यक्ति भी आत्म-साधना के क्षेत्र में आगे बढ़ सकता है। सेवा को जैन धर्म-दर्शन में वैयावृत्त्य कहा गया है। रोगी एवं अशक्त साधु की वैयावृत्त्य करते समय अन्य साधु स्वाध्याय को भी गौण कर देता है। संघनायक की आज्ञा यदि स्वाध्याय काल में भी वैयावृत्त्य करने की होती है तो साधु वैयावृत्त्य को ही प्राथमिकता देता है। आवश्यकसूत्र की हारिभद्रीया टीका के अनुसार गौतम गणधर की पृच्छा में भगवान ने अपने दर्शनों की अपेक्षा ग्लान की सेवा को अधिक महत्त्व दिया है, यथा-

किं भंते! जो गिलाणं पडियरइ से धण्णे उदाहु जे तुमं दंसणेण पडिवज्जइ?

गोयम! जे गिलाणं पडियरइ।

भगवन्! जो ग्लान की सेवा करता है वह धन्य है अथवा जो आपके दर्शन करता है वह धन्य है?

गौतम! जो ग्लान की सेवा करता है वह धन्य है।

ग्लान से तात्पर्य है- दुःखी, खिन्न एवं आर्त्त। साधु-साध्वियों के द्वारा वैयावृत्त्य किए जाने की मर्यादा है। वे पाँच महाव्रत, पाँच समिति, तीन गुप्ति एवं साध्वाचार के अन्य नियमों की मर्यादा रखते हुए पंच महाव्रती एवं समलिंगी की ही सेवा करते हैं। श्रावक का क्षेत्र खुला है, तथापि उसे सेवाकार्य विवेक से ही करना चाहिए। सहयोग देना मात्र सेवा नहीं है। दूसरों के जीवन को बचाना, उन्हें सन्मार्ग पर लगाना, उनके दुर्व्यसन छुड़वाना, उनका अर्थ सहयोग करना भी सेवा है। सेवा करते समय स्वयं के लिए प्रतिफल की अभिलाषा नहीं रखनी चाहिए। यदि प्रतिफल की अभिलाषा से सेवा की जाती है तो वह सौदा है, सेवा नहीं। सेवा के विभिन्न आयाम हैं। जिसकी जैसी रुचि एवं योग्यता है वह उस प्रकार के सेवाकार्य में संलग्न हो सकता है।

सेवा करने वाले में सहिष्णुता, समता, करुणा, मैत्री आदि सद्गुणों का सहज विकास होता रहता है। सहिष्णुता, निर्लोभता आदि भाव उसकी कर्म-निर्जरा में कारण बनते हैं। द्वादश प्रकार के तप में से सेवा (वैयावृत्त्य) की गणना आभ्यन्तर तप में की गई है। वैयावृत्त्य के संदर्भ में उत्तराध्ययन सूत्र (29.43) में कहा गया है कि वैयावृत्त्य से तीर्थंकर नाम गोत्र कर्म का उपार्जन होता है। आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. ने सेवा में रुचि रखने वालों को निःस्वार्थ सेवा की प्रेरणा की। सेवा भी मनुष्य के जीवन का एवं उसकी वृत्तियों का परिष्कार करती है। सेवा का रूप उदात्त होना चाहिए। आज अर्थ सहयोगी को जो महत्त्व समाज में दिया जाता है वह सामान्य सेवाभावी कार्यकर्ता को नहीं, इसमें समाज की सूक्ष्म दृष्टि का अभाव ही कारण है।

किसी भी कार्य की सम्पन्नता में समय एवं शक्ति का निःस्वार्थ योगदान करने वाले का महत्त्व जब तक समाज नहीं समझेगा तब तक समाज एक नहीं हो सकेगा और न हीं आगे बढ़ सकेगा। यहाँ एक बिन्दु यह भी ध्यातव्य है कि सेवा करने वाले के त्याग का मूल्य धन से नहीं आंका जा सकता। धन से मूल्य आंकने पर सेवा का महत्त्व कम हो जाता है, जो समाज के वास्तविक विकास में सहायक नहीं है।

अब विचार यह किया जाना है कि सेवा एवं सामायिक में क्या श्रेष्ठ है? इसके उत्तर में कहना होगा कि श्रेष्ठता व्यक्ति की पात्रता पर निर्भर करती है। वह कितने विवेक से सेवा कार्य करता है तथा कितने विवेक से सामायिक करता है, यह ही उसके लिए उपयोगी है। कर्म-निर्जरा में एवं संवर में दोनों सहयोगी हैं। सामायिक में जहां अशुभ योगों की निवृत्ति होने से संवर की प्रधानता मानी गई है, जो नये कर्म-बन्धन को रोकने में सहायक है वहां सेवा स्वयं एक तप है, अतः उसके सम्यक् आचरण से पूर्वोपार्जित पाप कर्मों की निर्जरा होती है। सेवाभावी व्यक्ति अशुभ विचारों, सावद्य वचनों आदि पर भी नियन्त्रण करके चलता है तो कथञ्चित् वह भी संवर का आराधक बनता है। इस प्रकार आपेक्षिक दृष्टि से दोनों प्रवृत्तियाँ अपने-अपने स्थान पर महत्त्वपूर्ण हैं। इसलिए सामायिक-साधक किसी सेवाभावी व्यक्ति को हीन समझे या सेवाभावी व्यक्ति सामायिक-आराधना को व्यर्थ समझे तो यह उचित नहीं है। धर्म की आराधना एवं आत्मिक विकास में दोनों का अपना महत्त्व है। दोनों ही साधना रूप हैं। बशर्ते वे साधनाएँ सम्यक्रूपेण की गई हों।

सेवा एवं सामायिक परस्पर विरोधी नहीं हैं, अपितु एक-दूसरे के पूरक हो सकते हैं। सेवा का एक अन्य पक्ष यह भी है कि इससे सेवक एवं सेव्य दोनों को लाभ होता है। सेवक को कर्म-निर्जरा होने से एवं सेव्य की प्रसन्नता को देखकर प्रमोद का अनुभव होता है और सेव्य के कष्ट का निवारण होने से उसे भी लाभ ही है। कदाचित् सेव्य में भी सेवा के संस्कारों का वपन हो सकता है। यह उसके आत्मिक विकास का दूसरा लाभ है। इस प्रकार सेवा में स्व एवं पर दोनों का कल्याण सम्भव है। सामायिक में आत्मिक निर्मलता की प्रधानता है, उसके व्यवहार से भी दूसरों को प्रसन्नता का अनुभव हो सकता है। किन्तु दोनों में एक स्थूल अन्तर है सेवा में सेव्य एवं सेवक दोनों एक ही काल में लाभान्वित होते हैं। सामायिक-साधना में ऐसा स्थूल स्तर पर नहीं होता। सूक्ष्म स्तर पर तो वहाँ भी जीवों को अभयदान मिलता है। किन्तु स्थूल स्तर पर सामायिक का काल भिन्न एवं अन्यों के साथ उसके व्यवहार का काल प्रायः भिन्न होता है। इस व्यवहार में उसकी सामायिक का प्रभाव अंकित होता है। इस प्रकार सामायिक एवं सेवा दोनों ही साधकों के द्वारा उपादेय हैं तथा दोनों में से किसी भी एक को पहले अपनाकर स्व-पर कल्याण के मार्ग पर आगे बढ़ा जा सकता है।

विवेक: परमो धर्म:

जैनाचार्य पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा.

अविवेक दु:ख का कारण है और विवेक दु:ख की स्थितियों में भी सुख का अनुभव कराता है। विवेक के अभाव में यौवन, धन-सम्पत्ति, सत्ता आदि भी अनर्थकारी हो जाते हैं। विवेक के बिना प्रत्येक प्रवृत्ति बन्धन का कारण है और विवेक की उपस्थिति में कोई भी प्रवृत्ति बन्धनकारी नहीं होती। आचार्यप्रवर ने विक्रोली ईस्ट, मुम्बई के तपागच्छ उपाश्रय में 16 जून 2002 को फरमाये अपने प्रवचन में विवेक का सुन्दर विवेचन किया है। आज की विषम स्थितियों के अनेक उदाहरण देकर आचार्यप्रवर ने श्रोताओं एवं पाठकों की आँखें खोली हैं। प्रवचन का आशुलेखन श्री नौरतन जी मेहता, जोधपुर ने किया है। *-सम्पादक*

अनादिकालीन संसार के इस चक्र में यह जीव आज तक भ्रमण करता आ रहा है। कभी दु:ख-कभी सुख, कभी लाभ-कभी हानि, कभी यश-कभी अपयश, कभी सम्मान-कभी अपमान, इन विचित्र स्थितियों से जीव गुजर रहा है। कभी प्रकृति दु:ख देती है। कभी क्षेत्र की वेदना का दु:ख सताता है। कभी रोग से ग्रस्त होकर दु:खी होता है तो कभी संयोग और वियोग के दु:ख हैं। इन सब स्थितियों में परिभ्रमण करते हुए इस जीव को अधिकतर दु:ख मिला है तो उसके अपने अविवेक से।

संसार के दु:ख सुख में परिणत हो सकते हैं। क्षेत्र की वेदना कर्म काटने में सहायक हो सकती है। रोग का आक्रमण कर्म घटाने वाला हो सकता है। कब ? यदि विवेक जग जाय तो। इसी बात को मैं दूसरे शब्दों में कहूँ-आप बाहर से हटकर अन्तर जागरणा की ओर बढ़ें तो दु:ख, दु:ख है ही नहीं, सुख ही सुख है। अविवेक ने सुख को भी दु:ख बना दिया। हितोपदेश में एक श्लोक आता है-

यौवनं धनसम्पत्तिः प्रभुत्वमविवेकिता।
एकैकमप्यनर्थाय, किमु यत्र चतुष्टयम्।।

कहते हैं-यौवन, धन-सम्पत्ति, प्रभुता और अविवेक में प्रत्येक अनर्थकारी है। अगर चारों मिल जायें तो फिर कहना ही क्या ? इनमें भी अविवेक सर्वाधिक अनर्थकारी है। यौवन, धन-सम्पत्ति और प्रभुता भी अनर्थकारी तब होते हैं जब अविवेक हो। इसी तरह एक क्रोध नरक में ले जा सकता है। एक अहं केवलज्ञान रोक सकता है। एक मान स्त्री-जाति का बंध करा सकता है। एक लोभ सर्वनाश करा सकता है। जब एक-एक कषाय इतना दु:खदायी है तो चारों कषायों के मिल जाने पर उस दु:ख का क्या कहना ?

यौवन कितना अनर्थकारी है, इससे आप अपरिचित नहीं हैं। रावण ने जवानी के जोश में, सत्ता और सम्पति से कैसे हाथ धोये ?कैसे अपना और कुल का नाम गंवाया? वह किस तरह एवं क्यों आज तक जलाया जा रहा है, आप जानते हैं। प्रात:काल उठकर उसका कोई नाम नहीं लेना चाहता। इसी जवानी के

नशे ने कीचक का कीचड़ निकाल दिया। मणिरथ के मनोरथ पूरे होने के बजाय उसे महादुःख के स्थान नरक में जाना पड़ा। अर्थोऽनर्थायः। अर्थ अनर्थ करने वाला है। पैसा पाप की जड़ है। सम्पत्ति शैतान बना सकती है। जिस-जिस ने सम्पत्ति का अर्जन किया, कहना चाहिये उसने दुःख के दरवाजे खोले हैं। कल तक जो प्रेम से रहते थे, आपस में भाईचारा था, सम्बन्ध मधुर थे, लेकिन सम्पत्ति के कारण एक अमीर, एक गरीब अलग-अलग जात बन गई। आपकी जात है-बाफना, सुराना, लोढ़ा। पर एक बाफना में और दूसरे बाफना में फर्क है। एक सुराना और है, दूसरा और है। एक लोढ़ा अमीर है, एक गरीब। दोनों जाति से एक हैं फिर फर्क क्या ? एक अमीर, एक गरीब। अमीर-गरीब के इस भेद ने कितने अनर्थ किए हैं, मेरे कहने की जरूरत नहीं, आप जानते हैं।

एक उक्ति है- जवानी दीवानी। एक कहावत है-अर्थ अनर्थकारी। एक धारणा है- राजेश्वरी नरकेश्वरी। अर्थात् राजत्व या सत्ता भी अनर्थ का कारण बन सकती है। सत्ता विपदा को निमन्त्रित करने वाली है। सत्ता के नशे में पिता को जेल में डाल दिया, माँ को मार दिया, बेटे को जहर दे दिया, भाई को बर्बाद कर दिया। आपने ऐसे उदाहरण सुने होंगे। ऐसा क्यों होता है ?उसके पीछे कारण क्या ? कारण है- अविवेक। एक अविवेक जवानी, सम्पदा और प्रभुता सबको ले डूबता है। तो क्या ये डुबाने वाले ही हैं? जन्म लिया है तो जवानी आयेगी, पुण्य किया है तो पैसा मिलेगा। योग्यता है तो सत्ता और अधिकार भी मिलेगा। न जवानी बुरी है, न सम्पत्ति। और न ही सत्ता बुरी है। बुरा है अविवेक, जो इनको ले डूबता है।

इसके विपरीत जवानी है और विवेक भी है तो वह जवानी तिरने का निमित्त बन सकती है। सम्पदा है और विवेक भी है तो वह सम्पदा दानवीर बना सकती है। सत्ता है और विवेक भी है तो सत्ता आर्यकर्म के द्वारा पुण्योपार्जन के माध्यम से भव-बन्धन घटा सकती है। जवानी रावण को आई थी तो राम को भी आई। जवानी कंस को मिली तो कृष्ण को भी मिली। जवान सूर्पणखा हुई थी तो सीता भी हुई थी। किन्तु जवानी के साथ राम-कृष्ण-सीता में विवेक था, इसलिए वह जवानी डुबाने और कलंकित करने के बजाय तिरने का माध्यम बन गई। सम्पदा सांगर सेठ को भी मिली, किन्तु वह सागर में डूब गया। सम्पदा शालिभद्र को भी मिली। उसने सदुपयोग किया तो सर्वार्थसिद्ध की ओर बढ़ गया। सत्ता वाले कोणिक कंस, ब्रह्मदत्त नरक में गये तो राम, कृष्ण, संप्रति, कुमारपाल आज तक गाये जाते हैं। फलितार्थ हुआ विवेक है तो युवावस्था, धन-सम्पदा और प्रभुता तारने वाली है। इसी सत्य को उद्घाटित करते कहा है-

विवेकः परमो धर्मो, विवेकः परमं तपः
विवेकः परमं ज्ञानं, विवेकः मुक्तिसाधनं।।

तीर्थंकर भगवन्तों ने विवेक में धर्म कहा है। मोक्ष के चार चरण हैं-ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप। इन सबमें विवेक की जरूरत है। कबीरदास की भाषा में

कहूँ:- *समझिया समझिया एक है, अण समझिया सब एक।*
समझूं सो हि जाणिये, जाके हृदय विवेक।।

ज्ञान प्रकाश करने वाला है। जैसे आंख मात्र देखती है ऐसे ही ज्ञान मात्र जानकारी देने वाला है। आचार्य भद्रबाहु ने कहा- *णाणं पयासकरं।* ज्ञान मात्र पदार्थों को प्रकाशित करता है। तीर्थंकर भगवान महावीर की अन्तिम वाणी उत्तराध्ययन के मोक्ष मार्ग अध्ययन में आता है-*णाणेण जाणइ भावे।* अर्थात् ज्ञान से जीव-अजीव आदि पदार्थ जाने जाते हैं। किन्तु हेयोपादेय का ज्ञान विवेक से होता है। विवेक से सोच-समझकर हेय को छोड़ा जाता है और उपादेय को ग्रहण किया जाता है। *हेयोपादेयज्ञानं विवेकः।* हेय क्या और उपादेय क्या, इसकी जानकारी विवेक कराता है अर्थात् विवेक से सोच-समझ कर हेय को छोड़ा जाता और उपादेय को ग्रहण किया जाता है। दोष दूर करने और गुण ग्रहण करने की योग्यता निर्माण करता है- विवेक।

विवेक शब्द 'विचिर् पृथक् भावे' धातु से बना है। *गुण-दोष पृथक्करणं विवेकः।* जो दोष से हटाकर गुण की ओर ले जाय वह है- विवेक। पाप से हटाकर धर्म की ओर बढ़ाये, उसका नाम है- विवेक। विवेक यानी होशियारी, समझदारी, चतुराई। विवेक हर क्रिया में जरूरी है। एक आदमी सड़क के बीच चलता है, पास वाला कहेगा-सड़क के बीच मत चल। भाई, तू चलने में थोड़ा विवेक तो रख। यदि चलने में विवेक नहीं रहा तो एक्सीडेन्ट का खतरा हो सकता है। बोलने में भी विवेक की जरूरत है। क्या बोलना, कब बोलना, कितना बोलना और किस तरह बोलना इन सब बातों का ज्ञान विवेक कराता है। यदि बोलने का विवेक नहीं तो महाभारत खड़ा हो सकता है। वैर-वैमनस्य की आग भड़कते और ईर्ष्या-द्वेष के दावानल सुलगते देर नहीं लगती। स्वर्ग-सा संसार नरक की तरह जलाने वाला बन जायेगा।

'विवेकः परमो धर्मो।' विवेक को परम धर्म कहा है। विनय धर्म है। सत्य धर्म है। अचौर्य धर्म है। शील धर्म है। इन सबसे बढ़कर परम धर्म है-विवेक। चाहे क्षमा हो या शील, तप हो या दान, यदि विवेक नहीं तो धर्म अधर्म बन सकता है। कर्म तोड़ने वाली क्रिया भी विवेक नहीं है तो कर्म बांधने वाली बन सकती है। उत्तराध्ययन सूत्र के 20वें अध्ययन की 44वीं गाथा में कहा है:-

विसं तु पीयं जह कालकूटं, हणाइ सत्थं जह कुग्गहीयं।
एसोवि धम्मो विसओववन्नो हणाइ वेयाल इवाविवन्नो।।

आचार्य भगवन्त पूज्य गुरुदेव श्री हस्तीमल जी महाराज ने इसका पद्यानुवाद करते कहा-

जैसे पीकर विष कालकूट, विधि-रहित शस्त्र धारण करके।
अनियंत्रित यक्ष-सदृश करता, यह धर्म विषय में घुल करके।।

अर्थात् जिस प्रकार कालकूट विष पीने वाले का नाश कर देता है। रक्षण करने वाला शस्त्र अच्छी तरह ग्रहण नहीं करने से पकड़ने वाले को काट देता है। वश

में नहीं किया बेताल साधक का नाश कर देता है इसी तरह शब्दादि विषय की आसक्ति युक्त धर्म भी भवभ्रमण की पीड़ा बढ़ाने वाला होता है। अतः सिद्ध हुआ कि धर्म में विवेक की आवश्यकता है।

कहते हैं कि अमृत समझकर अगर कोई जहर पीए तो वह जीवन समाप्त कर सकता है। शस्त्र रक्षण के लिए है। यदि तलवार को मूठ से पकड़ने के बजाय धार से पकड़ ले तो.....? रक्षा करने वाली तलवार या कटारी अंगुलियाँ काट सकती है। साधना से सिद्ध बेताल धन ला सकता है, चिन्ता समाप्त कर सकता है। लेकिन मंत्र जपते-जपते उसमें कोई अविधि हो गई तो मंत्र से सिद्ध बेताल शत्रु को समाप्त करने के बजाय खुद को समाप्त करने वाला बन सकता है। अविवेक से किया गया धर्म बन्धन काटने के बजाय बन्धन बांधने वाला बन सकता है। विसओववन्नो अर्थात् विष-भोग से युक्त धर्म तारने के बजाय डुबाने वाला होता है।

अविवेक आपत्ति का स्थान है। विवेक है तो धर्म, धर्म है। विवेक बिना धर्म निष्प्राण शरीर की तरह है। विवेक बिना धर्मक्रिया अंधी है, महत्त्वहीन है। विवेक बिना धर्म के नारे फटे बांस से निकली थोथी आवाज है। अतः दया-दान, जप-तप-संयम सबमें विवेक की जरूरत है। तीर्थंकर भगवान महावीर ने विवेक जिसे हम यतना भी कह सकते हैं, के लिए फरमाया-

जयं चरे जयं चिट्ठे, जयमासे जयं सए।
जयं भुंजंतो भासंतो, पावकम्मं न बंधइ।।

यतना कहो या विवेक, एक ही बात है। विवेकपूर्वक चलने वाला कर्मबन्ध नहीं करता। अविवेक चाहे चलने में हो या बोलने में, वहां पाप कर्म है। हम चाहे साधु हैं, आप श्रावक हैं यतना अर्थात् विवेक जरूरी है। शास्त्र में हर कार्य के लिये विवेक की आवश्यकता बतलाई है। तुलसीदास जी ने भी कहा- बिनु सत्संग विवेक ना होई। जब तक आप विशिष्ट आचरण वाले ज्ञानियों के संग नहीं रहेंगे तब तक विवेक दृष्टि नहीं जगेगी। दया में धर्म है, क्षमा में धर्म है, तप में धर्म है, किताबों में ये बातें पढ़ सकते हैं, परन्तु विवेक महापुरुषों की संगति से प्राप्त होता है।

आज दया की क्या स्थिति है, विचार करने की जरूरत है। एकेन्द्रिय की दया, पंचेन्द्रिय की हत्या, कुत्ते को रोटी, नौकर को सोटी। बच्चे को चॉकलेट, बहू को घासलेट। आज की स्थिति है *एकेन्द्रिय पर दया पंचेन्द्रिय की हत्या*। जिस पर दया का उतना महत्त्व नहीं वहां दया दिखाई जा रही है और जहां दया करनी चाहिये वहां ध्यान तक नहीं जाता। एकेन्द्रिय की दया के लिए जमीकन्द के और लीलोती के त्याग करने वाले बहुत हो सकते हैं। जीवों की रक्षा के लिय मुंहपत्ति बांधने वाले हैं। ऐसी सूक्ष्म दया करने वाले यदि पैसे के लिए पिता को मारे, भाई-भाई में झगड़ा हो और कोर्ट-कचहरी तक चढ़ने की नौबत आये तो.....। क्या यही दया है ?क्या इसे विवेक कहना ?

कुत्ते को रोटी, नौकर को सोटी : कुत्ते को दूध-मलाई और डबल रोटी दी जा

रही है, उसे गाड़ियों में घुमाया जा रहा है, उसके संरक्षण में नौकर रखे जा रहे हैं। दूसरी ओर एक मानव जो परिस्थितियों का मारा है आपके यहां नौकरी करता है। वह कभी बीमार हो जाय तो उसे नौकरी से हटाने और तनख्वाह काटने वाले हैं या नहीं ?नौकर की बीमारी में दवा दिलाना तो दूर, सांत्वना के दो शब्द मुंह से नहीं निकलते। क्या यही दया है ?

बच्चे को चॉकलेट, बहू को घासलेट : होनहार बनने वाले बच्चों हेतु स्कूल जाने के लिए मोटर, टेक्सी, रिक्शा किया जाता है। उसे चॉकलेट दी जाती है। उसे पैसे दिए जाते हैं। उसकी हर आवश्यकता पूरी की जाती है। जब कि एक बहू जो अपने माता-पिता और परिवार को छोड़कर आई है, उस कुलवधू को प्रताड़ित-पीड़ित किया जाता है और दहेज कम लाने के लिए बात-बात में ताने दिए जाते हैं। कभी-कभी तो उसे आत्हत्या के लिए मजबूर कर दिया जाता है। क्या इसी का नाम दया है ?क्या यही विवेक है ?

दया का स्वरूप क्या ? *अचेतन मोटर खराब, किए हजार रुपये बर्बाद। सचेतन नौकर बीमार, काट ली तनख्वाह की दीनार।* कहना होगा- यह दया का सही भाव नहीं है। कुछ कहते हैं-धर्म की, दया की, दान की बात धर्म स्थान में करना। आप व्यवहार जगत् में सचेतन के साथ कोई रियायत न भी कर सकें तो कम से कम सान्त्वना के दो बोल से, मीठे वचनों से अपना प्यार तो जता सकते हैं।

माल में मिलावट दया में दिखावट : घी, दूध, मिर्च, मसालों में ही नहीं दवा तक में मिलावट का परिणाम है- व्याधियाँ। आज माल में मिलावट का कतई संकोच नहीं। वे मिलावट करने वाले अपने आपको धर्मी और दयालु दिखाने के लिए कबूतरों को दाना, गाय, कुत्ते को रोटी, चींटिंयों को आटा और पर्युषण जैसे पर्व हों तो पशुओं को अभयदान देकर सोचते हैं हम तो धर्मी है, दयावान हैं। क्या उनका यह सोच सही है ?

आज आपकी स्थिति कुछ और है। *चींटी को आटा, गरीब को भाटा* की उक्ति कई जगह देखने को मिलती है। कई हैं जो चींटियों को आटा डालने जाते हैं। पर एक दीन-हीन बाहर खड़ा है, मांग रहा है और यह कहकर मांग रहा है-सेठ साहब ! आपका बेटा वर्षों जीये, आपका पोता होनहार बने, आपका घर-बार भरा रहे। याचक के सुन्दर बोल सुनकर भी सेठ का दिल नहीं पसीजता। उत्तर मिलता है-थांरे बाप रो कमायोड़ो है ?थांरी कांई अठे जमाबन्दी है ? चल, हट, जा। याचक को दुत्कार कर, फटकार कर निकालने वाले कई हैं। इसीलिए एक उक्ति चल पड़ी-चींटी को आटा, गरीब को भाटा।

आज एक हवा बह रही है-*अपनों से प्यार, दूसरों को मार।* अपनी जाति का है, बिरादरी का है, समाज का है वह चाहे आवारा है, गुण्डा है, हत्यारा है, तस्कर है, फिर भी अपना है इसीलिए उसके साथ प्यार और कोई दूसरे धर्म का है, दूसरी बिरादरी का है, अन्य सम्प्रदाय का है उसके साथ कैसा व्यवहार हो रहा है,

मुझे कहने की जरूरत नहीं, आप जानते हैं। अपनों से प्यार और दूसरों को मार इस भावना से साम्प्रदायिक सौहार्द बिगड़ रहा है, दंगे हो रहे हैं और देश को समस्या का सामना करना पड़ रहा है।

मैं कह रहा था–विवेक हर जगह चाहिये। दया में भी विवेक की जरूरत है। दया क्या ? दया के कई रूप हैं। अपनों पर दया करने के साथ परिवार पर, पड़ौसी पर मौहल्ले वालों पर, जाति वालों पर, समाज पर भी दया–करुणा सहज रुप से करने वाले थे और हैं। आचार्य भगवन्त के मुंह से मैंने सुना– दया करने वाले ऐसे–ऐसे भी हुए हैं जो पालतू पशुओं पर भी बच्चों की तरह दया करते थे। खेत में जोते जाने वाले पशुओं को छप्पर के नीचे बारदान लगाकर उन्हें ठण्ड से बचानेवाले थे और हैं। बैल बूढ़ा हो गया, वह काम नहीं कर सकता फिर भी चारे से, पानी से, सार–सम्भाल से उसकी सेवा करने वाले हैं। एक दया का यह रूप है तो एक स्वार्थ का रूप भी मैंने बचपन में सुना है। निर्दय–आतातायी कैसे होते हैं मैं इसको विस्तार से कहने के बजाय एक उक्ति में कहूं– *पेट में लड़की, माता देख भड़की।* अर्थात् भ्रूण हत्या गर्भपात जैसी निर्दय स्थिति से आप स्वार्थ का रुप समझे होंगे। अविवेक ने दया को बदनाम कर दिया। जानवरों पर दया करने वाले व्यक्ति बेटे–बहू पर दया करने को तैयार नहीं। अगर बेटा कमा कर न लाए तो अलग करते देर नहीं करते। तूं तेरे और हम हमारे।

हरिभद्राचार्य ने एक दृष्टान्त दिया। एक बहिन जा रही थी। सोने का हार उसके गले में, कानों में कुण्डल, माथे पर बोर, हाथ में चूड़ियां, नाक में नथ। सोने से लथपथ बहिन को देखकर लोग हँस रहे थे। बहिन ने पूछा–क्यों हंसते हो ? लोगों के हंसने का कारण है उस बहिन ने सोना तो पहन रखा है पर साड़ी और पेटीकोट का पता नहीं। शरीर सजाने के लिए पहले कपड़े चाहिये, गहने बाद में। आप किसी के सिर पर मुकुट और साफा बंधा देखें और धोती नहीं हो तो..? कोई चाहे स्वर्णरत्न जड़ित आभूषण धारण कर ले, किन्तु कपड़े नहीं, तो उसका शृंगार न शोभा वाला है और न ही समझदारी का। वह तो अविवेक है, जिसके कारण लोग हँसते हैं।

दया का क्रम क्या? दया में विवेक चाहिये। पहले पंचेन्द्रिय पर दया होनी चाहिये या एकेन्द्रिय पर? आप स्वयं इसका चिन्तन करें। विवेक होता तो आप अवस्था के साथ व्यवस्था को मूर्तरूप देने में हिचकिचाहट नहीं करते। धारिणी ने अपनी बेटी से कहा–तूं जीवन को सार्थक करना चाहती है तो ब्रह्मचर्य से बढ़कर कोई धर्म नहीं।नहीं निभ पाया तो प्राण अर्पण कर दिये,पर उसने शील की रक्षा की।

आप साधु नहीं बन सकते तो श्रावक बनिये। श्रावक नहीं बन सकते तो कम–से–कम विवेकवान सम्यक्त्वी तो बनिये। ब्रह्मचर्य सर्वश्रेष्ठ धर्म है। तप में सर्वोत्तम है– ब्रह्मचर्य। कदाचित् आप पूर्ण ब्रह्मचारी न बन सकें तो मर्यादा करके चलें। आप सोचें–साधु जीवन भर के लिए नियम पालता है तो क्या आप मर्यादा

करके नहीं चल सकते? क्या यह अनमोल जीवन इस वासना की गन्दगी में खेलने के लिए ही पाया है ?

आपने विजयकुमार–विजयाकुमारी का नाम सुना होगा। सम्बन्ध होने के पहले एक ने कृष्ण पक्ष का तो दूसरे ने शुक्ल पक्ष का नियम ले लिया। संयोग ऐसा बना कि दोनों का विवाह हो गया। वे सोचते–हमें सहज में ब्रह्मचर्य व्रत आराधन का सुन्दर अवसर मिला है। उन दोनों ने विचार किया जिस दिन घर वालों को यह बात मालूम होगी, हम दीक्षा ले लेंगे।एक तो वह उदाहरण है और दूसरी ओर एक जो साठ साल का है,बेटा ही नहीं,बेटे के बेटा है, फिर भी भोग के त्याग की भावना तक नहीं।

आचार्य भगवन्त (आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.) नागौर का चातुर्मास पूर्ण करके धनारी पधारे। वहाँ भगवन्त के श्रीमुख से विजयकुमार–विजयाकुमारी का उपदेश श्रवण कर दो दम्पतियों ने ब्रह्मचर्य व्रत स्वीकार किया। आचार्य भगवन्त ने फरमाया–जब तक ब्रह्मचर्य के नियम होते रहेंगे, मैं यहां से विहार का चिन्तन नहीं करूँगा। छोटे से गांव में एक–एक कर तेईस ब्रह्मचारी हो गये। प्रवचन सभा में एक जाट खड़ा हुआ। कहने लगा– बाबजी ! मैं तो गंवार हूँ, मुझ में उतनी बुद्धि नहीं, पर बेटे के बेटा हो जाय तो हम हमारी खाट पोल में लगा देते हैं। पोता हो जाने पर पत्नी की ओर झांक कर नहीं देखते, भीतर सोने नहीं जाते। वह किसान बोला–अन्नदाता ! आप तो इण महाजनां ने समझावो। धनारी तो छोटा गांव था,मुम्बई महानगर है।आप स्वयं सोचें। अवस्था के साथ व्यवस्था बनाना आपका काम है। यह उम्र कबड्डी खेलने की नहीं,फुटबाल और वालीबॉल खेलने की नहीं। आपको कोई कबड्डी खेलने को कहे तो आप कहेंगे–क्यों बुढ़ापे में हाडका तोड़ाई कांई। यह उम्र खेलने की नहीं हैं। यह बात जैसे आप कहते हैं वैसे ही आपको ब्रह्मचर्य व्रत अंगीकार करने की दिशा में सोचना चाहिये।

आप विवेक जगाइये, शील अपनाइये और साधना में आगे बढ़िये। जो विवेक के साथ साधना पथ पर अग्रसर होगा सुख–शांति प्राप्त करेगा।

धर्म का मूल विनय

श्री भंवरलाल मेहता

1. विनय सभी गुणों का प्रवेश द्वार है
2. विनय अभिमान हटाता है।
3. विनय से नीच गोत्र का क्षय होता है।
4. विनय से अशुभ कर्मों का नाश होता है।
7. विनय से ज्ञान, दर्शन, चारित्र तथा क्षमा, मृदुता आदि गुणों की प्राप्ति होती है।
8. विनय गुण प्रगट होते ही सभी दुर्गुण चोरों की तरह भाग खड़े होते हैं।
9. विनय धर्म का मूल है।
10. विनयवान सभी को प्रिय होता है।

-पाली मारवाड़ (राज.)

राग रहित (वीतराग) होना ही, बंधन मुक्त होना है

श्री कन्हैयालाल लोढ़ा

मुक्ति मनुष्य योनि में ही मिल सकती है, अन्य किसी भी योनि में मुक्ति नहीं मिल सकती। अतः मनुष्य भव की विशेषता एकमात्र मुक्ति की अनुभूति करने,पूर्ण निर्दोष होने में ही है। भोग भोगना, दोषों में आंशिक कमी होना तो पशु-पक्षी आदि अन्य योनियों के सभी जीवों में भी है। कोई भी जीव कभी भी पूर्ण (सर्वांश में) दोषी हो ही नहीं सकता। यदि पूर्ण दोषी हो जाए तो वह जड़ (अजीव) हो जाए। अतः मनुष्य भव की सार्थकता तथा सफलता दोषों का सर्वांश में त्यागकर पूर्ण निर्दोष (वीतराग) व मुक्त होने में ही है। यदि देव-दुर्लभ इस मनुष्य भव में मुक्त नहीं हुए तो फिर मनुष्य भव की प्राप्ति जैन-दर्शन में वर्णित दश दृष्टान्तों के अनुसार अत्यंत दुर्लभ असंभव सी ही है। अतः मुक्ति को भावी मानव-भव के लिए टालना भयंकर भूल है, अमूल्य अवसर को खोना है, अपना सर्वस्व नाश करना है, घोर अहित करना है।

मुक्ति की अनुभूति दोषों का सर्वांश में त्यागकर पूर्ण निर्दोष होने से होती है। दोषों के त्यागने में अर्थात् दोष न करने में मानव मात्र सदैव समर्थ एवं स्वाधीन है। कारण कि दोष न करने में किसी भी वस्तु, व्यक्ति, परिस्थिति, अवस्था, देश, काल, पंच समवाय, अभ्यास, अनुष्ठान, प्रवृत्ति, क्रिया आदि की किंचित् भी आवश्यकता व अपेक्षा नहीं है। दोष करने में इनकी आवश्यकता होती है। अभी दोष न करें तो वर्तमान सभी का निर्दोष ही है। इस वर्तमान की निर्दोषता को सुरक्षित रखना ही मुक्त होना है। निर्दोषता स्वाभाविक है, किसी की देन नहीं है, अतः स्वतः प्राप्त है। दोष स्वाभाविक नहीं है। दोष की उत्पत्ति मानव अपनी भूल से करता है- दोष स्वतः उत्पन्न नहीं होते। अतः मानव मात्र दोष या भूल करने या न करने में समर्थ व स्वाधीन है, दोष करने के लिए हम स्वयं जिम्मेदार हैं, विश्व की अन्य कोई भी शक्ति हमें दोष करने के लिए बाध्य नहीं करती है और न दोषों को मिटा सकती है। हमें ही विवेक, निजज्ञान (श्रुतज्ञान) का आदर कर दोषरहित-पूर्ण निर्दोष होना है।

मानव मात्र को निज-स्वभाव का स्वाभाविक ज्ञान-अर्थात् शांति, स्वाधीनता, अमरता, चिन्मयता, पूर्णता, प्रसन्नता आदि सिद्ध अवस्था के गुणों की मांग का शाश्वत ज्ञान-जिसे निज (स्वरूप) ज्ञान कहें, विवेक कहें, श्रुतज्ञान कहें, सदैव प्राप्त है। जीव इस श्रुत ज्ञान की अवमानना, अनादर करने से ही भूल करता है, दोष करता है। इस ज्ञान के अनादर से ही वह विषय-भोग, जिनके साथ क्षणभंगुरता, नश्वरता, पराधीनता, जड़ता, आकुलता, भय, अशांति, अभाव आदि दुःख सदैव लगे हैं- में सुख मानता है, जो भयंकर भूल है, घोर मिथ्यात्व है। विषय

भोगों में सुख है (जबकि यह सुखाभास है) यह मान्यता ही सुख का प्रलोभन, सुख की आशा, सुख की कामना, सुख की दासता, सुख का राग, सुख की आसक्ति उत्पन्न करती है जो समस्त दोषों, कषायों, नो कषायों, पाप प्रवृत्तियों, पापास्रवों, सर्वबंधनों एवं समस्त दुःखों का, संसार परिभ्रमण का कारण है। प्राणी भोगों के सुखों के प्रलोभन से ही अपने सुख-दुःख का कारण भोग्य वस्तुओं अर्थात् पर पदार्थ को मानता है और उनसे कामना, ममता, तादात्म्य, वासना रूप संबंध करता है। यह पर-पदार्थ से संबंध होना ही बंधन है। वर्तमान में भी प्राणी जिनसे कुछ भी सुख नहीं चाहता, अपेक्षा नहीं रखता, राग नहीं रखता, उनसे मुक्त ही है, बंधन रहित ही है। किसी से संबंध विच्छेद होते ही, असंग होते ही, तादात्म्य तोड़ते ही, राग-द्वेष, अहंत्व, ममत्व, कषाय, नो कषाय मिट जाते हैं, जिनके मिटते ही इनका नाश-क्षय होते ही कर्मों (घाति कर्म) के फल का नाश (क्षय) स्वतः हो जाता है, वे निर्जरित हो जाते है। जिससे जीव स्वभाव में स्थित (मुक्त) हो जाता है। भोगों की प्रवृत्ति का त्याग करना, भोगों का सेवन न करना संवर या संयम है और कर्मोदय के प्रति समभाव से रहना, तटस्थ रहना निर्जरा है। समभाव या सामायिक समस्त साधनाओं की भूमिका है और समस्त साधनाओं की इसी में परावधि भी है। सामायिक में सावद्य योग (भोग मय प्रवृत्तियों) का त्याग होने से संवर और समभाव में रहने (राग-द्वेष रहित होने) से निर्जरा होती है। संवर से नये कर्म बंधना रुक जाता है और निर्जरा से पूर्वबद्ध कर्म क्षय हो जाते हैं, यह ही मुक्त होना है। अतः सामायिक साधना ही मुक्ति की साधना है। सामायिक (समभाव) के लिए किसी प्रवृत्ति, अभ्यास, देश, काल आदि अपने से भिन्न पर-पदार्थ की अपेक्षा नहीं है। कर्त्ता-भोक्ताभाव(करने के राग का व फल की आशा) का त्याग कर के होने में (कर्मोदय में) प्रसन्न रहना, अपनी ओर से किसी प्रकार की प्रतिक्रिया(राग-द्वेष) न करना ही सामायिक है। सामायिक में सावद्य योग का त्याग होता है, किसी को त्याग देना ही उससे मुक्त होना है, निज स्वभाव में स्थित होना है। अतः त्याग में ही धर्म है, मुक्ति है। भोग में ही बंधन है। भोग का त्याग ही योग(संयम) है। जिससे राग है उसी से बंधन है, जिससे राग नहीं है उससे अभी मुक्त ही हैं।

तात्पर्य यह है कि निर्दोषता तथा मुक्ति (स्वाधीनता) जीव का स्वभाव है। किसी भी जीव को दोषी कहलाना तथा पराधीन होना अभीष्ट नहीं है। अतः सभी जीवों में आंशिक निर्दोषता एवं आंशिक मुक्ति की अभिव्यक्ति है। वह संसार के असंख्य पदार्थों में से अत्यल्प कुछ वस्तुओं व जीवों से ही ममता अहंता (तादात्म्य), मोह व संबंध रखता है, इनसे ही उसका बंधन है, इनके हानि-लाभ, न्यूनाधिक होने से ही उसे सुख-दुःख होता है। जिनसे इसका संबंध नहीं है, उनकी हानि, वृद्धि, विनाश से उसे सुख-दुःख नहीं होता है। अतः लेशमात्र बंधन भी बंधन ही है। वह अंशमात्र बंधन भी मुक्ति में बाधक है। आशय यह है कि आंशिक निर्दोषता तथा

मुक्ति का संपादन अच्छी बात है, परन्तु महत्त्व दोषों के सर्वांश में त्याग से अभिव्यक्त हुई मुक्ति का है, यह ही वास्तविक मुक्ति है। इससे पूर्व आंशिक साधना से अभिव्यक्त हुई आंशिक निर्दोषता से संतुष्ट होना, अपने को मुक्ति से वंचित रखना है, प्रमाद है। मानव जीवन का, मानवता का अनादर (अपमान) करना है। प्रमाद युक्त आंशिक निर्दोषता तथा आंशिक गुण तो मानवेतर अन्य योनियों में भी हैं। अतः मानव जीवन का महत्त्व प्रमाद का त्यागकर पूर्ण मुक्त (निर्दोष) होने में ही है। जिससे राग है उसी से बंधन है, जिनसे राग नहीं है उनसे अभी भी मुक्त ही हैं। राग रहित (वीतराग) होने में मानव मात्र समर्थ एवं स्वाधीन है। अतः मुक्ति से निराश होना, उसे भविष्य के लिए टालना अमूल्य-दुर्लभ अवसर को व्यर्थ खो देना है, अनंत काल के लिए संसार-परिभ्रमण का आह्वान करना है, इससे बढ़कर अन्य कोई हानि नहीं है। अतः सर्वांश में दोषों का त्यागकर, निज स्वरूप का बोध(अनुभव) कर शुद्ध, बुद्ध, मुक्त होने में ही अपना कल्याण है। कहा भी है-

'जगत मूल यह राग है, मुक्ति मूल वैराग।
मूल दोनों का यह कहा, जाग सकै तो जाग।।''

अपने से भिन्न परिवर्तनशील, नश्वर, पौद्गलिक (शरीर, इन्द्रियादि) पदार्थ से मिलने वाला सुख ही भोग है। भोग के लिए ही संसार (पौद्गलिक पदार्थ) की आवश्यकता होती है। इसीलिए भोगी संसार में भ्रमण करता है (भोगी भमइ संसारे)। भोगों के लिए ही संसार अर्थ व महत्त्व रखता है। परन्तु जिस साधक ने भोग से लगे सुख, नश्वरता, पराधीनता, आकुलता आदि दुःखों की यथार्थता का अनुभव कर भोगों के सुखों का आत्यंतिक त्याग कर दिया है, उसके लिए संसार असार (निरर्थक) है। उसके लिए संसार का होना या न होना समान है। वह संसार से पार-अतीत हो जाता है। वह देहातीत, इन्द्रियातीत, लोकातीत हो जाता है। वह अलौकिक साम्राज्य का अधिपति हो जाता है। उसे इस लोक की (अपनी), परलोक (अपने से भिन्न शरीर धारियों) की, जीने की, मरने की, कामभोग की इच्छा नहीं रहती है, वह समाधिस्थ निर्विकल्प हो जाता है। निर्विकल्प (अचाह) होने से आत्म दर्शन (स्वसंवेदन-स्वानुभूति) करता है, उसका दर्शन गुण संपूर्ण हो जाता है, वह सर्वदर्शी हो जाता है। उसे कुछ भी पाना शेष न रहने से कृत-कृत्य हो जाता है। संसार से अतीत हो जाने से, कुछ भी पाना, करना, समस्या व जिज्ञासा (जानना) शेष नहीं रहने से वह अशेष (संपूर्ण) हो जाता है, वह सर्वज्ञानी हो जाता है। इस प्रकार स्व संवेदन, स्वानुभूति, चिन्मयता के होने से, जड़ता शेष न रहने से- दर्शन गुण की पूर्णता, जानना शेष न रहने से- ज्ञान गुण की पूर्णता, करना शेष न रहने से-चारित्र गुण की पूर्णता हो जाती है। उसके इस दर्शन, ज्ञान, चारित्र गुण का अंत कभी नहीं होता। अतः वह मुक्त जीव अनंत दर्शनी, अनंत ज्ञानी, अनंत चारित्रवान हो जाता है। अनंतज्ञान, दर्शन, चारित्र ही क्षायिक ज्ञान, दर्शन, चारित्र हैं।

-८८/१४१, मानसरोवर, जयपुर

सूर्यकिरणों का अद्भुत प्रभाव

श्री चंचलमल चोरड़िया

सूर्य किरणों में अद्भुत शक्ति है। इनका उपयोग स्वास्थ्य एवं साधना के लिए भी प्रभावी है। तपस्वी श्री हीरा रतन माणक ने उगते सूर्य की किरणों का चक्षु के माध्यम से सेवन कर सकारात्मक सोच एवं शक्ति का अर्जन किया। इनसे भूख पर भी नियन्त्रण पाया जा सकता है। चोरड़िया जी ने यह लेख श्री हीरा रतन माणक के अनुभूत प्रयोगों के आधार पर लिखा है। अहिंसात्मक चिकित्सा-पद्धति एवं साधना की दृष्टि से सूर्यकिरणों के महत्त्व हेतु यह लेख पठनीय है। - *सम्पादक*

मानव जीवन की मूलभूत समस्याएँ

तनाव, निराशा, नकारात्मक सोच, भय आदि मानसिक विकृतियाँ मानव जीवन के विकास में अवरोधक बन जाती हैं। शारीरिक अस्वस्थता के कारण भी जीवन की प्रसन्नता समाप्त होने लगती है। मानव जीवन ही ऐसी योनि है, जिसमें मानव नर से नारायण बन आत्मा को परमात्मा बना सकता है। परन्तु हमारी अध्यात्म के प्रति अज्ञानता के कारण हम इस अमूल्य मानव जीवन को व्यर्थ में व्यतीत कर देते हैं। यदि किसी विधि द्वारा मानव में सकारात्मक सोच विकसित कर दी जाए तो तनाव, निराशा, भय आदि स्वतः समाप्त हो जायेंगे। जहाँ जीवन है, वहाँ समस्याएँ तो निश्चित आएंगी, परन्तु हमारा सम्यक् दृष्टिकोण हो जाने से उनसे हम व्यर्थ परेशान नहीं हो सकेंगे। मानसिक शांति होने से शारीरिक रोगों की संभावनाएँ भी क्षीण हो जायेंगी और मानव को आत्मोत्थान हेतु सम्यक् पुरुषार्थ करने की प्रेरणा भी मिलने लगेगी। सौर ऊर्जा के माध्यम से जीवन में ऐसा परिवर्तन सरलता से लाया जा सकता है।

अनन्त शक्तियों का स्रोत मानव मस्तिष्क

हमारे मस्तिष्क में अनन्त शक्तियाँ सुषुप्त अवस्था में विद्यमान होती हैं। आधुनिक विज्ञान भी उस बात को स्वीकार करता है कि अधिकांश व्यक्ति अपने मस्तिष्क की 95 से 99 प्रतिशत से अधिक क्षमताओं का जीवन पर्यन्त उपयोग किये बिना ही इस दुनिया से चले जाते हैं। आखिर ऐसा क्यों होता है? हम उन सुषुप्त शक्तियों को जागृत क्यों नहीं कर पाते हैं? यदि मस्तिष्क की सुषुप्त क्षमताओं का पूर्ण उपयोग करना हम सीख लें तो हमारे जीवन की अधिकांश समस्याओं का समाधान सहज संभव हो सकता है।

हमारे तीर्थंकरों, अध्यात्म योगियों, ऋषि मुनियों ने उन सुषुप्त ऊर्जाओं को जागृत करने की अनेक साधना पद्धतियाँ विकसित की। आज भी विश्व में आत्म-विकास की वे पद्धतियाँ प्राणायाम, ध्यान, यौगिक क्रिया, सम्यक् तपाराधना, इन्द्रिय संयम एवं मनोनिग्रह द्वारा समत्व की साधना इत्यादि के रूप में प्रचलित हैं।

आधुनिक विज्ञान मानव-मस्तिष्क की तुलना श्रेष्ठतम कम्प्यूटर से करता है। जिस प्रकार कम्प्यूटर को संचालित करने के लिए बिजली की आवश्यकता होती है। ठीक उसी प्रकार मानव मस्तिष्क रूपी सुपर कम्प्यूटर को संचालित करने के लिए आवश्यक ऊर्जा उपलब्ध हो जाए तो मस्तिष्क की क्षमताओं का अधिकाधिक उपयोग करना संभव हो सकता है। प्रकृति ने हमारे लिए सूर्य, जल, हवा, भोजन आदि ऊर्जा के अनेक विकल्प उपलब्ध कराये हैं, जिसमें सौर ऊर्जा ही एक ऐसा माध्यम है, जिसकी किरणों के विधिवत् नियमित सेवन से मस्तिष्क रूपी सुपर कम्प्यूटर को अधिक व्यवस्थित ढंग से संचालित किया जा सकता है।

मस्तिष्क को सोलेरियम बनाने में आंखों का योगदान

आधुनिक चिकित्सकों की ऐसी मान्यता है कि उदित होते हुए सूर्य की किरणों में नेत्रों के लिए स्वास्थ्यवर्धक गुण होते हैं। आंख ही वह माध्यम है, जिससे मस्तिष्क तक सौर ऊर्जा का प्रभाव सरलता से पहुँचाया जा सकता है। आँखें शरीर का बहुत ही नाजुक भाग होती हैं। अतः सूर्यदर्शन करते समय इस बात का विवेक और सावधानी आवश्यक है कि आंखों को किसी प्रकार की क्षति भी न हो और मस्तिष्क तक आवश्यक सौर ऊर्जा भी पहुँचायी जा सके। इसके लिए धीरे-धीरे प्रातःकालीन सूर्य दर्शन की अवधि बढ़ाकर आंखों को सूर्य दर्शन हेतु अभ्यस्त किया जा सकता है।

प्रत्येक व्यक्ति प्रत्यक्ष-परोक्ष रूप से कम अथवा ज्यादा सौर ऊर्जा का उपयोग करता ही है। उसके बिना हमारा जीवन चल ही नहीं सकता, परन्तु सौर ऊर्जा के विधिवत् नियमित प्रयोग से ही मस्तिष्क की सुषुप्त शक्तियों को जागृत किया जा सकता है। शरीर की आवश्यकतानुसार सेवन करने से हमें ऐसे चमत्कारी परिणाम मिल सकते हैं, जो अनावश्यक अनियमित बिना विधि प्रायः प्राप्त नहीं होते। यदि मनुष्य अपने शरीर को सोलेरियम (सौर ऊर्जा को संग्रह करने वाला सोलर कूकर) बनाले तो मस्तिष्क की सुषुप्त शक्तियों को सरलता से जागृत किया जा सकता है।

मस्तिष्क को सोलेरियम बनाने हेतु श्री हीरा रतन माणक के प्रयोग

शान्त स्वभावी, निस्पृही, मानव कल्याण हेतु सतत प्रयत्नशील, मान सम्मान से विरक्त, कालीकट (केरल) के मेकेनिकल इंजीनियर श्री हीरा रतन माणक ने जब भगवान महावीर का जीवन चरित्र पढ़ा तो सौर ऊर्जा शोध के प्रति उनकी जिज्ञासाएं प्रबल होने लगी। भगवान महावीर आतापना (सूर्य की रोशनी में साधना करना) क्यों लेते थे? उनके साढे बारह साल के कठोर साधना काल में उनको कमजोरी, थकावट एवं प्रमाद अनुभव क्यों नहीं हुआ? उन्हें भूख क्यों नहीं लगती थी? उन्होंने अपने साधकों को तीसरे प्रहर में ही अर्थात् धूप में ही भिक्षा लाने एवं विहार का क्यों निर्देश दिया? ऐसे अनेक प्रश्नों पर उनका गहन चिन्तन चलने लगा। आज भी विश्व में ऐसी अनेक विशिष्ट विभूतियाँ हैं जो बिना भोजन अथवा

सूक्ष्म आहार से अपने जीवन का निर्वाह कर रही हैं। हम उनका कोई वैज्ञानिक आधार ढूँढ़ने के बजाय, मात्र दैवी शक्ति मान आत्म-संतोष कर लेते हैं। जनसाधारण रोम आहार से उन विशिष्ट साधकों की भांति जीवन निर्वाह क्यों नहीं कर सकते?

श्री माणक ने श्रमण महावीर के जीवन से प्रेरणा लेकर सौर ऊर्जा पर विविध प्रयोग प्रारम्भ किए। प्रतिदिन उन्होंने धूप में नंगे पांव चलना प्रारम्भ किया। अभ्यास करते-करते वे प्रतिदिन 10 से 12 किलोमीटर तक चलने लगे तो उनके भोजन की आवश्यकता आधी रह गयी। परन्तु इतना कम भोजन करने के बावजूद उन्हें किसी प्रकार की कमजोरी, थकावट, आलस्य का अनुभव नहीं हुआ और उनका सोच सकारात्मक होने लगा, आत्मविश्वास बढ़ने लगा।

गायत्री मंत्र में सूर्य नमस्कार का उन्होंने चिंतन किया। उन्होंने अनुभव किया कि मंत्र तो मात्र एक विधि है और उसके जाप का वास्तविक मतलब होता है- उस विधि को क्रियान्वित करना। मात्र उच्चारण करने से उसका लाभ नहीं मिलता। हम नमस्कार किसको करते हैं? नमस्कार का मतलब होता है- स्वागत करना। सूर्य नमस्कार का मतलब सूर्य की रश्मियों को शरीर में ग्रहण करना है। सूर्य दर्शन के प्रयोग से उन्होंने जीवन में आश्चर्यजनक परिवर्तनों का अनुभव किया। प्रारम्भ में उन्होंने चन्द दिनों तक आहार का त्याग किया। धीरे-धीरे उसका क्रम बढ़ाने लगे।

18 जून 1995 से 16 जनवरी 1996 तक उन्होंने मात्र गर्म पानी और सौर ऊर्जा के सेवन से अपने सारे कार्यक्रम नियमित रूप से करते हुए उपवास किए। उपवास के बावजूद उनका स्वास्थ्य संतोषप्रद रहा। अपने पारिवारिकजनों एवं गुरु के आग्रह पर आपने न चाहते हुए भी उपवास तो समाप्त कर दिए, परन्तु एक संकल्प लिया कि भविष्य में जीवन पर्यन्त मात्र कुछ तरल पदार्थों का ही सेवन करेंगे। उनका सौर ऊर्जा के प्रति आकर्षण और आत्मविश्वास बढ़ने लगा। अपने दृष्टिकोण को आधुनिक विज्ञान से पुष्ट करने हेतु विभिन्न राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्वास्थ्य सम्मेलनों में आपने सौर ऊर्जा पर अपना दृष्टिकोण रखा तथा आधुनिक चिकित्सकों को उनकी पूर्ण देखरेख में सौर ऊर्जा पर लम्बी अवधि तक उपवास रखने का प्रस्ताव रखा। अहमदाबाद के विशेषज्ञ डॉक्टरों ने उनके आग्रह को स्वीकारा तथा अहमदाबाद में सौर ऊर्जा और गर्म पानी का सेवन करते रहकर उपवास करने का निमन्त्रण दिया। परिणामस्वरूप श्री हीरा रतन माणक ने एक जनवरी 2000 से 15 फरवरी 2001 तक डाक्टरों की पूर्ण देखरेख में 411 दिनों तक उपवास किया।

उपवास के दौरान चिकित्सकों ने उनके स्वास्थ्य को पूर्णतः संतोष जनक, तनाव एवं रोगों से मुक्त पाया। उन्हें कोई रोग नहीं हुआ। अपितु उनके आज्ञाचक्र (पीयूष ग्रन्थि) को अधिक सक्रिय पाया गया एवं 65 वर्ष की वृद्धावस्था में भी उनके शरीर में न्यूरोन का निर्माण होना पाया गया, जो प्रायः उस आयु के अन्य

व्यक्तियों में संभव नहीं होता है। उनके मधुमेह का स्तर लंबे समय तक 43 रहने के बावजूद उनके सारे अंग बराबर कार्य करते थे, जबकि आधुनिक चिकित्सकों की ऐसी मान्यता है कि जब मधुमेह का स्तर पचास से नीचे हो जाता है तो व्यक्ति मूर्च्छा में आ जाता है। इतना ही नहीं, मधुमेह के इतने कम स्तर में भी उन्होंने गुजरात में भावनगर के समीप पालीताणा जैन तीर्थ जिसमें लगभग 3500 सीढ़ियों की चढ़ाई है, पैदल यात्रा कर आधुनिक चिकित्सकों को विस्मय में डाल दिया। उनका हीमोग्लोबिन लंबे समय तक मात्र 8 रहा, परन्तु इसके उपरान्त चिकित्सकों के अनुसार उनके सारे अंग बराबर कार्य करते थे। उनका स्वास्थ्य संतोषप्रद पाया गया। इसका विस्तृत विवरण गुजरात मेडिकल के मार्च 2001 के जनरल में प्रकाशित हुआ। परिणाम स्वरूप आधुनिक चिकित्सकों के सोच में बदलाव आने लगा। वे मानने लगे कि मानव शरीर अभ्यास से प्रतिकूल परिस्थितियों में भी बराबर कार्य कर सकता है। उपवास की समाप्ति के पश्चात् उनमें जो मानसिक, शारीरिक और आध्यात्मिक स्थिति में बदलाव आया उसका लाभ मानव जाति को पहुंचाने के लिए सौर ऊर्जा के उपयोग की जो विधि उन्होंने प्रतिपादित की वह बहुत ही सहज, सरल है और प्रत्येक व्यक्ति उसका लाभ उठा सकता है।

सूर्यदर्शन की विधि

प्रारम्भ में प्रथम दिन नंगे पैर धरती पर मिट्टी में सीधे खड़े होकर उदित होते हुए सूर्य को खुली आंखों से मात्र पाँच सैकेण्ड के लिये निहारना प्रारम्भ करें। सूर्य दर्शन का समय प्रतिदिन अपनी अनुकूलता के अनुसार 5 सैकण्ड नियमित बढ़ाते जायें। सूर्य दर्शन के समय त्राटक करना आवश्यक नहीं है। इस प्रक्रिया की क्रमबद्ध अवधि बढ़ाने का यदि नियमित अभ्यास किया जाए तो कुछ महीनों में ही आश्चर्यजनक परिणाम मिलने लगते हैं।

मानसिक रोगों से मुक्ति– मात्र तीन–साढ़े तीन मास पश्चात् सूर्य निहारने की अवधि का अभ्यास जब बढ़ाते–बढ़ाते 10 से 12 मिनट हो जाता है तो हमारे नेत्रों को मस्तिष्क से जोड़ने वाला हाइपोथेलेमस ट्रेक धीरे–धीरे सूर्य ऊर्जा से उत्प्रेरित (चार्जड) होने लग जाता है। जिससे व्यक्ति में आत्म–विश्वास बढ़ने लगता है, नकारात्मक सोच, तनाव, भय, निराशा आदि समाप्त होने लगते हैं। व्यक्ति का मनोबल मजबूत होने तथा सकारात्मक सोच विकसित होने से वह किसी को परेशान नहीं करता। उसकी दुष्प्रवृत्तियां एवं दुर्व्यसन स्वयं छूटने लगते हैं। सम्यक् सोच होना ही आत्म–विकास का प्रथम सोपान होता है।

शारीरिक रोगों से मुक्ति- सूर्य को निहारने से उसकी किरणों में व्याप्त सभी रंग मस्तिष्क ग्रहण करने लगता है। रंग–चिकित्सा के सिद्धान्तानुसार अलग–अलग रंगों का शरीर के अलग–अलग अंगों, उपांगों एवं अवयवों पर अलग–अलग विशेष प्रभाव पड़ता है। इन रंगों के संतुलन से ही मानव स्वस्थ तथा

असंतुलन से रोगी बन जाता है। सूर्य की किरणों में वे सभी रंग होते हैं, जिनकी शरीर को आवश्यकता होती है। अतः उदित सूर्य दर्शन की अवधि बढ़ाते-बढ़ाते लगभग 6 मास बाद जब 20 मिनट तक पहुंच जाती है तो सौर ऊर्जा के प्रभाव से मस्तिष्क में स्थित पीयूष और पीनियल ग्रन्थियाँ सक्रिय हो जाती हैं तथा अन्य ग्रन्थियों को भी सक्रिय बनाने लगती हैं। परिणाम स्वरूप शरीर से सभी प्रकार के रोग दूर होने लगते हैं और व्यक्ति शारीरिक रोगों से मुक्त होने लगता है। जिस प्रकार प्रायः अधिकांश दवाइयाँ हम मुँह से लेते हैं, वे पेट में जाकर, जो रोग होता है, उस पर अपना प्रभाव डालती हैं, ठीक उसी प्रकार सूर्य किरणों में होने वाले रंग मस्तिष्क के माध्यम से शरीर के अलग-अलग भागों में पहुंचकर उन सभी अंगों, उपांगों और अवयवों को संतुलित बना देते हैं। परिणाम स्वरूप शारीरिक रोग ठीक होना प्रारम्भ हो जाते हैं।

भूख से मुक्ति

शारीरिक रोगों के ठीक होने के पश्चात् सूर्य दर्शन के समय की अवधि बढ़ाने से ग्रहण की गई सौर ऊर्जा शरीर में संगृहीत होने लगती है और शरीर सोलेरियम अथवा सोलर कूकर के समान बनने लगता है। सूर्य दर्शन की अवधि जब बढ़ाते-बढ़ाते लगभग 8 से 9 मास पश्चात् 30 से 35 मिनट तक पहुंच जाती है तो, सौर ऊर्जा के प्रभाव से भूख नहीं लगती। व्यक्ति को आहार छोड़ने की आवश्यकता नहीं होती अपितु आहार ही उसे छोड़ देता है। जब ऐसी स्थिति 8-10 दिनों तक हो जाती है और कुछ न खाने के बावजूद शरीर में किसी प्रकार की कमजोरी अथवा थकावट नहीं आती है।

शरीर को ऊर्जा की आवश्यकता होती है। यदि उसकी पूर्ति किसी भी माध्यम द्वारा होती रहे तो आहार की आवश्यकता नहीं रहती। शरीर को ऊर्जा मिल जाने पर भूख का अनुभव नहीं होता, क्योंकि भूख और ऊर्जा का परस्पर संबंध होता है। सौर ऊर्जा मिलने से शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य पर कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ता। इस प्रकार उदित सूर्य को निहारने से मानव शरीर भी पेड़-पौधों की भांति सौर ऊर्जा को ग्रहण कर शरीर के लिए आवश्यक अवयवों एवं पौष्टिक तत्त्वों में बदलने की क्षमता प्राप्त कर लेता है। अतः उसके पश्चात् प्रातःकालीन सूर्य दर्शन की भी आवश्यकता नहीं रहती। मात्र धूप में नंगे पैर कम से कम 45 मिनट चलने से शरीर में संगृहीत सौर ऊर्जा पुनः क्रियाशील हो जाती है।

लगभग एक साल तक ऐसा धीरे-धीरे नियमित अभ्यास करने से शरीर का सूर्य के प्रकाश के साथ बराबर तालमेल हो जाता है और उसके बाद मात्र थोड़ी देर धूप में चलने-फिरने से शरीर का सोलेरियम पुनः क्रियाशील बन जाता है। सूर्य दर्शन सूर्योदय के 45 मिनट के अन्दर पूर्ण हो जाना चाहिए। उसके बाद सूर्य दर्शन से आंखों को क्षति पहुंचने की संभावना रहती है। सूर्य दर्शन की अवधि एक साथ जल्दी जल्दी नहीं बढ़ानी चाहिए। आंखों के तालमेल के साथ-साथ हाइपोथेलेमस

ट्रेक को उत्प्रेरित होने में जो समय लगता है वह भी अनिवार्य है। मस्तिष्क को सोलेरियम बनने में भी निर्धारित समय लगता है। जैसे कि बीज को वृक्ष बनने में।

इस प्रकार सौर ऊर्जा के विधिवत् प्रयोग से व्यक्ति के मानसिक एवं शारीरिक रोग तो जाते ही हैं, सम्यक् सोच विकसित होने से वह किसी प्रकार की गलत प्रवृत्ति नहीं करता, जिससे उसको इस जीवन में शांति, समाधि के साथ अगला जीवन भी सुखद प्राप्त होता है। आज विश्व में हजारों व्यक्ति सौर ऊर्जा के विधिवत् प्रयोग द्वारा तनाव से मुक्ति तथा दुर्व्यसनों एवं दुष्प्रवृत्तियों से छुटकारा प्राप्त कर विवेक जागृत कर रहे हैं तथा सुखी जीवन जी रहे हैं।

विशेष जानकारी के लिए सम्पर्क सूत्र–*Shri Hira Ratan Manak, HF-2-131, KSHB,Vikash Nagar Colony,Chakkor Thkulam,Kalikat-673006(Kerala) T.No. 0495-369928*

-चोरड़िया भवन, जालोरी गेट के बाहर, जोधपुर-342003

स्वाध्याय : भविष्य को सुधारने का साधन

श्री लक्ष्मीचन्द जैन

भविष्य जानने की सबकी इच्छा रहती है, परन्तु भविष्य सुधारने की इच्छा के प्रति हम लापरवाह होते हैं। स्वाध्याय एक ऐसी शुद्ध साधना है जो हमारे भविष्य को संवारती है।

स्वाध्याय में संजीवनी शक्ति है। निराशा निराश होकर लौट जाती है। सकारात्मक विचारधारा का ऐसा आभामण्डल सहज ही निर्मित हो जाता है कि मात्र एक मोक्ष की इच्छा ही श्रेय बन जाती है।

स्वाध्याय की शक्ति से भविष्य जानने की इच्छा ही समाप्त हो जाती है। क्योंकि जिसने वर्तमान को सुधारा है उसका भविष्य तो सुखद ही है। ऐसे व्यक्ति के लिए आत्मा का ज्ञान ही सर्वोपरि होता है। स्वर्ग का साम्राज्य उसके विचारों में होता है।

जो एक आत्मा को जानने की कोशिश करता है उसे अन्य सबकी ओर से ध्यान हटाना पड़ता है। फिर सब कुछ समझ में आ जाता है। इसमें मंजिल पर पहुंचने के लिए भटकना छोड़ना पड़ता है।

शक्ति तो स्वयं के अन्दर है। अपनी आत्मा जेवो कोई देव नथी। सम्यक् ज्ञान, दर्शन और चारित्र का निर्णय आत्मा करती है। विचार करने वाला अंदर बैठा है उसी की तो सार संभाल करनी है।

स्व को जानने की प्रक्रिया का नाम ही तो स्वाध्याय है। संसार को सुधारने की कोशिश करने का उपदेश नहीं है, स्वयं के लिए जरूर है। हमारा भविष्य तो हमारे हाथों में है। वह खोजने पर नहीं मिलता है। समझने पर सर्वदा विद्यमान है। समझ पश्चात् सब सरल है, बिन समझे मुश्किल।

स्वाध्याय रास्ता बताता है। इसमें विचारों के द्वारा चलना पड़ता है। शेष सब अपने आप होता है।

-छोटी कसरावद

क्रमशः (8)

महामन्त्र णमोक्कार : स्वरूप एवं माहात्म्य

श्री जशकरण डागा

महामन्त्र नमस्कार के जप के आध्यात्मिक एवं लौकिक दोनों प्रकार के फल हैं। साधक को लौकिक फल की ओर आकृष्ट न होकर आध्यात्मिक फल का ही लक्ष्य रखना चाहिए। लौकिक फल गौण है। *-सम्पादक*

ध्यान-साधना का अनुपम मन्त्र- पावन पंच परमेष्ठी में ध्यान केन्द्रित व स्थिर करने के लिए इस महामंत्र का उपयोग सर्वोत्तम है। आनुपूर्वी में इसके विविध भंगों को अंकों के माध्यम से व्यक्त किया गया है। आनुपूर्वी के महत्त्व को व फल को व्यक्त करने हेतु ज्ञानियों ने कहा है-

"आनुपूर्वी प्रतिदिन जपिए, चंचल मन भी स्थिर हो जावे।
छः मासी तप का फल होवे, पाप पंक सब ही धुल जावे।।
मंत्रराज नवकार हृदय में, शान्ति सुधारस है बरसाता।
लौकिक जीवन सुखमय करके, अजर अमर पद है पहुंचाता।।"

"जिनवाणी का सार है, मंत्रराज नवकार है।
भाव सहित जपिये सदा, तो निश्चय बेड़ा पार है।।"

महापुरुषों को भी अंतिम समय शरणभूत- चौदह पूर्वधारी महापुरुष, आगम महाश्रुत से चिंतन-मनन द्वारा अपनी आत्मा का विकास करते हैं। किन्तु फिर भी जब उनका देहोत्सर्ग का समय आता है और इस हेतु अनशन-संथारा स्वीकार करते हैं, तब जीवन के अंतिम क्षणों में सभी ओर से ध्यान हटाकर एकाग्र-ध्यानस्थ हो इस अनादि-शाश्वत महामंगल, अचिन्त्य महिमावाले महामन्त्र राज की ही शरण ग्रहण कर स्मरण व जाप करते हैं। कारण कि यह महामन्त्र भवान्तर में नियम से ऊर्ध्व गति प्रदान करता है।

चमत्कार को नमस्कार, यह लौकिक सत्य है, किन्तु नमस्कार (मंत्र) से चमत्कार यह लोकोत्तर सत्य है।

यह महामंत्र आत्म-शोधन का मुख्य हेतु होते हुए भी, समग्र आधि- व्याधि-उपाधि, रोग-शोक, दुःख-दारिद्र्य आदि सभी अशुभ विपाकों का विनाशक है। इसके आराधन से समस्त विघ्नों का विनाश होता है। भव-क्लेश व संताप नष्ट होकर शाश्वत सुख का अचिन्त्य-अनंत लाभ प्राप्त होता है। इसी महामंगलमय महामंत्र की आराधना श्रीपाल नरेश, श्री सुदर्शन श्रेष्ठी, सुभद्रा सती, मदनरेखा सती, द्रौपदी सती, सोमासती, श्रीमती सती आदि अनेकानेक आत्माओं ने की है तथा भयंकर कष्टों, विघ्नों पर विजय प्राप्त कर अनन्त सुखों को उपलब्ध हुए है। 'नमस्कार से चमत्कार' विषयक यहां कतिपय सत्य घटनाएँ संक्षिप्त में प्रस्तुत हैं-

1. कवि निर्भय हाथरसी (जैन प्रकाश अंक 7.11.97)- आप एक बार बड़ौत (मेरठ) नगर में एक कवि सम्मेलन में गए। सारे कवि अपनी कविताएँ बोल चुके

थे। जब निर्भय हाथरसी का बोलने का मौका आया कि अचानक जोरदार वर्षा हुई, जिससे सारा आयोजन अस्त-व्यस्त हो गया। किसी ने हंसी में कहा कि हाथरसी ने कविता नहीं पढ़ी है, अतः इन्हें पारिश्रमिक भी नहीं मिलेगा। यह बात हाथरसी को चुभ गई और वे तत्काल दौड़ कर मंच पर जा चढ़े। एकाग्र मन से णमोकार मंत्र का उच्चारण किया और कविता बोलने लगे तो तत्काल घनघोर वर्षा बंद हो गयी। फिर सारी रात कवि सम्मेलन चला। यह आश्चर्यजनक था कि नगर में सारी रात वर्षा होती रही, परंतु कवि सम्मेलन के स्थान पर एक बूंद भी पानी नहीं बरसा।

णमोकार मंत्र की मात्र पांच पक्तियों के अलावा कुछ नहीं जानते हुए भी काका हाथरसी ने 148 कविताएँ (छन्द में) णमोकार मंत्र पर लिखी हैं। णमोकार मंत्र से हुए चमत्कारी अनुभवों को बताते हुए वे स्वयं लिखते हैं- ''एक बार 27 मार्च 1997 को कैथून (कोटा) राजस्थान के मेले में आयोजित कवि सम्मेलन में बोलने को जैसे ही माइक पर खड़ा हुआ कि मंच पर बेहोश हो गिर पड़ा। तत्काल डाक्टर आए और मुझे लाश की तरह कार में डाल आगरा पहुंचाया गया। मस्तिष्क का एक्सरे हुआ और बताया गया कि मस्तिष्क को लकवा मार गया था। किंकर्त्तव्य, विवेकशून्य होकर भी सूक्ष्म चेतना से, मैंने णमोकार मंत्र का अजपा जाप चलाया। शून्य चेतना शनैः-शनैः वापिस आने लगी। भूला बिसरा सब याद आने लगा। सभी को आश्चर्य हुआ कि डाक्टरों के अनुसार जिस इलाज के लिए साल, छः माह लगते, वह मात्र छः दिनों में हो गया। यह सब णमोकार मंत्र के जाप का चमत्कार था। मुझे अनेक बार स्पष्ट अनुभव हुआ कि हमारी घड़ी में, जब भी घड़ी की सूई पैंतीस के अंक (नवकार में पैंतीस अक्षर हैं) के अंक पर होती है, पूरी आत्म-निष्ठा से पाँच बार णमोकार मंत्र का जाप करके जो भी हम सोच लेते हैं, वही कार्य पूरा हो जाता है। ऐसा हुआ है, होता है और हो रहा है, परन्तु क्यों? यह अभी मेरी लौकिक समझ से परे है। मेरी अटूट श्रद्धा इस महामंत्र पर है और मेरा उद्घोष हैः-

''निर्भय बनाने वाले मंत्र है, असंख्य किन्तु।
मंत्रों में महान मंत्र, मंत्रराज णमोकार है।।''

२. शाह गुलाबचन्द खीमचन्द का कैन्सर रोग मिट गया (नवनीत अंक 11/96 से तथा वेदना विहीन अंक 15/7/96 के आधार से)- आप जामनगर निवासी हैं। लगभग 51 वर्ष पहले की घटना है, जो उन्हीं के शब्दों में प्रस्तुत है- ''कैंसर की जानलेवा बीमारी शुरु होने से पहले छः माह तक मेरा सिर बुरी तरह दुःखता रहा। काफी इलाज कराया पर लाभ नहीं हुआ। एक दिन मेरे कफ में खून दिखाई पड़ा। डाक्टरों ने जांच पड़ताल कर कैंसर हो जाने की बात कही। पेन्सिलिन के इन्जेक्शनों का कोर्स चालू हुआ, पर रोग बढ़ता गया। मेरा गला अंदर व बाहर से इतना सूज गया कि पानी का घूँट भी नीचे गले से नहीं उतरने

लगा। इस पर डॉ. के.पी. मोदी से जांच कराई। उन्होंने बताया बीमारी इतनी बढ़ चुकी है कि इलाज तो दूर अब 'बायोप्सी' जांच के लिए अंदर का टुकड़ा काट कर भी नहीं ले सकते और कहा कि यह तो अब सिर्फ एक-दो दिन के मेहमान हैं- ऐसा मेरे फेमिली डाक्टर को बताया। मैं शान्ति से मर सकूं, इस हेतु बेहोशी के इन्जेक्शन देने की बात भी कहीं। मैंने फेमिली डाक्टर से कहा 'मुझे असह्य प्यास लगी है, किसी भी तरह मुझे पानी पिलाने की कोई भी तरकीब करें।' उन्होंने मुझे कहा कि 'आप किसी तरह आज की रात निकाल दीजिए। कल सवेरे मैं इसकी व्यवस्था करूँगा और नली की मदद से पानी दूँगा। मैं समझ गया कि मेरी अंतिम घड़ी आ गयी है। मुझे गुरुदेव से सुने ये वचन याद आ गए-" भले ही पूरे जीवन में धर्म का पालन न किया हो, किन्तु अंतिम समय में, सब जीवों से क्षमा मांग कर, सारा वैर-विरोध भूल कर, समस्त जीवों के प्रति मैत्री भाव रख, महामंत्र णमोकार का स्मरण करने वाली आत्मा को सद्गति प्राप्त होती है।" बस इस अमृतमयी प्रेरक वचन ने मेरे जीवन में अमृत भर दिया। इसी अमृत वचन से प्रेरणा लेकर अत्यन्त श्रद्धापूर्वक नवकार महामंत्र का स्मरण शुरु कर दिया। शाम का समय था। मेरी शय्या के आस-पास करुण दृश्य दिखाई दे रहा था। परिवार के लोग फूट-फूट कर रो रहे थे और वे भी मुझे नवकार मंत्र सुना रहे थे। तभी मैंने सबको बुलाकर सबसे क्षमायाचना की और परमेष्ठी को वंदन करते हुए बोला-

"खामेमि सव्वे जीवा, सव्वे जीवा खमंतु मे।
मित्ती मे सव्वे भूएसु वेरं मज्झं न केणई।।"

इसके साथ ही मन में भावना व्यक्त की- 'संसार के सब जीव सुखी हों, संसार के सब जीव नीरोग हों, सब जीवों का कल्याण हों, कोई भी पाप का आचरण न करे। किसी को दुःख न हो। संसार के सब जीव कर्म से मुक्त हों। इस भावना को भाते हुए अत्यन्त जागृत भाव से नवकार मंत्र के ध्यान में लीन हो गया, इस भय से कि कहीं मेरी दुर्गति न हो जाय। 20-25 बार नवकार मंत्र का जाप करने के बाद पुनः-पुनः मैं सर्व जीवों के प्रति अपनी उपर्युक्त मैत्री की भावना बोलता और जाप में तन्मय हो जाता। रात्रि के करीब ग्यारह बजे मुझे जोर की उलटी हुई। सारा तसला भर गया, मैं बेहोश हो गया। घरवालों ने विचारा, यह अंतिम घड़ी का संकेत है। रोना-पीटना शुरु हो गया। कुछ समय बाद मुझे होश आया और दो-तीन लोटे पानी पी गया। फिर पुनः इस विचार से कि कहीं मेरी सद्गति के बजाय दुर्गति न हो, पुनः-पुनः नवकार की धुन व पूर्वोक्त मैत्री भावना बोलना चालू रखा। थोड़ी देर में मैंने दूध भी पी लिया, जबकि पूर्व में पानी भी गले न उतरता था। फिर 7-8 घण्टे गहरी निद्रा आ गई। दूसरे दिन निद्रा खुली तो मानो नवजीवन मिल गया हो। मैंने चाय व तरल पदार्थ लेना शुरु कर दिया। फिर दूध, मलाई, हलवा आदि पौष्टिक आहार भी

लेना शुरु कर दिया। डॉक्टरों ने मेरा चैकअप कर बड़ा आश्चर्य व्यक्त किया कि तीसरी स्टेज पर पहुंची कैंसर की बीमारी कैसे अचानक ठीक हो गई? वस्तुतः यह सब केवल प्रभु पंच परमेष्ठी भगवंतों का श्रद्धापूर्वक किए गए जाप का ही फल था।''

3. *णमोकार महामंत्र से सर्प विष का प्रभावहीन होना*- वर्ष 1983 ई. की घटना है। टोंक से दिगम्बर जैन संघ बस से सम्मेद शिखर की यात्रा पर गया। टोंक के श्री गणेश दास जी पारख भी साथ में गए थे। श्री पारख जी ने बताया कि उनकी यात्रा की बस नालंदा के पास जंगल में खराब हो गई। यात्रीगण बस से नीचे उतरे व इधर-उधर घूमने लगे। तभी यात्रा में साथ आए एक बालक को वहां पर सर्प ने डस लिया। सभी घबरा उठे कि क्या किया जाय? तभी वहां के एक व्यक्ति ने निकट में ही एक फकीर रहता बताया, जो झाड़ा देकर सर्प का जहर उतारता है। तत्काल उस बालक को वहां ले गए। उस मुस्लिम फकीर ने पूछा आप कौन लोग हैं? इस पर उसे बताया कि हम सब जैन हैं और यात्रार्थ इधर आए हुए हैं। फकीर ने यह सुनकर कहा, कि तब आपने मेरे पास आने की क्यों तकलीफ की? आपके पास ही जहर उतारने की चींज उपलब्ध है, जो मैंने भी आप लोगों से ही ग्रहण की है। अब देखिए आपकी ही वस्तु से जहर उतार कर इस बालक को अभी ठीक करता हूँ। उसने इतना कहकर णमोकार मंत्र का उच्चारण कर मौनस्थ हो परमेष्ठी का थोड़ी देर ध्यान किया, फिर महामंत्र को बोलते हुए बालक को झाड़ा लगाया व डसे हुए स्थान से खून चूसकर थूकता गया। थोड़े ही समय में बालक ठीक और चंगा हो गया। एक मुसलमान फकीर द्वारा इस प्रकार णमोकार मंत्र के जाप से झाड़ा देखकर सर्प विष उतार देने की 'नमस्कार से चमत्कार' की यह एक अद्भुत सत्य घटना थी।(क्रमशः)

-डागा सदन, संघपुरा मोहल्ला, टोंक (राज.)

दुर्लभ जग में जिनवाणी

नितेश नागोता 'जैन'

जीव अजीव का भेद समझाती
दुर्लभ जग में जिनवाणी
तत्त्व धर्म की बात बताती
आत्मलक्ष्यी है जिनवाणी।।
भव भ्रमण यह सबका मिटाये,
पुनीत पावन यह जिनवाणी
सबकुछ आसानी से मिलता
दुर्लभ जग में जिनवाणी।।

-भवानी मण्डी(राज.)

उपवास में करणीय और अकरणीय

न्यायाधिपति श्री श्रीकृष्णमल लोढ़ा

दशवैकालिक सूत्र का प्रथम अध्ययन निम्नांकित गाथा से प्रारम्भ होता है–

"धम्मो मंगलमुक्किट्ठं, अहिंसा संजमो तवो।
देवावि तं नमंसंति, जस्स धम्मे सया मणो।।"

अर्थात् अहिंसा, संयम और तप जिस धर्म में है वह उत्कृष्ट मंगल है और ऐसे धर्म में जिस मनुष्य का मन हो उसे देवता भी नमन करते हैं।

श्रमण सम्राट् भगवान महावीर के साधना-मार्ग में तप प्रधान है, ऐसा मैं लिखूँ तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। तप दो प्रकार के होते हैं– 1. आभ्यन्तर 2. बाह्य। छह बाह्य तप हैं और छह आभ्यन्तर तप हैं। बाह्य तप में पहला अनशन है, जिसका तात्पर्य है उपवासादि करना। इससे क्षुधा पर काबू पाया जा सकता है। अनशन तप में उपवास का महत्त्व है। उपवास पच्चक्खाण लेकर किया जाता है। पच्चक्खाण का अर्थ है प्रतिज्ञा पूर्वक किया गया त्याग।

उपवास यानी "उप समीपे वसति आत्मनः इति उपवासः" अर्थात् आत्मा के पास रहना उपवास है। दूसरे शब्दों में आत्मा और परमात्मा का ही चिन्तन उपवास है। उपवास के दिन यदि आहारादि में मन लग गया तो परमात्मा की ओर से मन हट जाएगा और उपवास टूट जाएगा, क्योंकि एक समय में मन एक जगह ही स्थिर होता है, अधिक जगह नहीं। अंग्रेजी भाषा में कहा है–

"Fast of the body is the feast of the soul and feast of the body is the fast of the soul"

देह का उपवास आत्मा के लिए भोजन है और शरीर का भोजन आत्मा के लिये उपवास। 'उप' अर्थात् समीप 'वास' अर्थात् रहना। प्रश्न है किसके समीप में रहना? प्रत्युत्तर में कहा–आत्मा के समीप रहना। यही वास्तविक उपवास है। तीन या चारों आहार का त्याग करने के बाद आत्म चिन्तन का होना आवश्यक है। उपवास तप है, तप धर्म है।

श्रावक का तीसरा शिक्षाव्रत पौषधोपवास है। पौषधोपवास का अर्थ आत्मा के साथ निवास करना है। "दोषों से आच्छादित आत्मा को गुणों के साथ जोड़ना और शोधक प्रक्रिया से आत्मा का शुद्धीकरण करना– पौषधोपवास है।

उपवास आदि तप क्यों किया जाता है, उसका रूप भगवान महावीर ने इन शब्दों में बताया है–

"जहा महातडागस्स, सन्निरुद्धे जलागमे।
उस्सिंचणाए तवणाए, कमेणं सोसणा भवे।।
एवं तु संजयस्सावि, पावकम्मनिरासवे।
भवकोडिसंचियं कम्मं तवसा निज्जरिज्जइ।।

पूज्य आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. के शब्दों में तप आत्मनद में भरे

कर्मजल को सुखाने की प्रक्रिया है और उसके लिये आस्रव-निरोध आवश्यक है। सुत्त निपात में कहा है-'सद्धा बीजं तपो वुट्ठि' अर्थात् साधना में श्रद्धा बीज है और तप वर्षा है। जो उपवास की तपस्या करते हैं, उससे आत्म शुद्धि होती है और सर्वकार्य सिद्ध होते हैं।

अनुभव बताता है कि बहुत से उपवास आदि करने वाले दुकानदार भाई ऊँचे स्वरों में बोल कर हिंसा करते हैं। लेन-देन में झूठ बोलते हैं और अदत्तादान करते हैं। पाँच प्रकार के अदत्त हैं- देव अदत्त, गुरु अदत्त, राज अदत्त, गाथा पति अदत्त और साधर्मी अदत्त। उपवास करने वाले समय बिताने के लिए उपवास के दिन पत्ते (ताश), शतरंज, चौपड़, केरम आदि खेलते हैं। टी.वी., रेडियो आदि से गाने सुनकर मनोरंजन करते हैं। सिनेमा देखने चले जाते हैं। यह सब उपवास का उपहास करने के कार्य हैं। ऐसा उपवास करने वालों के आस्रव द्वार या कर्म-बंध के मार्ग खुले रहते हैं। उपवास कर बहुत-सी माताएँ-बहनें घरेलू काम करती हैं। अपने छोटे बच्चों को गाली देती हैं, डांटती हैं, पीटती हैं, और उनके पीछे भागती हैं। घर में जो आश्रित हैं और पशु-पक्षी आदि हैं उनके लिए आरम्भ-समारम्भ के कार्य करती रहती हैं। उपवास के दिन माताएँ-बहिनें बाह्य शृंगार करती हैं। विविध प्रकार के चमकीले आभूषण एवं आकर्षक वस्त्र पहनती हैं। मेहन्दी का प्रयोग करती हैं। ऐसा करने से कर्म बन्ध होते हैं, कर्मों की निर्जरा तो दूर रही।

अब मैं उपवास तप के दिन क्या आवश्यक कर्त्तव्य हैं और क्या करना वांछनीय है? उस पर अपने विचार रख रहा हूँ। उपवास करने वाले भाई व बहिनों के लिये हिंसा, झूठ , चोरी, कुशील का परित्याग करना आवश्यक है। राग, द्वेष, क्रोध, मान, माया, लोभ आदि से बचना चाहिए। सांसारिक पौद्गलिक जड़ पदार्थों की प्राप्ति के लिये उपवास नहीं करना चाहिए। उपवासादि तपश्चर्या के दिन सांसारिक कार्यों में भाग लेना, कषायादि प्रवृत्तियों का होना, उपवास के पूर्व या उपवास के पारणे के दिन उपवास का निमित्त बना कर सरस व अधिक आहार करना- ऐसी प्रवृत्तियाँ उपवास के स्वरूप को दूषित करती हैं। उस दिन सामायिक-स्वाध्याय, प्रतिक्रमण और पौषध करना चाहिए। जो भाई-बहिन मौन रख सकें तो बहुत ही उत्तम है। नमस्कार मंत्र के साथ 'ओम् शान्ति' का स्मरण अधिक से अधिक करने पर मन को शांति मिलती है। स्वाध्याय स्वयं को आता हो तो स्वयं करें, अन्यथा दूसरों से भी करा कर सुना जा सकता है। स्वाध्याय में धार्मिक ग्रन्थ, शास्त्र आदि पढ़ने चाहिए। प्रार्थना, भजन, धर्म कथा आदि दूसरों को बाधा न पहुंचाते हुए करना चाहिए। स्मरण, स्वाध्याय और स्मृति से चित्तवृत्ति की शक्तियाँ स्थिर रह सकेंगी। जो भाई-बहिन स्मरण, स्वाध्याय और स्मृति के साथ एक दिन से लेकर छः मास तक के तप तक आगे बढ़ते हैं उनको मानसिक शान्ति के साथ आत्मिक शांति प्राप्त होती है। अष्टमी व चतुर्दशी को यथासंभव उपवास

करना उचित है।

माताओं और बहिनों को बाह्य शृंगार से बचना चाहिए। बदन को अलंकारों से नहीं सजाना चाहिए। कीमती वस्त्र नहीं पहिनना चाहिए। विविध प्रकार की मेहन्दी पार्टियों के आडम्बर का निषेध रखना चाहिए।

बहुत से भाई–बहन तेला, अठाई, मासखमण आदि के पारणे के दिन निमन्त्रण देकर भोजन का आयोजन करते हैं। इस संबंध में अधिक न लिख कर इतना लिखना पर्याप्त होगा कि यह कर्म–निर्जरा का साधन नहीं है।

पूज्य आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. के निम्नलिखित शब्द भी इस संबंध में महत्त्वपूर्ण हैं–

''जो भाई और बहिन अन्तरंग और बहिरंग दोनों तपों की आराधना करेंगे, तो इन तपों की आराधना के द्वारा वे अपनी आत्मा का कल्याण करके कर्मों के भार को हल्का करेंगे। उनके दोनों लोक सुखपूर्ण होंगे।''

-संरक्षक-अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ
''चन्दन'' बी-२ रोड, पावटा, जोधपुर

मेरा परिवार

शर्मिला गोलेच्छा

थाम के जिनकी अंगुलि
ये कदम चला करते थे
वही कदम आज
उन्हें दूर छोड़ आये हैं।
बूढ़े हो चले थे
आश्रम में पहुंचा आये हैं।
इतना बड़ा है माँ का आचल
कि हर दुःख समा जाता है।
पर मेरा घर बहुत छोटा है
मेरा परिवार ही समा पाता है।
मेरा परिवार
मेरी बीवी, मेरा बेटा और मैं
शिखर पर प्रगति के
चढ़ता हुआ ''मैं''
नये जमाने नई हवा में
उन्मुक्त उड़ता ''मैं''

-४, शिवतिला, नया बास, ब्यावर (राज.)

शिक्षा

श्री पी.एम. चोरड़िया

(1)

1. *प्रश्न*- शिक्षा क्या है?

उत्तर- 1. 'सा विद्या या विमुक्तये' जो राग.द्वेष से और काम, क्रोध आदि शत्रुओं से मुक्ति दिलावे, वही शिक्षा है।

2. जो मनुष्य को स्वतन्त्र-मुक्त बनावे वही शिक्षा है।

3. जो शिक्षा मानव को सच्चा इंसान बनावे, वही आदर्श शिक्षा है।-विवेकानन्द

4. मनुष्य के अंदर विद्यमान पूर्णता की अभिव्यक्ति करने वाली ही शिक्षा है।

5. मस्तिष्क में ज्ञान का, हृदय में गुणों का और शरीर में शक्ति का विकास होना ही आदर्श शिक्षा है।

2. *प्रश्न*- शिक्षा का सामान्य अर्थ क्या है?

उत्तर- शिक्षा का सामान्य अर्थ है-सीखना एवं सिखाना, अभ्यास करना।

3. *प्रश्न*- शिक्षा का उद्देश्य क्या हो?

उत्तर- 1. शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य को असत् मार्ग से सत् मार्ग पर लाना, अज्ञान के अंधकार से ज्ञान के आलोक में लाना तथा मृत्यु से हटकर अमरत्व (मोक्ष) प्राप्त करना हो।

2. जिससे व्यक्ति अपने व्यक्तित्व को समझे, उसे विकसित करे और धीरे-धीरे उसका दायरा विशाल से विशालतर होता चला जाय।

(2)

1. *प्रश्न*- जीवन निर्वाहकारी शिक्षा क्या है?

उत्तर- जीवन-निर्वाह के लिये आवश्यक साधन जुटाना और उनके प्रयोग में कुशलता प्राप्त करना ही जीवन निर्वाहकारी शिक्षा है।

2. *प्रश्न*- जीवन-निर्माणकारी शिक्षा क्या है?

उत्तर- सुषुप्त आत्मशक्तियों को जागृत कर आत्मा पर पड़े हुए समस्त विकारों को हटाकर उसकी अनन्त शक्तियों का पूर्ण विकास करना ही जीवन निर्माणकारी शिक्षा है।

3. *प्रश्न*- महात्मा गांधी के अनुसार बुनियादी शिक्षा की श्रेष्ठ पद्धति कौनसी है?

उत्तर- जो रोटी, कपड़ा व मकान उपलब्ध कराये, जो आदमी को राष्ट्र व समाज के प्रति अपना दायित्व निभाने के लिये प्रेरित करे तथा जो मानव को निरन्तर सृजन पथ पर अग्रसर करे।

(3)

1. *प्रश्न*-स्थानांग सूत्र में किन कारणों से श्रुत ज्ञान अर्थात् शास्त्र की शिक्षा

आवश्यक बताई है?

उत्तर- स्थानांग सूत्र में शास्त्र की शिक्षा पांच कारणों से आवश्यक बताई है– 1. ज्ञान वृद्धि के लिए 2. दर्शन–विशुद्धि के लिए 3. चारित्र शुद्धि के लिए 5. दूसरे का दुराग्रह छुड़ाने के लिए 5. पदार्थों के यथार्थ स्वरूप का ज्ञान प्राप्त करने के लिए।

2. *प्रश्न*- ज्ञान सम्पन्न होने से जीवात्मा को क्या लाभ होता है?

उत्तर- ज्ञान सम्पन्न होने से जीवात्मा सब भावों को जानती है और चतुर्गति रूप संसार में नष्ट नहीं होती है। (उत्तरा.सूत्र 29/59)

3. *प्रश्न*- दशवैकालिक सूत्र के 9 वें अध्ययन में शास्त्रों के स्वाध्याय का लाभ बताते हुए क्या कहा गया है?

उत्तर- शास्त्रों के स्वाध्याय तथा अध्ययन से सत्य का साक्षात्कार होता है, चंचल चित्त एकाग्र होता है, मन स्थिर होता है और स्वयं स्थिर होकर दूसरों के अस्थिर मन को स्थिर बनाने की योग्यता अर्जित होती है।

(4)

1. *प्रश्न*- 'रूपयौवनसम्पन्ना, विशालकुलसम्भवा।

विद्याहीना न शोभन्ते, निर्ग्रन्था इव किंशुकाः।।''–अध्यात्म रामायण से

उपर्युक्त शब्दों में क्या संदेश दिया गया है?

उत्तर- ऊँचे कुल में उत्पन्न सुन्दर और तरुण पुरुष भी विद्या के बिना गंध हीन टेसू के फूल के समान शोभा नहीं पाते।

2. *प्रश्न*- विद्या नाम नरस्य कीर्त्तिरतुला भाग्यक्षये चाश्रयो,

धेनुः कामदुहा रतिश्च विरहे, नेत्रं तृतीयं च सा।

सत्कारायतनं कुलस्य महिमा रत्नैर्विना भूषणं,

तस्मादन्यमुपेक्ष्य सर्वविषयं विद्याधिकारं कुरु।।

उपर्युक्त पंक्तियों का अर्थ बताइये।

उत्तर- विद्या मनुष्य की अतुल कीर्ति है, भाग्य बिगड़ने पर यह आश्रय देती है। विद्या कामधेनु है, वियोग में प्रसन्न करने वाली है, विद्या तीसरी आँख है, यह सत्कार का घर, कुल की महिमा और बिना रत्न का भूषण है, इसलिए अन्य सबकी उपेक्षा करके विद्या को प्राप्त करना चाहिए।

3. *प्रश्न*- अह पंचहिं ठाणेहिं, जेहिं सिक्खा न लब्भई।

थम्भा कोहा पमाएणं, रोगेणाऽलस्सएण य।।–उत्तराध्ययनसूत्र 11/3

शिक्षा प्राप्त न होने के कौनसे कारणों का उपर्युक्त आगम वाणी में वर्णन किया गया है?

उत्तर- इन पांच स्थानों या कारणों से शिक्षा प्राप्त नहीं होती– 1. अभिमान 2. क्रोध 3. प्रमाद 4. रोग 5. आलस्य।

(5)

1. *प्रश्न-* पुराने समय में बच्चों को आर्य शिक्षण के आरम्भ में क्या सिखाया जाता था?

उत्तर- 1. पितृदेवो भव 2. मातृदेवो भव 3. आचार्यदेवो भव अर्थात् माता, पिता और गुरु को देव तुल्य समझो।

2. *प्रश्न-* शिक्षण शास्त्रियों ने शिक्षा के पांच मूलभूत सिद्धान्त कौनसे बताये हैं?

उत्तर- 1. सत्य 2. नम्रता 3. श्रद्धा 4. हिम्मत 5. अमीदृष्टि।

3. *प्रश्न-* अमीदृष्टि क्या है?

उत्तर- अपने स्वार्थ का तनिक भी विचार किये बिना सबका हित चाहना अमीदृष्टि है। मुझे इस छोटी सी जिन्दगी में अपने साथ क्या ले जाना है? मैं किसका पक्षपात करूँ? मेरे लिये तो सब समान हैं। दूसरों का सुख मेरा सुख है। मेरा अपना कुछ भी नहीं है। इस प्रकार की भावना रखना अमीदृष्टि है।

(6)

1. *प्रश्न-* श्रावक के 12 व्रतों में चार शिक्षा व्रत कौनसे हैं?

उत्तर- 1.सामायिक 2. देशावकासिक 3. पौषधोपवास 4. अतिथि संविभाग।

2. *प्रश्न-* ये चार शिक्षाव्रत हमें क्या प्रेरणा देते हैं?

उत्तर- ये चारों शिक्षाव्रत भोगवृत्ति पर नियन्त्रण स्थापित करते हुए आत्म विजय की प्रेरणा देते हैं। भोग से त्याग की ओर बढ़ते हुए श्रावक अपने स्व को सर्व में विलीन कर देता है।

3. *प्रश्न-* 'षडावश्यक' द्वारा किस प्रकार शिक्षाव्रतों के उद्देश्य को प्राप्त किया जा सकता है?

उत्तर- हमारे दैनिक कार्यक्रमों में 6 आवश्यक कार्य सम्पन्न करने पर बल दिया गया है, जिन्हें 'षडावश्यक' कहा गया है। ये हैं- 1. सामायिक 2. चतुर्विंशतिस्तव 3. वन्दना 4. प्रतिक्रमण 5. कायोत्सर्ग 6. प्रत्याख्यान।

सामायिक का मुख्य लक्ष्य आत्म.चिन्तन व आत्म.निरीक्षण है। बिना अहं का विसर्जन किए आत्म.चिन्तन की ओर प्रवृत्ति नहीं होती। अतः अहं को गालने के लिए तीर्थंकरों, महापुरुषों के गुण कीर्तन, स्तवन और पंच परमेष्ठी को वन्दना करने का विधान किया गया है। 'प्रतिक्रमण' में असावधानी वश हुए दोषों का प्रायश्चित्त कर उनसे बचने का संकल्प किया जाता है। 'कायोत्सर्ग' में देहातीत होने का अभ्यास किया जाता है और 'प्रत्याख्यान' में सम्पूर्ण दोषों के परित्याग का संकल्प लिया जाता है।

(7)

1. *प्रश्न-* ''रत्न कीचड़ में गिर जाने पर भी मूल्यवान हैं और धूल आकाश पर चढ़ जाने पर भी मूल्यहीन है। योग्यता बिना शिक्षा तत्त्वहीन है और अयोग्य की शिक्षा व्यर्थ है।'' उपर्युक्त विचार किसने प्रस्तुत किए?

उत्तर- शेखसादी ने।

2. *प्रश्न*- ''झंडा बदल देने से देश नहीं बदल जाता है, राजमुद्रा बदल जाने से देश की संस्कृति नहीं बदलती है। आजादी की रोशनी में देश बदलना चाहते हैं, तो अपने बच्चों को मिल रही शिक्षा को बदलो।'' उपर्युक्त संदेश किसने दिया?

उत्तर- विनोबा भावे ने।

3. *प्रश्न*- 'यदि शिक्षा मुझे स्वतंत्रता तथा मोक्ष की प्राप्ति नहीं करा देती, तो उसे धिक्कार है' उपर्युक्त उत्तम विचार किसने व्यक्त किए?

उत्तर- स्वामी रामतीर्थ ने।

(8)

1. *प्रश्न*- 'कुत्ते की पूँछ की तरह विद्या के बिना मनुष्य का जीना व्यर्थ है'–चाणक्य। ऐसा क्यों कहा गया है?

उत्तर- कुत्ते की पूँछ न तो गुह्य प्रदेश को ढँक सकती है और न मच्छर आदि को ही उड़ा सकती है। विद्या के बिना न तो मनुष्य इज्जत की जिन्दगी बसर कर सकता है और न सम्यक् साधना कर सकता है।

2. *प्रश्न*- 'बन्दर क्या जाने अदरख का स्वाद'–एक हिन्दी कहावत। यह कहावत किस सन्दर्भ से कही गई है?

उत्तर- विद्वान की कदर विद्याशील ही कर सकता है, मूर्ख नहीं।

3. *प्रश्न*- 'दाम गंठे, विद्या कंठे'–एक राजस्थानी कहावत। इस उक्ति का क्या तात्पर्य है?

उत्तर- धन जो अपने पास है वह अपना है, विद्या जो कंठस्थ है, वह अपनी है।

(9)

1. *प्रश्न*- योग्य शिक्षार्थी में क्या गुण होने चाहिए?

उत्तर-1. जो हास्य न करे 2. जो सदा इन्द्रिय व मन का दमन करे 3. जो मर्म प्रकाशित न करे 4. जो चरित्र से हीन न हो 5. जो रसों में अति लोलुप न हो 7. असत्यभाषी न हो 8. अविनीत न हो।

उपर्युक्त गुण जिसमें होते हैं वहीं योग्य शिक्षाशील कहा जा सकता है।

2. *प्रश्न*- ज्ञान सम्पन्न होने से जीवात्मा को क्या लाभ होता है?

उत्तर- ज्ञान सम्पन्न होने से जीवात्मा सब पदार्थों के यथार्थ भाव को जान सकता है और चतुर्गति रूप संसार अटवी में दुःखी नहीं होता। जैसे सूत्र (सूत–डोरा) सहित सूई गुम नहीं होती, उसी प्रकार सूत्र (आगम ज्ञान) युक्त ज्ञानी पुरुष संसार में खोता नहीं है और ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप तथा विनय का आचरण प्राप्त करता है।

3. *प्रश्न*- 'साक्षराः' एवं 'राक्षसाः' में क्या संबंध है?

उत्तर- साक्षर व्यक्ति यदि विपरीत आचरण करे तो वह राक्षस ही हो जाता है। इसलिए मात्र अक्षर ज्ञान शिक्षा नहीं होती।

(10)

1. *प्रश्न-* आमे घडे निहितं, जहा जलं तं घडं विणासेति।

इय सिद्धन्तरहस्सं, अण्णाहारं विणासेइ।।

अर्थ– मिट्टी के कच्चे घड़े में रखा हुआ जल जिस प्रकार उस घड़े को ही नष्ट कर डालता है, वैसे ही मन्द बुद्धि को दिया हुआ गम्भीर शास्त्रज्ञान, उसके विनाश के लिए ही होता है। उपर्युक्त वाणी कहां से ली गई है?

उत्तर- निशीथ भाष्य 6243 से।

2. *प्रश्न-* 'नाणंमि असंतंमि, चरित्तं वि न विज्जए' अर्थात्' ज्ञान नहीं है तो चारित्र भी नहीं है। उपर्युक्त पंक्ति कहां से ली गई है?

उत्तर- व्यवहार भाष्य– 6/2/96

3. *प्रश्न-* 'तओ दुस्सन्तप्पा–दुट्ठे मूढे, वुग्गाहिते' अर्थात् दुष्ट को, मूर्ख को और बहके हुए को प्रतिबोध देना, समझाना बहुत कठिन है। आगम की उपर्युक्त वाणी किस सूत्र से ली गई है?

उत्तर- स्थानांग सूत्र 3/4।

(11)

1. *प्रश्न-* स्थानांग सूत्र में शिक्षा के चरणों का विवेचन किस प्रकार किया गया है?

उत्तर- 1. वाचना 2. पृच्छना(पूछना) 3. परियट्टणा(दोहराना) 4. अनुप्रेक्षा (पढ़े हुए पर चिन्तन, मनन करना) 5. धर्मकथा (पढ़े हुए को प्रस्तुत करना)। ये चरण आज भी निर्विवाद रूप से शिक्षा में महत्त्व के साथ प्रतिष्ठित हैं।

2. *प्रश्न-* अज्ञान और मूर्च्छा– ये दोनों शिक्षा के बाधक तत्त्व किस प्रकार हैं?

उत्तर- अज्ञान से व्यक्ति को अपने आपका बोध नहीं होता और मूर्च्छा से व्यक्ति का चारित्र प्रभावित होता है। यदि शिक्षा के साथ अज्ञान और मूर्च्छा दोनो जुड़े रहे, तो शिक्षा से मनुष्य में अनुशासन का दिव्य तेज नहीं जगमगा सकता।

(12)

1. *प्रश्न-* 'संयमित जीवन शिक्षा.प्राप्ति की अनिवार्य शर्त है' यह कथन किस प्रकार सही है?

उत्तर- शिक्षा का मुख्य आधार है –'संयम'। बिना संयमित जीवन के शिक्षा की उपलब्धि संभव नहीं। मन, वचन, शरीर और इन्द्रियों पर नियन्त्रण रखकर ही कोई व्यक्ति शिक्षा प्राप्ति में सफल हो सकता है।

2. *प्रश्न-* शिक्षा का अन्तिम लक्ष्य एवं उद्देश्य क्या है?

उत्तर- सुषुप्त आत्म.शक्तियों को जागृत कर आत्मा पर पड़े हुए समस्त विकारों को हटाकर उसकी अनन्त शक्तियों का पूर्ण विकास करना, शिक्षा का अन्तिम उद्देश्य है। सच्ची शिक्षा व्यक्ति को बन्धनों से मुक्त कर उसमें ऐसी क्षमता और सामर्थ्य विकसित करती है कि वह दूसरों को बन्धन से मुक्त करने में सहायक बन सके।

-89, Audiappa Naicken Street, Chennai-79

उत्तराध्ययन सूत्र : छत्तीसवाँ अध्ययन (२)

प्रो. चांदमल कर्णावट

जीव निरूपण- (गाथा 48 से 67 में) संसारी और सिद्ध दो भेद करके पहले सिद्ध जीवों का वर्णन किया गया है।

सिद्ध जीव निरूपण-(49 से 67) जिन जीवों की कर्म रूप मलिनता नष्ट हो गई, जो आत्मा रागद्वेष से रहित होकर केवलज्ञान, केवलदर्शन प्राप्त करके सर्वज्ञ, सर्वदर्शी बन गई, अनन्त आत्मबल की धारक बन गई, वही सिद्ध पद को प्राप्त होती है। यहां बाह्य लिंग, देश, वेश, धर्म, तीर्थ, सम्प्रदाय का भेद नहीं रहता। यहाँ सिद्धों के लिंग की अपेक्षा स्त्रीलिंग आदि 6 भेद, तीर्थ की अपेक्षा तीर्थादि 4 भेद, बोधि की अपेक्षा स्वयं बुद्ध आदि 3 भेद, संख्या की अपेक्षा एक-अनेक 2 भेद, अवगाहना की अपेक्षा जघन्य-मध्यम-उत्कृष्ट 3 भेद, क्षेत्र की अपेक्षा ऊर्ध्व, अधो, तिर्यक्, समुद्र में होने वाले एवं नदी में होने वाले सिद्ध भेद किए गए हैं। गाथा 52 के अनुसार एक समय में नपुंसक लिंग से 10, स्त्रीलिंग लिंग से 20, पुरुषलिंग से 108, गृहस्थलिंग से 4, अन्यलिंग से 10 एवं स्वलिंग से 108 सिद्ध हो सकते हैं। इसी प्रकार एक समय में जघन्य अवगाहना से 4, उत्कृष्ट से 2 तथा मध्यम अवगाहना से 108 सिद्ध होते हैं। ऊर्ध्व लोक से 4, अधोलोक से 20, तिर्यक्लोक से 108, समुद्र से 2, नदी आदि जलाशयों से 3 सिद्ध होते हैं।

सिद्ध अंतिम शरीर त्याग कहाँ करते हैं? वे कहाँ ठहरते हैं? कहाँ जाकर रुकते हैं? तथा सिद्धगति कहाँ है? प्रश्नों के उत्तर आगे दिए गए हैं। कर्ममुक्त जीव धर्मास्तिकाय के सहयोग से लोक के अन्त में या अलोक के छोर पर जाकर रुक जाते हैं, क्योंकि आगे धर्मास्तिकाय नहीं है।

सिद्ध होने वाली आत्माएँ शरीर का त्याग मनुष्य लोक में ही करती है तथा लोक के अग्रभाग में सिद्धालय है, वहीं वे सिद्धि गति को प्राप्त होती हैं।

सिद्धि स्थान- ईषत्प्राग्भारा पृथ्वी के नाम से प्रसिद्ध सिद्धिस्थान सर्वार्थसिद्ध विमान से 12 योजन ऊपर उलटे छाते के आकार का है। इस ईषत्प्राग्भारा पृथ्वी से 1 योजन दूरी पर लोकान्त है। इस योजन के ऊपर के कोस के छठे भाग में सिद्ध अवगाहित हैं।

सिद्धात्माओं के लक्षण- सिद्धात्मा अरूपी, ज्ञान-दर्शन उपयोग वाले, अक्षय- शाश्वत सुख सम्पन्न, अटल अवगाहना वाले अर्थात् पुनरागमन या जन्म-मरण से रहित हैं।

संसारस्थ जीव निरूपण-(गाथा 68 से 125) संसारस्थ जीव त्रस-स्थावर के भेद से 2 प्रकार के हैं। स्थावर में पृथ्वीकाय आदि 5 हैं।

पृथ्वीकाय के जीव-(गाथा 69 से 83) सचित्त पृथ्वी जीवरूप है। खान से पत्थर निकाले जाने के बाद कचरा आदि भर देने पर वहाँ पुनः चट्टानें बन जाने से पृथ्वी

सजीव है। चूरा किए हुए आटे के समान मृदु पृथ्वी श्लक्ष्ण और पाषाणवत् कठोर होने से वह खर कहलाती है। पृथ्वी जीवों के सूक्ष्म, बादर, पर्याप्त और अपर्याप्त के अनुसार 4 भेद हैं। पृथ्वी के सूक्ष्म जीव सम्पूर्ण लोक में भरे हुए हैं तथा बादर दिखाई देने वाली पृथ्वीकाय के पर्याप्त–अपर्याप्त भेद हैं। यह लोक के एक देश में स्थित है। पृथ्वीकायिक जीवों की आयुस्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त एवं उत्कृष्ट स्थिति 22 हजार वर्ष की बताई गई है। इन जीवों की कायस्थिति(उसी में पुनःपुनः उत्पन्न होने से) जघन्य अन्तर्मुहूर्त एवं उत्कृष्ट असंख्यात काल की है।

अप्कायिक जीव–(गाथा 84 से 91) जल ही जिनका शरीर है, वे अप्काय के जीव कहलाते हैं। सूक्ष्मदर्शक यंत्र से अप्काय के आश्रित जीव देखे जा सकते हैं, अप्काय के नहीं। अप्काय के भी सूक्ष्म व बादर दो भेद हैं। सूक्ष्म जीव संपूर्ण लोक में भरे हैं, वे केवलज्ञानी के दृष्टिगम्य हैं। इनके पुनः पर्याप्त–अपर्याप्त करके 2 भेद हैं। सूक्ष्म का एक भेद और बादर के 5 भेद ओस, तृण पर स्थित जल, धुन्ध, धूअर और हिम बर्फ बताए गए हैं। वर्ण, गंध, रसादि की भिन्नता से असंख्य–अनंत भेद होते हैं।

प्रवाह की अपेक्षा ये जीव अनादि–अनन्त तथा भवस्थिति, कायस्थिति की अपेक्षा सादि–सान्त हैं। शेष पृथ्वीकाय की तरह ज्ञातव्य है। तेजस्काय, वायुकाय का गतित्रस होने से अलग वर्णन किया है।

वनस्पतिकाय–वनस्पतिकाय के भी सूक्ष्म–बादर दो भेद हैं। पर्याप्त, अपर्याप्त भी इनके भेद हैं। बादर के पुनःसाधारण और प्रत्येक दो भेद किए हैं। एक शरीर में अनंत जीव वाले साधारण एवं एक शरीर में एक जीव वाले प्रत्येक वनस्पति जीव कहलाते हैं। कन्दमूल या शैवाल–काई साधारण में और वृक्ष आदि प्रत्येक में माने गए हैं।

प्रवाह की दृष्टि से ये जीव अनादि–अनन्त और स्थिति की अपेक्षा सादि–सान्त माने गए हैं। वनस्पतिकायिक जीवों की आयु स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त एवं उत्कृष्ट दस हजार वर्ष की है। कायस्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त एवं उत्कृष्ट अनंतकाल की बताई है। वनस्पतिकायिक जीवों के वर्ण, गंध, रस, स्पर्श एवं संस्थान (आकार) भेद से हजारों भेद होते हैं। (गाथा 92 से 106)

तेजस्कायिक एवं वायुकायिक जीव– (गाथा 107 से 125)पृथ्वीकाय की तरह इनके सूक्ष्म–बादर दो भेद हैं। सूक्ष्म जीव संपूर्ण लोक में एवं बादर लोक के एक भाग में स्थित हैं। इन दोनों के पर्याप्त, अपर्याप्त करके 4 भेद होते हैं। इन जीवों की आयु जघन्य अन्तर्मुहूर्त एवं उत्कृष्ट क्रमशः 3 अहोरात्रि एवं तीन हजार वर्ष की है। कायस्थिति पूर्ववत् जानें। शेष वर्णन पृथ्वीकाय की तरह जानें।

'पढमं नाणं तओ दया' अर्थात् पहले ज्ञान एवं पीछे क्रिया के अनुसार साधक जीव–अजीव का भेद ज्ञान करके ही अहिंसादि की साधना में प्रवृत्त हो सकता है। जीव–अजीव का पृथक्करण करके साधक को भेद विज्ञान करना चाहिए। जड़ पदार्थो से आत्म तत्त्व की भिन्नता की प्रतीति करनी चाहिए। (क्रमशः)

–35, अहिंसापुरी, उदयपुर (राज.) 313001

दशवैकालिक सूत्र : रचना कथा

श्री प्रकाशचन्द जैन 'दास'

राजगृह नगरी का वासी विप्र था शय्यंभव भट्ट विद्वान।
कर्मकाण्ड का वह विश्वासी, सब वेदों का उसको ज्ञान।।

श्रमणों का वह घोर विरोधी, घृणा भी उनसे करता था।
भटके मन से श्रमण धर्म में, द्वेष भाव भी धरता था।।

एक बार दो श्रमणों ने, आचार्य प्रभव का पा आदेश।
उस ब्राह्मण के यज्ञ वाट में, सहसा ही कर लिया प्रवेश।।

क्रोधी पण्डित वैर भाव से, उठ कर आया उनके पास।
मुनियों को घर से निकालने का, वह करने लगा प्रयास।।

साधु बोले अहो! खेद है, कैसे, यह ब्राह्मण अनजान।
कर्मकाण्ड में फंसे हुए हैं, नहीं तत्त्व का करते ज्ञान।।

कथन सुना जब मुनियों का तो, शय्यम्भव करने लगा विचार।
मृषा वाणी का श्रमण तपस्वी, कभी नहीं लेते आधार।।

चिन्तन करते-करते मन में, ले कर हाथों में तलवार।
जा पहुँचा वह तीव्र गति से, अपने शिक्षा गुरु के द्वार।।

बोला गुरु से सत्य तत्त्व का, मुझको समझाओ ज्ञान।
यदि सत्य न बोले असि से, हर लूँगा मैं तेरे प्राण।।

डर कर गुरु ने कहा शय्यम्भव! सुनो तुम्हें समझाता हूँ।
तत्त्व ज्ञान की प्राप्ति हेतु, राह तुझे बतलाता हूँ।।

आचार्य प्रभव की शरण में जाओ, वही तत्त्व के ज्ञाता हैं।
भव जल में भटके जीवों के, वे इस युग में त्राता हैं।।

तथ्य जान कर शय्यम्भव पंडित ने, उस स्थल से गमन किया।
आचार्य प्रभव के पास पहुँच, उनके चरणों में नमन किया।।

सुधामयी मीठी वाणी से, उन्होंने उसे दिया उपदेश।
कृत-कृत्य हो गया वह ब्राह्मण, महावीर का सुन संदेश।।

वैराग्य भाव से प्रेरित उसने, सब जग बन्धन छोड़ दिया।
गर्भवती पत्नी से भी उसने, निज नाता तोड़ दिया।।

आचार्य देव से दीक्षित होकर, गृहस्थ छोड़ कर बना श्रमण।
पाँच महाव्रत, समिति-गुप्ति, युक्त हुआ उस का जीवन।।

नव मुनि ने आचार्य प्रभव से, पूर्वों का पाया सद्ज्ञान।

शुद्ध आचार से सतत यत्न से, बन गये वे महान् विद्वान्।।

योग्य जान आचार्य श्री ने, उन्हें बनाया निज पट्टधर।
वीर प्रभु के चौथे क्रम में, मुनि बने आचार्यप्रवर।।

यथासमय शय्यंभव पत्नी ने, एक पुत्र को जन्म दिया।
पूर्व किसी घटना वश उसने, मणक नाम था प्राप्त किया।।

आठ वर्ष का हुआ वह बालक, माँ का राज दुलारा था।
सुन्दर कोमल उसका मुखड़ा, सब को लगता प्यारा था।।

एक दिवस माता से उसने, पूछा पूज्य पिता का नाम।
बतलाओ वे कहाँ रहते हैं, तथा वे करते हैं क्या काम।।

बालक का हठ देख मातु ने, कह दी घटना घटी यथा।
मुनि बने कैसे शय्यंभव थे, बतला दी वह पूर्ण कथा।।

मणक! तुम्हारे पिता हैं जब, जिनशासन के आचार्य महान्।
उनके सम इस भरत क्षेत्र में, दिखता न कोई विद्वान्।।

माता की आज्ञा ले बालक, चला पिता की करने खोज।
मैं भी अब दीक्षा ले लूँगा, बनी थी उसके मन की सोच।

घर से चलकर मणक बाल, चम्पा नगरी की ओर बढ़ा।
नगरी के बाहर ही उसने, देखा था कोई मुनि खड़ा।।

भक्ति-भाव से युक्त हो उसने, मुनि चरणों में नमन किया।
हाथ जोड़ कर फिर बालक ने, महामुनि से प्रश्न किया।।

आचार्य देव शय्यंभव की भगवन्! क्या आपको है पहचान।
तथा जहाँ पर वे रहते हैं, मुझे बता सकते वह स्थान।।

मुनिवर तो वे स्वयं आचार्य थे, उन्होंने बालक को देखा।
आश्चर्य चकित उस के मुख पर, देखी निज मुद्रा की रेखा।।

बोले तब वे मणक बाल से, बालक क्या है तेरा नाम।
तथा कहाँ से आये हो, आचार्य देव से क्या है काम।।

बालक ने कह दी वही कहानी, जो माता से जानी थी।
और बतायी भावना अपनी, जो दीक्षा की ठानी थी।।

मणक! तुम्हारे पिता और मैं, एक रूप ही हैं जानो।
बोले गुरुवर पिता आज से, मुझे ही तुम अपना मानो।।

पूज्य गुरु के उन वचनों को, मणक ने कर स्वीकार लिया।
दीक्षा ले उनके चरणों में, श्रमण धर्म को धार लिया।।

आचार्य देव ने मणक मुनि-हित, किया ज्ञान उपयोग विशेष।

देखा उस बालक की आयु, छः मास है केवल शेष।।

उन्होंने ले कर द्वादशांगी से, श्रेष्ठ मुनिचर्या का सार।
दश अध्याय का सूत्र रचा इक, देकर थोड़ा-सा विस्तार।।

मणक मुनि को उसी सूत्र से, देते थे वे पावन ज्ञान।
बाल मुनि सुनते थे उसको, देकर मन का पूरा ध्यान।।

आगम में जैसा मिलता था, वर्णित मुनियों का आचार।
जीवन अपना नित्य बनाते, मणक मुनि उसके अनुसार।।

छः मास बीते तो मुनि ने, भौतिक तन को त्याग दिया।
अन्तकाल आलोचनादि कर, स्वर्ग लोक को प्राप्त किया।।

पुत्र-मृत्यु से गुरुदेव का, मुख.मंडल हो गया म्लान।
उन के नयनों में अश्रु थे, सब साधु-श्रावक हुए हैरान।।

यशोभद्र मुनिवर ने पूछा, भगवन्! यह कैसा है क्षोभ।
नेत्रों में क्यों नीर-धार है, तथा हृदय में क्यों है शोक।।

गुरुवर बोले जग दृष्टि से, मणक पुत्र ही था मेरा।
छद्मस्थ अवस्था है मेरी, मुझ को मोह ने आकर घेरा।।

यशोभद्र पुनः बोले, यह क्यों न हम को बतलाया।
लघु मुनि ही केवल जान उसे, हम सबने ही धोखा खाया।।

यदि रहस्य न रखता मैं इसको, मुनि रहता सेवा से वंचित।
बोले आचार्य न कट पाते, कृत कर्म जो उसके थे संचित।।

उस मणक मुनि कल्याण हेतु, आगम जो नया बनाया था।
सब मुनियों ने उस रचना को, बहु उपयोगी पाया था।।

सर्व संघ के आग्रह से वह, आगम रूप प्रमाण हुआ।
दशवैकालिक सम नाम से ,उस कृति का सम्मान हुआ।।

मुनि क्रिया के ज्ञान हेतु यह, सूत्र बड़ा उपयोगी है।
यदि चर्या के प्रति निष्ठा हो, बन जाता यह सहयोगी है।

मुनिवरों! जब घर त्यागा है, छोड़ो सारे शिथिलाचार।
दशवैकालिक ज्ञान प्राप्त कर, क्रिया करो उसके अनुसार।।

क्यों उपाधियों और डिग्रियों के, पीछे भागो-दौड़ो।
राग-रूप इन भावों से हे गुरुवर! जिन नाता तोड़ो।।

क्यों विशेषणों का भी भगवन्! व्यर्थ में ढोते हो तुम भार।
मुनि शब्द में स्वतः निहित है, सारे श्रेष्ठ गुणों का सार।।

- 12 सी.डी. आदर्श नगर, आलम बाग, लखनऊ-226005

जिनवाणी के 'जैनागम-साहित्य' विशेषांक पर प्राप्त पत्र

जिनवाणी का 'आगम विशेषांक' आद्योपान्त पढ़ने का अवसर मिला। संकलन बहुत अच्छा लगा। महान् आचार्यों तथा अन्य विद्वान लेखकों के लेखों में आगम-साहित्य का ऐतिहासिक दृष्टि से विवेचन तो हुआ ही है, इसके अतिरिक्त किस आगम में किस विषय वस्तु का वर्णन किस स्थान पर है, यह ज्ञान भी एक ही स्थान पर प्राप्त है। प्रकीर्णकों, निर्युक्तियों, चूर्णियों इत्यादि पर तथा दिगम्बर मान्य ग्रंथों पर भी पर्याप्त जानकारी उपलब्ध है। विशेषांक बार-बार पठनीय तथा संग्रहणीय है। कुल मिलाकर यही कह सकता हूँ-सुन्दर अति सुन्दर।

जून, 2002 — *प्रकाशचन्द जैन,* 12 *सी डी, आदर्श नगर, लखनऊ*

मैं राजमल सिंघी, जिनवाणी मासिक का आरंभ से ही सदस्य हूँ। प्रतिमाह इसको प्राप्त करने के पश्चात् भली प्रकार पढ़ता हूँ एवं मेरे पारिवारिक सदस्य भी इसको चाव से पढ़ते हैं। इसमें आचार्य भगवन्तों एवं विद्वानों के शिक्षाप्रद और रोचक अध्यात्म से भरपूर लेख पढ़ने को मिलते हैं। इसके विशेषांक तो अत्यन्त उपयोगी होते हैं। वर्तमान में जो जैन आगम विशेषांक प्रकाशित हुआ है उसमें जैन आगमों का अच्छा विवरण है जो पठनीय है और इसमें जैन सिद्धान्तों का वर्णन आ जाता है।

मैं बारह व्रतधारी श्रावक हूँ एवं स्वाध्याय एवं लेखन में मेरी अत्यन्त रुचि है। मेरे लगभग 200 लेख विविध पत्रिकाओं में छपे हैं एवं कुछ जिनवाणी में भी छपे हैं।

इस विशेषांक में बताया गया है कि स्थानकवासी और तेरहपंथी संप्रदायों में केवल बत्तीस आगम ही मान्य हैं और इस विशेषांक में मूलतः इन्हीं 32 आगमों का विवेचन है।

दिनांक 3.5.2002 — *राजमल सिंघी, बी-61, सेठी कॉलोनी, जयपुर*

जिनवाणी का 'जैनागम-साहित्य' विशेषांक मिला। बड़ी प्रसन्नता हुई। इसके सम्पादन हेतु आपका अथक प्रयत्न बधाई एवं आभार का पात्र है। विविध आलेखों के लेखक तो साधुवाद के पात्र हैं जिन्होंने अपने लेखों द्वारा आगमों एवं उसके अन्य साहित्य के बारे में जानकारी प्रदान की। मेरी ओर से आपको, संपादक मण्डल एवं लेखकों को कोटिशः वन्दन, धन्यवाद एवं आभार।

दिनांक १८.५.२००२ — *भण्डारी मदनराज, जोधपुर*

जिनवाणी का 'जैनागम विशेषांक' प्राप्त हुआ। बहुत ही सुन्दर और पढ़ने योग्य है। आपने इसमें बहुत ही श्रम किया, उसके लिए धन्यवाद देता हूँ। मेरा एक सुझाव है कि आप विशेषांक निकालें, किन्तु जिनवाणी का नियमित अंक इसके कारण बन्द न हो।

दिनांक 29.5.2002 — *जवाहरलाल बाघमार, चेन्नई*

जिनवाणी का आगम विशेषांक प्राप्त हुआ। इसमें जैन धर्म के सूत्रों/शास्त्रों के संबंध में सुन्दर आलेख हैं। आगमों की सम्पूर्ण जानकारी उपलब्ध है। इसमें भिन्न-भिन्न मान्यता वालों की विचारधारा का भी समावेश किया गया है।

जैनागम विशेषांक का सूत्रपात, सामग्री संकलन व सम्पादन डॉ. धर्मचन्द जी जैन द्वारा हुआ, इसकी जितनी प्रशंसा की जाय कम है।

जैनागम आद्योपांत पाठकों के चिन्तन-मनन की प्रेरणा देगा, कल्याण पथ को प्रशस्त कर शाश्वत सुख की उपलब्धि कराएगा, यह मेरा विश्वास है। यह विशेषांक समग्र जैन समाज के लिये बहुत उपयोगी है और मार्ग दर्शन का कार्य करेगा।

हम सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के श्री प्रकाशचन्द जी डागा, सदस्यगण और डॉ. धर्मचन्द जी जैन को इस महत्त्वपूर्ण प्रकाशन की हार्दिक बधाई देते हैं। हम आभारी है।

दिनांक 25.6.2002 — *श्री कृष्णमल लोढ़ा,*
संरक्षक-अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ,जोधपुर

आपका विशेष अंक आगम पर प्राप्त हुआ। पढ़ने में व मनन करने में समय लगेगा, किन्तु ग्रंथ बहुत ही शिक्षाप्रद है। बहुत ही सुन्दर ढंग से प्रस्तुती की है। हमारी ओर से आपको इस अद्भुत कार्य के लिये शुभकामनाएँ।

प्रस्तावना में हमने देखा कि आपका विशेष अंक अहिंसा पर भी प्रकाशित हुआ है। क्या इसकी एक प्रति प्राप्त हो सकती है? अगर मिल सकती हो तो कृपया उसकी कीमत लिख भेजें ताकि हम यहा से डी.डी. या एम.ओ. द्वारा रकम भेज सकें।

दिनांक ६.६.२००२ — *डी.एम. कोठारी, मुम्बई*

आपके द्वारा सम्पादित 'जिनवाणी' का जैनागम-साहित्य विशेषांक बहुत ही सुन्दर है। इसमें आपके द्वारा ऐसी सामग्री जो जैन धर्म में बहुत मेहनत से प्राप्त होती, प्रकाशित की गई है। इस विशेषांक को जिसने पढ़ा, उसने सराहा है।

दिनांक-१८.५.२००२ — *- अशोक जैन, जयपुर*

डॉ. सम्पतसिंह जी भाण्डावत को प्राप्त पत्र

इस पत्र द्वारा आपको एक कष्ट दे रहा हूँ। जिनवाणी का एक विशेषांक जैन आगम पर निकला है। उसको पढ़कर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई। इस अंक को मैं कुछ सज्जनों को भेंट करना चाहता हूँ। सो मुझे कुछ विशेषांक वी.पी.पी. से अवश्य भिजवा दिरावें। अग्रिम धन्यवाद।

आपका
बुद्धसिंह बापना, कोटा

भैया का पत्र : कालेज में प्रवेश करने वालों के नाम

श्री नवलसिंह जैन

प्यारे भैया बहनों!

असीम स्नेह! सीनियर सैकेण्डरी की परीक्षा उत्तीर्ण करने पर आपको हार्दिक बधाइयाँ एवं शुभकामनाएँ।

स्कूली शिक्षा के 13–14 वर्ष पूर्ण कर अब आपको कॉलेज की दहलीज पर कदम रखना है। विद्यालय में अब तक आप पर अध्यापक–अध्यापिकाओं का नियन्त्रण था। उनकी डांट–डपट, पिटाई से आप अनुशासनमय होकर अध्ययन करते थे। हो सकता है आप इस अनुशासन को परतंत्रता समझते रहे हों। आप के मन में कभी–कभी परतंत्रता की जंजीरों को तोड़ देने का खयाल भी आता रहा होगा। कॉलेज में प्रवेश के साथ ही समझिये आपको पूर्ण स्वतंत्रता मिल गई है। विद्यालय की तरह न तो कॉलेज में वैसे अध्यापक हैं, न ही गलतियों को अभिभावकों तक पहुंचाने वाले प्राचार्य! आप कालांश में कक्षा में बैठते हैं या गुलछर्रे उड़ाते हैं, यह आप पर निर्भर करता है। परन्तु उन्मुक्त पंछी कभी–कभी राह भी भटक जाते हैं। आप अपनी राह नहीं भटक जाएं यह सावधानी रखने के लिए मैंने अपने महाविद्यालयीय जीवन से जो अनुभव हासिल किये हैं, उन्हें आप तक पत्र के माध्यम से पहुंचा रहा हूँ।

यह युवावस्था का संक्रमण काल है। इस समय में अच्छे–बुरे वातावरण का प्रभाव बहुत ज्यादा पड़ता है। अनुकूल परिस्थितयाँ एवं अच्छी संगति प्राप्त होने पर विशिष्ट व्यक्तित्व का निर्माण हो सकता है, तो कुसंगति के फेर में पड़कर जीवन बर्बाद भी हो सकता है। संस्कारों की प्रतिरोधकता जिसके पास है वह कभी संक्रमित नहीं हो सकता है। माटी के लोंदे को लहर अपने साथ जिधर चाहे बहा ले जाती है, परन्तु इसके विपरीत चट्टान से टक्कर लेने वाले तूफान को भी हार का सामना करना पड़ता है। इतने कमजोर नहीं रहें कि जमाने की धारा आपको अपने साथ बहा ले जाए, आपको वह ताकत पैदा करनी है कि आप जमाने की धारा को बदल सकें।

हो सकता है कि आपको जो सहपाठी कॉलेज में मिलें, उनमें से कई कुव्यसनों के आदी हों। सिगरेट पीते हों, गुटखा खाते हों, शराब पीते हों, सिनेमा देखते हों, अश्लील साहित्य पढ़ते हों, घर से कॉलेज के लिए निकलकर गुलछर्रे उड़ाते–फिरते हों। ऐसा भी संभव है कि वह आपको भी ऐसा ही करने के लिए प्रेरित करें। आपके अनुकरण नहीं करने पर आपको गंवार कहें। ऐसे सहपाठियों के दबाव में आकर कभी भी कोई गलत कदम आपको नहीं उठाना है। किसी सहपाठी से घनिष्ठता बढ़ाने से पहले उसे जांचे–परखें, उसके बाद ही उसे अपना मित्र बनाएं।

यदि आपको अपने किसी मित्र की ऐसी आदत का पता चले तो उसे आत्मयीता से ऐसा न करने के लिए समझाएं। मॉडर्न दिखने के लिए भी कई बार युवा लोग नशा करने लगते हैं। सदैव याद रखें आपको मॉडर्न नहीं अपितु मानव बनना है। मादक द्रव्यों का व्यवसाय करने वाले लोग कॉलेजों के छात्र-छात्राओं को अपना निशाना बनाते हैं। पहले पहल ये लोग घनिष्ठता बढ़ाकर मुफ्त में नशे का सेवन करने के लिए कहते है, धीरे-धीरे नशे की लत पड़ जाती है और छात्र-छात्राएँ इनके ग्राहक बन जाते हैं। आपको सतर्कता पूर्वक ऐसे लोगों से बचकर रहना होगा।

अधिकांशतः कॉलेज के छात्र-छात्राएँ अपने गुरुजनों का सम्मान नहीं करते हैं। उन्हें तरह-तरह के नाम देकर पीठ पीछे उनकी हंसी उड़ाते हैं। उनकी गलतियां निकालकर मजाक बनाते हैं। गुरु की कृपा पाकर ही शिष्य कुछ हासिल कर सकता है। अपने प्राध्यापकों का सम्मान करें, उन्हें आदर दें, उनकी आज्ञा का पालन तत्परता से करें और उनके स्नेहपात्र बनें। ऐसा करने पर आपको गुरुजनों की कृपादृष्टि प्राप्त होगी, जो आपकी सफलता में अहम् भूमिका निभाएगी। संभव है कि ऐसा करने पर आपको अन्य छात्र चमचा, चापलूस कहें या और कोई ताना मारें। आपको कभी भी ऐसी बातों पर ध्यान नहीं देना है। याद रखें गुरुजनों का अपमान करने वाले, गुरु से द्वेष रखने वाले छात्र कभी भी सफल नहीं हो सकते हैं।

महाविद्यालय में सभी वर्गों के छात्र आते हैं। कुछ छात्रों के रहन-सहन का स्तर बहुत ऊँचा होता है। आपको किसी छात्र से मुकाबला नहीं करना है। अपने पांव उतने ही पसारने हैं जितनी अपनी चादर की लम्बाई हो। माता-पिता के समक्ष कोई ऐसी मांग नहीं रखें, जिसे पूरा करने में उन्हें तकलीफ का सामना करना पड़े। महाविद्यालय जाने का उद्देश्य है अध्ययन करना, न कि मौजमस्ती।

युवावस्था में विपरीत लिंग के प्रति आकर्षण एक सहज प्रक्रिया है। छात्र-छात्राओं की आपसी मित्रता अध्ययन संबंधी विचार-विमर्श हेतु अनुचित नहीं है। परन्तु यह मित्रता एक सीमा तक ही ठीक रहती है। आप इतनी अधिक नजदीकियाँ नहीं बढ़ा लें कि इससे परिवारजनों को नीचा देखना पड़े। अपने परिवार की मर्यादा, इज्जत का सदैव खयाल रखें। आपका चारित्रिक स्तर कभी नहीं गिरनेदें।

महाविद्यालय में कभी-कभी बदमाश एवं आवारा किस्म के छात्रों से सामना करना पड़ जाता है। जहां तक हो सके महाविद्यालयीय राजनीति एवं ऐसे छात्रों से दूर ही रहना चाहिए, कभी-कभी छोटे-छोटे झगड़े विकराल रूप धारण कर लेते हैं और युवा आपराधिक जगत में प्रवेश कर लेता है। छोटी-छोटी बातों को अपना प्रेस्टिज पॉइन्ट नहीं बनाना है।ऐसे लोगों की हरकतों पर ध्यान नहीं देना ही उनका प्रतिकार है। इसका मतलब यह कदापि नहीं है कि अत्याचारों की अति होने पर भी आप चुप बैठे रहें। यदि कोई आपको बेवजह परेशान करता है तो सबसे पहले परिवार के किसी वरिष्ठ सदस्य को इसकी जानकारी दें, उनसे विचार-विमर्श

करके ही कोई संवैधानिक कदम उठाएं।

अध्ययन से मतलब केवल किताबी ज्ञान से नहीं है। अच्छे अंकों से उत्तीर्ण होना ही आपका एकमात्र उद्देश्य नहीं होना चाहिए। आपके व्यक्तित्व के विकास का यही समय है। महाविद्यालय में अध्ययन के दौरान होने वाली प्रत्येक सहशैक्षणिक गतिविधि में आपको भाग लेना चाहिए। स्काउट, एन.सी.सी., खेलकूद साहित्यिक गतिविधियों में भाग लेकर ही आप अपनी प्रतिभा को निखार सकते हैं।

प्रायः देखा जाता है कि महाविद्यालयीय छात्र वर्ष भर का समय फालतू बातों में व्यतीत कर देते हैं। परीक्षा नजदीक आने पर पास बुक्स, वनवीक सीरीज या फिर नोट्स मांग कर जैसे-तैसे कक्षा उत्तीर्ण कर लेते हैं। परीक्षा उत्तीर्ण करने के लिए कई बार नकल एवं रिश्वत जैसे गलत तरीके भी अपनाते हैं। आप मेहनत करने से नहीं घबरायें, वर्ष भर एक दिनचर्या बनाकर अध्ययन करें। जुलाई से दिसम्बर तक आप अपने नोट्स बनाएं। जनवरी से परीक्षा तक उनका अध्ययन करें। इस तरह आप बहुत अच्छे अंकों से उत्तीर्ण हो सकते हैं। आप प्रत्येक विषय की पुस्तक को परीक्षा की दृष्टि से नहीं पढ़ें, बल्कि ज्ञानार्जन के लिए साधारण पुस्तक समझकर पढ़ें। उस पुस्तक के प्रत्येक पाठ का सार स्वयं लिखें। तत्पश्चात् संभावित प्रश्न बनाकर स्वयं उत्तर भी दें। नियमित रूप से पुस्तकालय का सदुपयोग करें।

बिना मेहनत किये अथवा बहुत कम मेहनत करके सफलता हासिल करना आजकल के छात्रों को बहुत भाता है। सदैव याद रखिये सफलता का कोई शार्टकट नहीं होता। सस्ती सफलता के फेर में पड़े रहने से कुछ लाभ नहीं। चिरस्थायी प्रगति के लिये राजमार्ग पर अनवरत परिश्रम और अपराजेय साहस साथ लेकर चलना होता है। पगडण्डियाँ खोजना बेकार है। वे भटका सकती हैं। परिस्थितियाँ, साधन, क्षमता का समन्वय करना समझदारी है, परन्तु सफलता केवल समझदारी पर ही तो निर्भर नहीं है, उसका मूल्य माथे से टपकने वाले श्रम सीकरों से ही चुकाना पड़ता है।

आपसे बहुत बातें हो गईं। ज्यादा क्या लिखूं, आप स्वयं प्रज्ञाशील हैं। कभी भी किसी प्रकार की समस्या हो, उलझन हो तो अपने भैया को जरूर याद करना पत्र लिखना। शेष कुशल......

आपका भैया

नवलसिंह जैन

अधीक्षक

श्री जयमल्ल जैन छात्रावास

मेड़ता शहर, जिला-नागौर (राज.)

अहिंसाणुव्रत : छविच्छेद अतिचार

श्री लालचन्द जैन

बनारस नगर में कुलपुत्र सागर रहता था। उसकी दो पत्नियाँ थीं–कमला और लीलावती। कमला धर्माचरण रहित थी जबकि लीलावती ने श्रावक धर्म स्वीकार किया था और प्राणिवध के त्याग का नियम ले रखा था। लीलावती पति को अधिक प्रिय थी, जिससे कमला उससे द्वेष करती थी। ईर्ष्या वश कमला सदैव लीलावती के अवगुण ढूँढती रहती थी।

लीलावती पर्व के दिनों में विशेष तप करती थी और पारणे के दिन साधुओं को आहार बहरा कर फिर भोजन करती थी। यह देख कर कमला उस पर और अधिक ईर्ष्या करने लगी। लीलावती सुबह, दोपहर और शाम तीनों समय धर्माराधन करती थी। जब कमला को लीलावती का कोई दोष दिखाई न दिया तो उसने अपने पति से झूठ ही कह दिया कि लीलावती आपको वश में करने के लिये किसी हल्के देव का त्रिकाल जप कर रही है। संयोग से उसी समय सागर बीमार हो गया जिससे कमला को उसे विश्वास में लेने का अवसर मिल गया कि "देखो उसके जाप से ही आप बीमार हुए हैं।"

एक दिन सागर ने लीलावती से पूछ ही लिया "क्या तुम त्रिकाल का जाप किया करती हो?"

लीलावती– "मैं देवी का भजन करती हूँ।"

सागर– "क्या विश्वास कि तुम भजन ही कर रही हो?"

लीलावती मन में समझ गई कि मेरी सौत कमला ने उसे मेरे विरुद्ध भड़काया है, उसने कहा "आप जो चाहें वह परीक्षा देने को तैयार हूँ।"

सागर– "यदि तुम सच्ची धर्मात्मा हो तो दीवार पर चित्रित देव बोलकर मेरी शंका दूर करे।" लीलावती ने कहा कि ऐसा ही होगा। आधी रात को उसने शासन देवता का ध्यान कायोत्सर्ग किया। धर्म के प्रभाव से शासनदेव आकर आधी रात को दीवार पर चित्रित देव में समा गये और बोले "अरे दुराचारी! धर्म से ईर्ष्या करने वाली कमला ने तुझे भ्रमित किया है, इसीलिये तू इस सती स्त्री लीलावती पर झूठा कलंक लगा रहा है। सती पर झूठा कलंक लगाकर अब तू जीवित नहीं बचेगा।"

देव वाणी सुनकर सागर घबरा गया, वह देव के चरणों में गिरकर क्षमायाचना करने लगा। "हे देव! मुझे क्षमा करें! ऐसी भूल अब मैं दुबारा कभी नहीं करूंगा।"

शासनदेव चित्र से निकल कर अंतर्धान हो गया। इधर लीलावती भी क्रोधित होकर अपने पीहर चली गई।

सागर अपने ससुराल गया और अपनी पत्नी लीलावती को पुनः घर लौटने के लिए आग्रह करने लगा।

लीलावती ने कहा कि "आप कमला के कान काट कर उसे घर से निकाल दें तभी मैं लौटूंगी।"

सागर ने लीलावती की शर्त स्वीकार की। उसने घर आकर कमला के कान काट लिये और उसे घर से निकाल दिया।

कान काटने से यद्यपि कमला मरी तो नहीं थी, पर वह अपंग अवश्य हो गयी थी। अपनी शर्त पूरी होने पर लीलावती घर लौटी। किंतु उसे अपने प्रथम अणुव्रत में छविच्छेद नामक तीसरा अतिचार लग गया था, क्योंकि उसी के कहने से उसके पति सागर ने कमला के कान काटे थे।

—10/595, चौपासनी हाउसिंग बोर्ड, जोधपुर

चोर का उत्तर

श्री प्रकाश गुन्देचा

एक व्यक्ति चोरी के अपराध में रंगे हाथों पकड़ा गया। उसे राजा के सामने पेश किया गया। राजा ने उसे जेल में डालने का हुक्म दे दिया।

जब उसकी मां को यह पता चला तो वह उससे मिलने के लिये आई, परन्तु उस चोर ने माँ से मिलने से इन्कार कर दिया। यह देख जेलर को बहुत आश्चर्य हुआ। जेलर ने उसे काफी समझाया कि वह माँ से मिल ले, परन्तु उसने मना कर दिया। उसकी माँ के ज्यादा गिड़गिड़ाने पर वह चोर माँ के सामने गया, पर वह माँ के सामने पीठ करके खड़ा हो गया।

जेलर ने इस विचित्र व्यवहार का कारण पूछा तब वह चोर बोला– "जब मैं छोटा था तब एक कूजड़े की टोकरी से दो सेव चुराकर ले आया था और वे सेव जब माँ को दिये तो इसी माँ ने मुझे शाबाशी दी थी और उसी का परिणाम है कि मैं चोरी को अच्छा समझने लगा व धीरे–धीरे चोरी में माहिर होकर बड़ी–बड़ी चोरियाँ करने लगा। उसका परिणाम है कि मैं आज आपके सामने जेल में बंद हूँ। यदि प्रारम्भ में ही चोरी करने पर इस माँ ने मुझे डांटा होता या मार लगाई होती तो मेरी यह दुर्दशा न होती जो आज हुई है। माँ के प्रोत्साहन के कारण ही मैं पक्का चोर बनकर यह दुर्दशा भोग रहा हूँ। इसी कारण मैं इसका मुँह नहीं देखना चाहता।"

जेलर ने यह सोचकर कि कैदी को सुधारना ही जेल का उद्देश्य होता है और चूंकि इस चोर को अपने किये पर पश्चात्ताप हो रहा है अर्थात् यह कैदी सुधर चुका है, उसने राजा से सिफारिश करके उसे कैद से मुक्त करवा दिया।

-श्याम भवन, जालोरी गेट के अन्दर, जोधपुर (राज.)

साहित्य-समीक्षा

डॉ. धर्मचन्द जैन

***वर्द्धमान-महावीर-स्मृति-ग्रन्थ*-सम्पादक**-*डॉ. सुदीप जैन*, **प्रकाशक**-*जैन मित्र मण्डल, 2515, धर्मपुरा, दिल्ली–110006*, **पृष्ठ** *32+496*, **मूल्य** *201 रुपये*, **सन्** *2002*

भगवान महावीर के 2600वें जन्म–कल्याणक वर्ष के अवसर पर प्रकाशित 'वर्द्धमान महावीर स्मृति-ग्रन्थ' चार खण्डों में विभक्त है। प्रथम खण्ड में वर्द्धमान महावीर के जीवन पर 120 पृष्ठों में 26 आलेख हैं, जिनमें अधिकतर प्राचीन आलेख संगृहीत हैं। इन आलेखों में आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का 'आत्मजयी महावीर' डॉ. ए.एन.उपाध्ये का 'भगवान महावीर और उनका जीवन-दर्शन', डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल का 'दीर्घप्रज्ञ भगवान् महावीर' आदि उल्लेखनीय हैं। द्वितीय खण्ड में वर्द्धमान महावीर के दर्शन पर 11 आलेख हैं। इनमें भी कई आलेख संकलित हैं, यथा– आचार्य महाप्रज्ञ का 'अहिंसा-प्रशिक्षण : एक सार्वभौम आयाम', पं. दलसुख मालवणिया का 'आधुनिक युग और भगवान् महावीर' आदि। तृतीय खण्ड 'वर्द्धमान महावीर की परम्परा' में 19 आलेख हैं, जिनमें भूगोल, जैन विश्वविद्यालय, मंगलमूर्ति गणेश, ब्राह्मी लिपि आदि का विवेचन सम्मिलित है। चतुर्थ खण्ड 'प्राकृत भाषा' को समर्पित है, जिसमें 23 लेख उपलब्ध हैं। इन लेखों में प्राकृत भाषा एवं साहित्य से सम्बद्ध विवेचन हुआ है। ग्रन्थ के अन्त में दो परिशिष्ट हैं। प्रथम परिशिष्ट में लेखकों का परिचय है तथा द्वितीय में लेखों की आधार-सामग्री से सम्बद्ध सूचना दी गई है।

ग्रन्थ श्रमपूर्वक तैयार किया गया है। आलेखों का संकलन किए जाने से ग्रन्थ में श्रेष्ठता भी बढ़ी है, तो कतिपय पक्ष विवेचित होने से छूट भी गए हैं। कुछ अनावश्यक लेख भी सम्मिलित हो गए हैं। फिर भी ग्रन्थ अपने आप में महत्त्वपूर्ण है।

I AM MAHAVIRA–*Dr. N.L. Jain*, **Publisher-** *Parshvanath Vidyapeetha, ITI Road, Karaunvadi, Varanasi-221005*, **Pages-** *8+72*, **Price** : *Rs. 25*, **Year** *2002*

भगवान महावीर का जीवन आत्म-कथा के रूप में लिखने का सम्भवतः यह प्रथम प्रयास है। विज्ञानविद् डॉ. एन.एल.जैन ने 17 अध्यायों में यह साहित्यिक रचना की है। इसमें जन्म, बचपन, प्रव्रज्या, साधना, सत्यबोध, विचरण, उपदेश आदि के साथ कुछ प्रसिद्ध कथानक भी दिए गए हैं। गणधर गौतम के प्रश्नों का समाधान एवं अपने समकालीन धर्म–दर्शन–प्रवर्तकों का भी परिचय दिया गया है। पुस्तक अंग्रेजी के प्रारम्भिक पाठकों के लिए रोचक है।

वर्द्धमान कैसे बने महावीर?–*श्रीमती लता बोथरा*, **प्रकाशक**–*श्री जैन श्वेताम्बर पंचायती मन्दिर, 139, कॉटन स्ट्रीट, कोलकाता–700007*, **पृष्ठ** *56*,

मूल्य 15 रुपये, *सन्* 2001

जैन धर्म का प्रमुख सिद्धान्त है- पुरुषार्थवाद। आत्मा अपने पुरुषार्थ द्वारा सांसारिक बंधनों को तोड़कर मुक्ति प्राप्त करने में समर्थ है। इसी तथ्य को केन्द्र में रखकर लेखिका ने इस पुस्तक में भगवान महावीर के जीवन, उनकी साधना, उपदेश आदि से पाठक को संक्षेप में अवगत कराया है।

संस्कृति का आदि स्रोत: जैन धर्म–*श्रीमती लता बोथरा,* ***प्रकाशक***–*श्री जैन भवन, पी–25, कलाकार स्ट्रीट, कोलकाता–700007,* ***पृष्ठ*** *64,* ***मूल्य*** *25 रुपये,* ***सन्*** *2001*

लेखिका ने इस पुस्तक में जैन धर्म की प्राचीनता सिद्ध करते हुए इसे संस्कृति का आदि स्रोत प्रतिपादित किया है। लेखिका का मन्तव्य है कि बद्रीनाथ, केदारनाथ, अमरनाथ, तिरुपति, जगन्नाथ मंदिर आदि जितने भी बड़े–बड़े तीर्थ हैं, वे सब अर्हत् संस्कृति के प्रतीक हैं। कैलास पर्वत पर तीर्थंकर ऋषभदेव का निर्वाण हुआ था। लेखिका के अनुसार महाशिवरात्रि का पर्व ऋषभदेव के निर्वाण कल्याणक की पूजा के प्रतीक रूप में मनाया जाता है। पुस्तक में डॉ. हर्मन जैकोबी, टोलमी आदि के कथनों का भी उपयोग किया गया है। इस दिशा में सत्य के अन्वेषण के लिए प्रवृत्त होने की आवश्यकता है। लेखिका ने जो भी लिखा है, उसके प्रति उसका अपना विश्वास है।

नमस्कार मंत्र पर श्रद्धा का फल

श्री नारायण लाल मेनारिया

आज से करीब चार वर्ष पूर्व विजयपुरा गांव में गातोड़ा भेरु देवस्थान पर शनिवार को सायंकाल पचास–साठ लोग एकत्रित थे। तीस–पैंतीस छोटे बच्चे प्रसाद के लिए लालायित थे। भेरुजी के धूप के लिए धूपिया तैयार हो रहे थे। इतने में कहीं से मधुमक्खियाँ उड़कर सभी को काटने लग गई, जिससे अफरातफरी मच गई। कुछ लोग भागने में सफल हो गये। लेकिन छोटे बच्चे भागने में असमर्थ होने के कारण रोने व चिल्लाने लगे। इतने में मुझे श्रीमती ओमशान्ति बम्ब द्वारा बताई गई बात का प्रयोग करना ध्यान में आया। मैंने तत्काल पूरी श्रद्धा से नवकार मंत्र का उच्चारण मुँह से करते हुए सभी छोटे बच्चों को बहुत दूर तक ले जाकर उनके घर की तरफ रवाना किया। वहाँ पर उपस्थित कई लोगों को मधुमक्खियों ने काटा, लेकिन मुझे एक भी डंक नहीं लगा। बालकों पर मण्डरा रही सभी मधुमक्खियों को एक–एक कर मैंने अपने हाथों से हटाया और बालकों को मुक्त किया।

इस प्रयोग के बाद इसी मंत्र का मन में उच्चारण कर कभी किसी का सिरदर्द तो किसी का दांत दर्द दूर किया। अब तो कभी भी इस महामंत्र नवकार को भूल नहीं सकता।

-चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी, श्री जवाहर जैन शिक्षण संस्था,
उ.मा. विद्यालय, हिरण मगरी सेक्टर 11, उदयपुर

समाचार-संकलन

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के पदार्पण से मुम्बई महानगर के उपनगरों में अपूर्व उत्साह

आगमज्ञ, प्रवचन प्रभाकर, व्यसनमुक्ति के प्रबल प्रेरक, परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा., महान् अध्यवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. आदि ठाणा 8 भायन्दर, मीरा रोड, देइसर, बोरीवली, कांदिवली, मलाड़ आदि उपनगरों में धर्मोद्योत धर्मप्रभावना करते 1 जून को गोरेगांव (वेस्ट) पधारे। श्रावकों ने यह सोचकर कि बड़े आचार्य पधारे हैं धर्मस्थान के पोचा लगा दिया। कठोर क्रिया-पालक आचार्यप्रवर ने मंत्री जी से पूछा- "यह क्या?" आचार्यप्रवर ने धर्मस्थान की मर्यादा की बात समझाई तो गोरेगांव संघ मंत्री ने अपनी भूल स्वीकार कर आगे से उपयोग रखने का विश्वास व्यक्त किया। विले पारले संघ प्रमुख ने अपने क्षेत्र की भावपूर्ण विनती रखी। मध्याह्न में 2 से 4 बजे तक आयोजित संस्कार शिविर में करीब 100 बच्चों ने भाग लिया। पत्रकार श्री प्रशांत जवेरी और जयंत भाई एम.शाह ने संयम-साधना के संदर्भ में अनेक जिज्ञासाएं रखी, जिनका आचार्यप्रवर ने सम्यक् समाधान दिया। अजरामर परम्परा की महासती श्री सूरजकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 7 ने प्रवचन-श्रवण का लाभ तो लिया ही, गौरवशाली रत्नवंश परम्परा की जानकारी भी प्राप्त की।

आचार्यप्रवर 4 जून को अंधेरी वेस्ट स्थित लोहखण्ड वाला स्थानक पधारे जहां भी प्रवचन की अच्छी प्रभावना रही। दिनांक 7 जून को जूहू गली स्थित धर्मस्थान में प्रवचन सभा में दरियापुरी परम्परा के महासती श्री प्रतिभा जी आदि ठाणा 3 का पदार्पण हुआ। अंधेरी श्री संघ ने आगामी चातुर्मास की विनती रखी। अंधेरी वेस्ट स्थानक में माटुंगा श्री संघ ने क्षेत्र फरसने की विनती रखी। आचार्यप्रवर ने बालक-बालिकाओं में संस्कार निर्माण के लिए धार्मिक पाठशाला प्रारम्भ करने की प्रेरणा तो की ही, स्थानीय तीन-चार महानुभावों को इस दिशा में सक्रिय रहने की भोलावण दी।

9 जून को आचार्यप्रवर विलेपार्ले स्टेशन वेस्ट पधारे। भक्तों की अच्छी उपस्थिति में संस्कार-निर्माण के लिए धार्मिक पाठशाला प्रारम्भ करने की प्रेरणा से मध्याह्न 12 से 2 बजे तक शिविर का आयोजन कर स्थानीय संघ ने सत्संग सेवा और संत-समागम का लाभ लिया। प्रवचन सभा में लीमड़ी परम्परा की महासती श्री भारती जी आदि ठाणा 6 का पदार्पण हुआ। दिनांक 11 जून को आचार्यप्रवर का शांताक्रूज पदार्पण हुआ जहां भी श्रावक-श्राविकाओं की अच्छी उपस्थिति रही। जून 12 को वर्मानगर पदार्पण हुआ। प्रवचन सभा में अच्छी उपस्थिति रही। घाटकोपर संघ के अध्यक्ष श्री विनोदभाई मेहता ने घाटकोपर पधारने एवं वहा कुछ दिन विराजने की विनती की। स्थानीय सुश्रावक श्री सुराना जी ने आचार्यप्रवर के

स्वागत में ज्यों ही दो शब्द व्यक्त करने की भावना से अपने भाषण की शुरूआत की त्यों ही आचार्यप्रवर ने फरमाया कि संतों का स्वागत त्याग-तप से होना चाहिए, सुराना साहब ने तुरन्त जीवन पर्यन्त हरी के त्याग कर एक अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया। शीलव्रत के खंद भी हुए।

आचार्यप्रवर हर क्षेत्र को लाभ देने की भावना से विचरण-विहार का क्रम बनाए रखने के पक्षधर रहे हैं। जनभावना में आने के बजाय स्थंडिल एवं परठने के स्थान की गवेषणा करते हुए एवं धर्मस्थान में पानी-बिजली के दोष यदि दिखाई दें तो विहार क्रम में परिवर्तन करके भी आगे बढ़ने में संकोच नहीं करते। भक्तों की विनतियों पर मौसम की अनुकूलता के आगार रखकर भी एक-एक दिन की स्वीकृति करके विहार को गतिमान रखने में श्रावकों को कुछ असुविधा तो रहती है, पर आचार्यप्रवर अपनी मर्यादा को अक्षुण्ण रखने को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हैं। घाटकोपर प्रवचन सभा में विक्रोली चेम्बर आदि संघों ने अपने-अपने क्षेत्र की विनती रखी। तेरापंथी सभा के अध्यक्ष श्री ख्यालीलाल जी छाजेड़ ने ज्ञान-क्रिया के संगम आचार्यप्रवर के प्रति अपनी भावना व्यक्त करते हुए कहा कि आपश्री की कठोर साधना वस्तुतः अनुकरणीय है। प्रवचन सभा में श्रमण संघीय महासती श्री धर्मशीला जी म.सा. की पुण्यशीला जी म.सा. आदि ठाणा एवं अजरामर परम्परा की महासती श्री कल्पना जी म.सा. आदि ठाणा ने प्रवचन श्रवण का लाभ लिया। घाटकोपर में ही 14 जून को मुलुण्ड संघ मंत्री दिलीप भाई शाह ने अपनी भावपूर्ण विनती रखते हुए कहा कि आपश्री के पदार्पण की हम ठाणे से बराबर उत्सुकता रखे हुए हैं।

दिनांक 15 जून को आचार्यप्रवर विक्रोली तपागच्छ उपाश्रय में पधारे। भाण्डुप वेस्ट के मंत्री श्री ओंकारलाल जी बम्बोरी ने अपने क्षेत्र की विनती रखी तो बान्द्रा के श्री विजयराजजी सांड ने अपनी विनती रखी। पवई के श्री नानालाल जी छाजेड़ ने अपनी विनती रखी।

आचार्यप्रवर का मानस एक दिन विक्रोली विराजने का था, परन्तु वर्षा की निरन्तरता से विहार नहीं हो सका। दिनांक 18 जून को थोड़ा खुलने पर विक्रोली स्थानक पधारे। विक्रोली में वर्षा के कारण चार दिन का सुयोग पाकर विक्रोली संघ के कई श्रावकों ने भक्ति भावना से गोचरी-पानी एवं स्थंडिल पधारते समय सेवा का लाभ लिया। स्वधर्मी आगत बन्धुओं की सेवा में भी विक्रोली के श्रावकों ने उत्साह पूर्वक सेवाएं दीं।

दिनांक 19 जून को विक्रोली से विहार कर आचार्यप्रवर भाण्डुप पधारे। एक दिन वहां विराजकर आचार्यप्रवर ने 20 जून को मुलुंड में जय-जयकार के जयघोषों के साथ पदार्पण किया। दो दिन मुलुण्ड विराज कर 22 जून को पवई पधारे। दिनांक 25 जून को कुर्ला फरसते सायन पधारना हुआ। साइन से विहार

कर आचार्यप्रवर मांटुगा पधारे हैं।

जब आचार्यप्रवर मुम्बई के प्रवेश द्वार भायन्दर पधारे तब मुम्बई महानगर के विभिन्न क्षेत्रों के श्रावक-श्राविकाओं में हर्ष-उल्लास छा गया। एक छोर से दूसरे छोर आने-जाने में समय लगता है पर आबाल-वृद्ध सभी अपनी अनुकूलतानुसार सेवा में उपस्थित हो संत-समागम के सुयोग का अधिक-से-अधिक लाभ उठाना चाहते हैं। आचार्यप्रवर ने बालकेश्वर चातुर्मास स्वीकार किया। इसके पूर्व श्रावकों से स्थंडिल के स्थान एवं परठने की व्यवस्था संबंधी पूरी जानकारी करके चातुर्मास की स्वीकृति फरमाई। अतः संघ के सुज्ञ श्रावकों ने उपनगरों में विचरण-विहार में धर्म स्थान की श्रमणोचित अनुकूलता की गवेषणा तो की ही, स्थंडिलादि की व्यवस्था का भी पूरा-पूरा ध्यान रखा। संत-सेवी श्रावकों की भावनानुसार सेवा में समय का भोग देने वाले श्रावकों को दायित्व देकर संयमी साधक आचार्यप्रवर और संतरत्नों को कम से कम दोष लगे इसका ध्यान रखा और आगे भी व्यवस्था में सहयोग बना रहे, उस पर अभी से चिन्तन है।

मुम्बई महानगर के विभिन्न क्षेत्रों को लाभ मिले इस भावना से संघ के सुज्ञ श्रावकों ने संभावित कार्यक्रम सुनिश्चित किया। आचार्यप्रवर श्रावकों की श्रद्धा भक्ति और सेवा का मान रखते हैं, परन्तु विचरण-विहार एवं प्रवास अपनी अनुकूलता से ही करते हैं। संभावित कार्यक्रम और विहार में अन्तर से यह स्पष्ट है कि आचार्यप्रवर अपनी मर्यादा में रहते हुए स्व-विवेक से निर्णय करते हैं। प्रस्तावित संभावित कार्यक्रम में विक्रोली से भांडुप-मुलुण्ड, पवई आदि क्षेत्रों का कहीं कोई उल्लेख तक नहीं, परन्तु आचार्यप्रवर ने उन क्षेत्रों की विनतियों को ध्यान में रखकर उधर विहार किया।

विहार दिशा ही नहीं, कहां कितना विराजना है इस पर आचार्यप्रवर का चिन्तन ही काम कर रहा है। आचार्यप्रवर ने जब भी किसी स्थान की स्वीकृति फरमाई, सदा मौसम की अनुकूलता का आगार रखते हुए अपनी भावना दर्शायी है। एक-एक दिन की स्वीकृति के पीछे स्वयं को खुला रखने का आचार्यप्रवर का नजरिया अब श्रावकों को अटपटा नहीं लगता।

गोचरी-पानी, स्थंडिल एवं परठने की व्यवस्था की पहले से जानकारी करके आचार्यप्रवर अपने विचरण-विहार को मूर्तरूप देते हैं। प्रवचन प्रभाकर आचार्यप्रवर के प्रेरक प्रवचनामृत का पान कर मुम्बई महानगर के श्रावक-श्राविकाएं प्रभावित हैं और प्रवचन के समय सभी काम छोड़कर पहुंचने का लक्ष्य रखते हैं।

गुजरात, मेवाड़, मारवाड़ एवं देश के अन्य भागों से आकर बसे श्रावक ज्ञान- क्रिया सम्पन्न आचार्यप्रवर की संयम-साधना, निस्पृहता और अप्रमत्तता से आकर्षित हो रहे हैं। प्रचार-प्रसार से कोसों दूर आचार्यप्रवर का आचार स्वयं प्रचार का काम करता है।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर चातुर्मासिक पक्खी से कुछ दिन पूर्व बालकेश्वर पधारें, ऐसी संभावना है, पर मुम्बई वासी जहां गुरुवर्य विराज रहे हैं वहां पहुंच कर दर्शन-वन्दन, प्रवचन-श्रवण का लाभ तो लेते ही हैं, व्रत-नियम की श्रद्धा समर्पित कर आध्यात्मिक उत्क्रांति में सतत सक्रिय हैं। आचार्यप्रवर आदि संत-मुनिराजों की ज्ञान की गरिमा, दर्शन की दीप्ति और चारित्र की चमक से मुम्बई वासी प्रभावित हैं और प्राप्त सुयोग का अधिकतम उपयोग करने के लिए अभी से तत्पर हैं।

● आत्मार्थी, प्रबल पुरुषार्थी, शांत-दांत-गंभीर, परमश्रद्धेय उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा., सेवाभावी श्रद्धेय श्री मंगलमुनि जी म.सा., श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनि जी म.सा. ठाणा 3 के विचरण विहार से लासलगांव-मनमाड़-चालीसगांव आदि क्षेत्रों के श्रावक-श्राविकाओं ने सत्संग-सेवा और संत-समागम का भावनापूर्वक लाभ उठाया। उपाध्यायप्रवर स्वाध्याय, ध्यान, मौन के लिए पर्याप्त समय निकालते हैं और उनके साधनामय जीवन का श्रावक-श्राविकाओं पर सजह प्रभाव होता है। आबाल-वृद्ध जो भी उपाध्याय प्रवर की सन्निधि में पहुंचते हैं सामायिक-स्वाध्याय और त्याग-तप के नियम अंगीकार करने हेतु तत्पर हो जाते हैं। भक्तों को सेवा में अपूर्व शांति प्राप्त होती है और यही कारण है कि सभी ग्राम-नगर उनका समागम प्राप्त करने को उत्सुक रहते हैं। उपाध्याय प्रवर भी जनभावना का समादर करते हुए सभी क्षेत्रों को लाभान्वित करने का प्रयास करते हैं। उपाध्यायप्रवर धुलिया नगर पावन करते हुए ग्रामानुग्राम ज्ञान गंगा प्रवाहित करते हुए चातुर्मासार्थ होलनांथा की ओर बढ़ रहे हैं।

● मधुर व्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनि जी म.सा., तपस्वी श्री प्रकाशमुनि जी म.सा. ठाणा 2 पाली शहर एवं तदनन्तर हाउसिंग बोर्ड क्षेत्र को लाभान्वित कर सूर्यनगरी-जोधपुर पधारे। साध्वीप्रमुखा प्रवर्तिनी महासती श्री लाडकंवर जी म. सा, सरलहृदया महासती श्री सायरकंवर जी म.सा., शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. आदि महासतियां जी म.सा. जो सकारण जोधपुर विराज रहे हैं, उनकी एवं जोधपुर संघ के श्रावक-श्राविकाओं की भावना रही कि मुनि-मण्डल का हमें कुछ दिन ही सही, सान्निध्य प्राप्त हो। अतः श्री संघ ने जोधपुर पधारने की भावपूर्ण विनती रखी। मुनि मण्डल जोधपुर के विभिन्न क्षेत्रों में धर्मप्रभावना करने में सक्रिय है। घोड़ों का चौक में क्रियोद्धारक आचार्य श्री रत्नचन्द्र जी म.सा. का पुण्य दिवस त्याग-तप के साथ मनाया गया। मुनि श्री की प्रेरणा से सैकड़ों भाई-बहिनों ने पाँच-पाँच सामायिकें करके क्रियोद्धारक आचार्य भगवन्त के पुण्य दिवस पर श्रद्धा समर्पित की। मुनि मण्डल जोधपुर शहर एवं उपनगरों को पावन कर यथासमय चातुर्मासार्थ पालासनी पधारे, ऐसी संभावना है।

धर्मजागरण के साथ महासती मण्डलों का विहार अपने-अपने चातुर्मास-स्थलों की ओर चल रहा है।

चातुर्मास सूची

विक्रम संवत् २०५९–ईस्वी सन् २००२

परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. ने साधु मर्यादा में रखने योग्य आगारों के साथ निम्न चातुर्मास घोषित किये है :-

1. बालकेश्वर-मुम्बई (महा.)

1. परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा.
2. महान् अध्यवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा.
3. सेवाभावी श्रद्धेय श्री नन्दीषेण जी म.सा.
4. तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनि जी म.सा.
5. श्रद्धेय श्री कपिलमुनि जी म.सा.
6. श्रद्धेय श्री योगेशमुनि जी म.सा.
7. श्रद्धेय श्री मनीषमुनि जी म.सा.
8. नवदीक्षित श्रद्धेय श्री बलभद्रमुनि जी म.सा. ठाणा 8

चातुर्मास स्थल- श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, श्रीमती जतनबाई हरकचन्द कोठारी जैन स्थानक, 6–जमनादास मार्ग, तीन बत्ती, मलाबर हिल, बालकेश्वर, मुम्बई–400006, फोन नं.– (022) 3691642

सम्पर्क सूत्र- 1. श्री मोफतराज जी मुणोत, ''मुणोत विला'' वेस्ट कम्पाउण्ड लेन, 63–के. भूलाभाई देसाई रोड, मुम्बई–400026, फोन नं.– का.–2822888/2822679, नि.–3648004/3625205

2. श्री कैलाशचन्द जी हीरावत, 2106–पंचरत्ना बिल्डिंग, ऑपेरा हाऊस, मुम्बई–400004 ,फोन का.–3686740–741–742 ,नि.–3636249/ 3670645,

3. श्री नवरतन मल जी मुणोत, 801–वीणा अपार्टमेन्ट, 198–बालकेश्वर रोड, तीन बत्ती, मुम्बई– 400006, फोन नं.–3684939/2523089/4640189

4. श्री पारसचन्द जी हीरावत/ श्री वीरेन्द्र जी जैन, 1301–पंचरत्ना बिल्डिंग, ऑपेरा हाऊस, मुम्बई–400004 ,फोन नं.–का.–3630320/ 3630970 ,नि. –3676581, वीरेन्द्र जी जैन–मो.–98206–31366/नि.–4918678

आवागमन के साधन- मुम्बई महानगर पहुंचने के लिए देशभर से रेल, हवाई जहाज और सड़क मार्ग के साधन उपलब्ध हैं। पश्चिमी रेलवे से आने वाले मुम्बई सेन्ट्रल या बान्द्रा टर्मिनल उतर कर टेक्सी से या बेस्ट की बस से तीन बत्ती बस स्टॉप पर उतर कर स्थानक पहुंच सकते हैं। मध्य रेलवे से आने वाले दादर या कुर्ला से टेक्सी/बेस्ट की बस से स्थानक पहुंच सकते हैं।

स्थानक की स्टेशनों से संभावित दूरी–मुम्बई सेन्ट्रल से 4 किमी., बान्द्रा टर्मिनल से 12 किमी., दादर से 5 किमी., वी.टी. से 7 किमी., कुर्ला से 12 किमी. है।

बेस्ट की उपलब्ध बसें–63, 67, 101, 103, 104, 105, 108, 122

2. होलनांथा (जिला-धुले) महा.

1. परम श्रद्धेय उपाध्याय पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा.
2. श्रद्धेय श्री मंगलमुनि जी म.सा.
3. श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनि जी म.सा. ठाणा 3

चातुर्मास स्थल- जैन स्थानक, होलनांथा

सम्पर्क सूत्र- श्री रमेशचन्द जी लूणकरण जी सेठिया, पोस्ट-होलनांथा-424854, जिला-धुले (महा.), फोन नं. 02563-80221, 80351

आवागमन के साधन- धुले जिले के अन्तर्गत होलनांथा धुले-शिरपुर मुख्य मार्ग पर स्थित है। धुले-शिरपुर और अमलनेर-चौपड़ा मार्ग पर चलने वाली बसें होलनांथा होकर चलती है। समीपवर्ती रेलवे स्टेशन धुले, अमलनेर, नंदूरबार और जलगांव हैं जो क्रमशः 60, 60, 110 और 95 किलोमीटर दूर है।

3. पालासनी (जिला-जोधपुर) राज.

1. मधुर व्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनि जी म.सा.
2. तपस्वी श्रद्धेय श्री प्रकाशमुनि जी म.सा. ठाणा 2

चातुर्मास स्थल- जैन स्थानक-पालासनी

सम्पर्क सूत्र- श्री जंवरीलाल जी रांका, पोस्ट-पालासनी (जिला-जोधपुर) राज., फोन नं.-208336, जोधपुर सम्पर्क सूत्र फोन नं. 0291-547117/543452

आवागमन के साधन- जोधपुर जिलान्तर्गत पालासनी जोधपुर से 40 किमी., पीपाड़ सिटी से 40 किमी., पाली से 55 किमी. दूरी पर स्थित है। जोधपुर से पालासनी के लिए प्रातः 7 बजे से अपराह्न पश्चात् 5 बजे तक नियमित अन्तराल से स्टेडियम के पास प्राइवेट बसें उपलब्ध हैं। जोधपुर से निजी वाहनों से जाने वालों के लिए जोधपुर-पीपाड़ मुख्य सड़क मार्ग पर डांगियावास के आगे बिसलपुर टांके से बिसलपुर होकर पालासनी जाने की सड़क है।

4. पावटा-जोधपुर (राज.)

1. साध्वी प्रमुखा प्रवर्तिनी महासती श्री लाडकंवर जी म.सा.
2. व्याख्यात्री महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा.
3. महासती श्री सुश्रीप्रभा जी म.सा.
4. महासती श्री शारदा जी म.सा.
5. महासती श्री लीलाकंवरजी म.सा. ठाणा 5

चातुर्मास स्थल-सी-55, वर्द्धमान भवन, धर्मनारायण जी का हत्था, पावटा, जोधपुर-342006

सम्पर्क सूत्र- 1. श्री नरपतराज जी चौपड़ा, सी-85, धर्मनारायण जी का हत्था, पावटा, जोधपुर-342006, फोन नं.-(0291) 545265/547462

2. श्री सुमेरनाथ जी मोदी, प्रथम "बी" रोड, गोल बिल्डिंग एरिया, सरदारपुरा, जोधपुर-342003, फोन नं.(0291) का.-636763/641445 नि. -632681

आवागमन के साधन- रेल, सड़क एवं हवाई मार्ग से देश भर से जुड़ा जोधपुर प्रदेश का

दूसरा बड़ा शहर है। जोधपुर से जयपुर, दिल्ली, हरिद्वार, जम्मूतवी, वाराणसी, कोलकाता, मुम्बई, अहमदाबाद, चैन्नई, बैंगलोर आदि क्षेत्रों से रेल सेवाएं उपलब्ध है। राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम की बसें सभी जिला मुख्यालयों के साथ समीपवर्ती राज्यों से नियमित अन्तराल पर उपलब्ध है। दिल्ली-मुम्बई विमान सेवाएं जोधपुर होकर चलती है।

5. घोड़ों का चौक-जोधपुर (राज.)

1. सरल हृदया महासती श्री सायरकंवर जी म.सा.
2. महासती श्री विमलावती जी म.सा.
3. महासती श्री शांतिप्रभा जी म.सा. ठाणा 3

चातुर्मास स्थल- सामायिक-स्वाध्याय भवन, घोड़ों का चौक, जोधपुर

सम्पर्क सूत्र- क्रम संख्या-4 के अनुसार

आवागमन के साधन-क्रम संख्या-4 के अनुसार

6. नेहरु पार्क-जोधपुर (राज.)

1. शासन प्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा.
2. महासती श्री चन्द्रकला जी म.सा.
3. महासती श्री दर्शनलता जी म.सा.
4. महासती श्री विनीतप्रभा जी म.सा. ठाणा 4

चातुर्मास स्थल-सामायिक-स्वाध्याय भवन, 1-बख्तसागर, नेहरु पार्क, जोधपुर

सम्पर्क सूत्र-क्रम संख्या-4 के अनुसार

आवागमन के साधन- क्रम संख्या-4 के अनुसार

7. धनारीकलां (जिला-जोधपुर) राज.

1. सेवाभावी महासती श्री सन्तोषकंवर जी म.सा.
2. महासती श्री मनोहरकंवर जी म.सा.
3. महासती श्री कौशल्या जी म.सा.
4. महासती श्री पुनीतप्रभा जी म.सा. ठाणा 4

चातुर्मास स्थल- जैन स्थानक, धनारीकलां

सम्पर्क सूत्र- श्री चम्पालाल जी वैद, पोस्ट- धनारीकलां (जिला-जोधपुर) राज., फोन नं.- (02927) 64325

आवागमन के साधन- जोधपुर जिलान्तर्गत धनारीकलां जोधपुर-नागौर मुख्य सड़क मार्ग पर स्थित सोयला ग्राम से 13 किमी. दूर स्थित है। धनारीकलां के लिए जोधपुर, भोपालगढ़, सोयला, खेड़ापा, आदि ग्राम-नगरों से प्राइवेट बसें उपलब्ध है।

8. भोपालगढ़ (जिला-जोधपुर) राज.

1. शान्त स्वभावी तपस्विनी महासती श्री शांतिकंवर जी म. सा.
2. महासती श्री रुचिता जी म.सा.
3. महासती श्री विवेकप्रभा जी म.सा.
4. महासती श्री जागृतिप्रभा जी म.सा.

5. महासती श्री वृद्धिप्रभा जी म.सा. ठाणा 5

चातुर्मास स्थल– पुराना जैन स्थानक, भोपालगढ़–342603 (जिला–जोधपुर)

सम्पर्क सूत्र–1. श्री सुगनचन्द जी कांकरिया,पोस्ट–भोपालगढ़–342603, जिला–जोधपुर, फोन नं. 02920–23117/22293

2. श्री पदमचन्द जी बाफना, पोस्ट–भोपालगढ़–342603 (जिला–जोधपुर), फोन नं.–(02920) का.–22277/ नि.–22213

आवागमन के साधन– भोपालगढ़ के लिये जोधपुर, बिलाड़ा, पीपाड़ सिटी, मेड़ता सिटी, गोटन, कुचेरा, नागौर, आसोप आदि ग्राम–नगरों से नियमित अन्तराल पर बस सुविधा उपलब्ध है। जोधपुर से 75 किमी., पीपाड़ से 35 किमी. मेड़ता सिटी से 55 किमी दूरी है।

9. तोंडापुर (जिला–जलगांव) महा.

1. व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवर जी म.सा.
2. व्याख्यात्री महासती श्री सुमनलता जी म.सा.
3. श्री पुष्पलता जी म.सा.
4. श्री स्नेहलता जी म.सा.
5. श्री मंजूलता जी म.सा.
6. श्री उदित प्रभा जी म.सा.
7. श्री चैतन्यप्रभा जी म.सा. ठाणा 7

चातुर्मास स्थल– जैन स्थानक, तोंडापुर–424211,

सम्पर्क सूत्र– श्री सुगनचन्द जी खिंवसरा, श्री अरिहन्त वस्त्रालय, पोस्ट–तोंडापुर–424211, ता.–जामनेर, जिला–जलगांव (महा.), फोन नं.–(02580)का.–66238

आवागमन के साधन– जलगांव जिलान्तर्गत एवं जामनेर तालुका में तोंडापुर के लिए जलगांव–जामनेर आदि क्षेत्रों से बसें उपलब्ध हैं। समीपवर्ती रेलवे स्टेशन जलगांव और चालीसगांव है जो क्रमशः 25 व 45 किमी. दूर है।

10. मणीनगर–अहमदाबाद (गुज.)

1. तत्त्वचिन्तिका महासती श्री रतनकंवर जी म.सा.
2. महासती श्री शशिकला जी म.सा.
3. महासती श्री समता जी म.सा.
4. महासती श्री उषा जी म.सा.
5. महासती श्री निरंजना जी म.सा. ठाणा 5

चातुर्मास स्थल–श्री राजस्थान एस. एस. जैन संघ, महावीर भवन, 9 ए/10–बी, श्री हरीनगर कॉपरेटिव हाउसिंग सोसायटी, जूना ढोर बाजार, अहमदाबाद–380028

सम्पर्क सूत्र–1. श्री विजयमल जी मेहता, 1–आर्यव्रत सोसायटी, खोखर, अहमदाबाद–380008, फोन नं.–(079) नि.–5854583

2. श्री प्रकाशचन्द जी झाम्बर, 126–श्री महावीर क्लॉथ मार्केट, डी.वी. रोड, अहमदाबाद–380022, फोन नं.– का.–5464200/नि.–5324600

आवागमन के साधन- रेल सड़क एवं हवाई मार्ग से देशभर से जुड़ा अहमदाबाद बड़ा शहर है। जोधपुर, जयपुर, दिल्ली, जम्मूतवी, वाराणसी, कोलकाता, मुम्बई, चैन्नई, बैंगलोर आदि क्षेत्रों से रेल सेवाएं उपलब्ध हैं। सभी जिला मुख्यालयों के साथ समीपवर्ती राज्यों से नियमित अन्तराल पर बसें उपलब्ध है।

11. ताहराबाद (जिला-नासिक) महा.

1. विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवर जी म.सा.
2. महासती श्री इन्दिराप्रभा जी म.सा.
3. महासती श्री रक्षिता जी म.सा. ठाणा 3

चातुर्मास स्थल- जैन स्थानक, पोस्ट- ताहराबाद (जिला-नासिक)

सम्पर्क सूत्र- श्री जंवरीलाल जी कांकरिया, पोस्ट-ताहराबाद-423302 (जिला-नासिक) महा., फोन नं. 02555-42248

आवागमन के साधन- नासिक एवं मनमाड़ से ताहाराबाद के लिए नियमित अन्तराल से बसें उपलब्ध है। मालेगांव और सूरत से भी ताहाराबाद के लिए बसें मिलती है। समीपवर्ती रेलवे स्टेशन मनमाड़ है।

12. मेड़ता सिटी (जिला-नागौर) राज.

1. व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा.
2. महासती श्री समर्पिता जी म.सा.
3. महासती श्री परागप्रभा जी म.सा.
4. महासती श्री ऋद्धिप्रभा जी म.सा.
5. महासती श्री सिद्धिप्रभा जी म.सा. ठाणा 5

चातुर्मास स्थल- वीर भवन (अस्पताल के पास)

सम्पर्क सूत्र- श्री हस्तीमल जी डोसी, डोसी ब्रादर्स, डी-3, कृषि मण्डी, पोस्ट- मेड़ता सिटी-341510 (जिला-नागौर), फोन नं.-(01590) 20181/20772 का./नि.- 20144 मण्डी-20014

आवागमन के साधन- नागौर जिलान्तर्गत मेड़ता सिटी के लिए समीपवर्ती रेलवे स्टेशन मेड़ता रोड़ जंक्शन है, जहां से जोधपुर-दिल्ली-कोलकाता-मुम्बई-जयपुर- की रेलगाड़ियों का ठहराव है। मेड़ता रोड़ से मेड़ता सिटी के लिए रेल बस प्रायः हर गाड़ी को मिलान करवाती है। अजमेर-जोधपुर मुख्य मार्ग पर स्थित मेड़ता सिटी के लिए राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम एवं प्राइवेट बसें नियमित अन्तराल पर उपलब्ध हैं। बस व रेलवे स्टेशन से स्थानक करीब एक किमी. दूर है और स्थानक पहुंचने के लिए टेक्सियाँ उपलब्ध है।

13.मुकटी (जिला-धुले) महा.

1. व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभा जी म.सा.
2. महासती श्री विनयप्रभा जी म.सा.
3. महासती श्री सुयशप्रभा जी म.सा. ठाणा 3

चातुर्मास स्थल- जैन स्थानक, पोस्ट-मुकुटी (जिला-धुले) महा.

सम्पर्क सूत्रः– 1. श्री प्रदीप जी खींवसरा, पोस्ट–मुकुटी (जिला–धुले) महा., फोन नं. –(02562) 58265/58241

आवागमन के साधन– धुले जिलान्तर्गत मुकुटी राष्ट्रीय राजमार्ग सूरत–नागपुर सड़क पर स्थित है और नियमित अन्तराल पर बसें उपलब्ध हैं। धुलिया से 20 किमी., जलगांव से 70 किमी. है।

14. पाली–मारवाड़

1. व्यख्यात्री महासती श्री इन्दुबाला जी म.सा.
2. महासती श्री सुमतिप्रभा जी म.सा.
3. महासती श्री मुदितप्रभा जी म.सा. ठाणा 3

चातुर्मास स्थलः– सामायिक–स्वाध्याय भवन, सुराणा मार्केट, पाली

सम्पर्क सूत्र– श्री ताराचन्द जी सिंघवी, 7–गांधी कटला, पाली–306401, फोन नं. –(02932) का.–21271/नि.–22005, सुराणा मार्केट–50021

आवागमन के साधन–पाली जिला मुख्यालय पहुंचने के लिए रेल, बस सेवाएं उपलब्ध है। जोधपुर–अहमदाबाद मार्ग की सभी रेलगाड़ियों का पाली ठहराव है। पाली प्रदेश के सभी जिला मुख्यालयों से सड़क से जुड़ा शहर है।

15. गंगापुर सिटी (जिला–सवाईमाधोपुर) राज.

1. व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा.
2. महासती श्री चारित्रलता जी म.सा.
3. महासती श्री भाग्यप्रभा जी म.सा. ठाणा 3

चातुर्मास स्थल :– जैन स्थानक, गंगापुर सिटी

सम्पर्क सूत्र–1. श्री हरीशचन्द जी जैन, पो. गंगापुर सिटी–322021, जिला–सवाईमाधोपुर (राज.), फोन नं. 34001/32275

2. श्री रेवतीप्रसाद जी जैन, फव्वारा चौक, पो. गंगापुर सिटी–322021, जिला– सवाईमाधोपुर (राज.) फोन नं. 07463–30187/32982

आवागमन के साधन–सवाईमाधोपुर जिलान्तर्गत गंगापुर सिटी पहुंचने के लिए रेल एवं सड़क मार्ग के साधन उपलब्ध है। दिल्ली–मुम्बई रेल मार्ग पर स्थित गंगापुर सिटी में मेल/एक्सप्रेस सभी गाड़ियों का ठहराव हैं। जयपुर, सवाईमाधोपुर, दौसा आदि जिला मुख्यालयों से रा.रा.प.प. निगम की बसों के साथ प्राइवेट बसें भी मिलती है।

16. जरखोदा (जिला–बून्दी) राज.

1. व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवती जी म.सा.
2. महासती श्री श्रुतिप्रभा जी म.सा.
3. महासती श्री मतिप्रभा जी म.सा. ठाणा 3

चातुर्मास स्थल– जैन स्थानक, पो. जरखोदा, जिला– बून्दी (राज.)

सम्पर्क सूत्र– 1. श्री उम्मेदीलाल जी जैन, पो. जरखोदा–323802, वाया देई, जिला– बून्दी (राज.), फोन नं. (07437)59625

आवागमन के साधन– बून्दी जिलान्तर्गत जरखोदा कोटा–सवाईमाधोपुर मार्ग पर स्थित

है। कोटा, बून्दी, इन्द्रगढ़, नैनवा, देई आदि क्षेत्रों से बस सुविधाएँ नियमित अन्तराल पर उपलब्ध है। समीपवर्ती रेलवे स्टेशन सवाईमाधोपुर है जो जरखोदा से 30 कि.मी. दूर है।

17. लासूर स्टेशन, जिला- औरंगाबाद (महा.)

1. व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभा जी म.सा.
2. महासती श्री विमलेश प्रभा जी म.सा.
3. महासती श्री यशप्रभा जी म.सा.
4. महासती श्री संयमप्रभा जी म.सा. ठाणा 4

चातुर्मास स्थल- जैन स्थानक, लासूर स्टेशन,

सम्पर्क सूत्र-श्री हरकचन्द जी मूथा, मैसर्स फूलचन्द हरकचन्द मूथा, पो. लासूर स्टेशन-423702, जिला- औरंगाबाद(महा.), फोन नं. (02433)41359/41559

आवागमन के साधन-औरंगाबाद से मनमाड़ चलने वाली ट्रेनों का लासूर स्टेशन पर ठहराव है। लासूर स्टेशन हैदराबाद-औरंगाबाद मुख्य रेलमार्ग पर स्थित है। औरंगाबाद-वैजापुर, जलगांव, पूना मार्ग की बसें लासूर होकर जाती हैं।

-अरुण मेहता, महामंत्री, अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

अन्य प्रमुख चातुर्मास

आचार्य श्री रामलाल जी म.सा.	- सरदारशहर (राज.)
तपस्वीराज श्री चम्पालाल जी म.सा.	- महामन्दिर, जोधपुर
आचार्य श्री डॉ. शिवमुनि जी म.सा.	- लुधियाना (पंजाब)
आचार्यकल्प श्री शुभचन्द्र जी म.सा.	- लक्ष्मीनगर, जोधपुर
आचार्य श्री सुदर्शनलाल जी म.सा.	- जयपुर
आचार्य श्री विजयराज जी म.सा.	- ब्यावर
आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी	- अहमदाबाद
प्रवर्तक श्री कुन्दनऋषि जी म.सा.	- जलगांव

जोधपुर में धार्मिक पाठशालाओं का सफल आयोजन

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष बालक-बालिकाओं में नैतिक एवं धार्मिक संस्कार पुष्ट हों, एतदर्थ श्री जैन रत्न युवक परिषद्, जोधपुर द्वारा जैन समाज के बालक एवं बालिकाओं को सुसंस्कारित करने के उद्देश्य से पावटा, घोड़ों का चौक, नेहरू पार्क, सिंहपोल, चौपासनी हाउसिंग बोर्ड और लक्ष्मीनगर इन स्थानों पर प्रातः 7.30 से 9.30 बजे तक धार्मिक पाठशालाओं के माध्यम से ज्ञानाभ्यास करवाया गया। मई 17 से जून 16 तक धार्मिक पाठशाला कार्यक्रम के अन्तर्गत 700 बालक-बालिकाएँ लाभान्वित हुए हैं। इन पाठशालाओं में स्कूली शिक्षण के कक्षा 3 से ऊपर के बालक-बालिकाओं ने भाग लिया। इन पाठशालाओं के माध्यम से जैन समाज के बच्चों को सामायिक सूत्र, प्रतिक्रमण सूत्र, 25 बोल, जीवनोपयोगी विषय-विनय, सरलता, समता, देव-गुरु-धर्म, दान, अहिंसा, स्वाध्याय आदि विविध विषयों का प्रशिक्षण प्रदान किया गया।

पाठशालाओं के समापन पर सभी विद्यार्थियों की परीक्षा ली गयी एवं प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले तथा उत्तीर्ण होने वाले शिविरार्थियों को पारितोषिक प्रदान किया गया।

पाठशालाओं के समापन समारोह का कार्यक्रम ओसवाल कम्यूनिटी हॉल, सरदारपुरा में रखा गया। समारोह की अध्यक्षता श्रीमान् सम्पतसिंह जी भाण्डावत, जोधपुर ने की। मुख्य अतिथि जिनवाणी के सम्पादक डॉ. धर्मचन्द जी जैन एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री सम्पतराज जी डोसी, जोधपुर एवं श्री मूलचन्द जी बाफना, जोधपुर उपस्थित थे। धार्मिक पाठशाला में भाग लेने वाले विद्यार्थियों को प्रतिदिन पुरस्कार प्रदान किया गया।

संघाध्यक्ष श्री बाफना सा. का अभिनन्दन

बैंगलोर- गांधीनगर स्थित तुरखिया जैन भवन में अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के अध्यक्ष एवं समाज सेवी श्रावकरत्न श्री रतनलाल जी सा. बाफना, जलगांव का 27 मई 2002 को अभिनन्दन समारोह आयोजित किया गया। बाफना सा. का स्वागत-सम्मान व अभिनन्दन शाल एवं चन्दनहार पहनाकर किया गया। स्वागत भाषण सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के अध्यक्ष श्री चेतनप्रकाश जी डूंगरवाल ने दिया। इसी अवसर पर श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, बैंगलोर के नये अध्यक्ष के रूप में परम गुरुभक्त श्री गणेशमल जी भण्डारी के नाम की घोषणा की गई। श्री जैन रत्न युवक परिषद् के नये अध्यक्ष के रूप में श्री हरीश कुमार जी सांखला के नाम की घोषणा हुई। राष्ट्रीय संघाध्यक्ष श्री बाफना सा. ने अपना महत्त्वपूर्ण वक्तव्य देते हुए कहा-''दूसरे के दुःख को दूर करने में जो आत्मिक आनन्द आता है, वह किसी अन्य कार्य में नहीं।'' उन्होंने मानवता एवं अहिंसा की महती आवश्यकता बतायी तथा जैन एकता एवं असाम्प्रदायिकता पर बल दिया। सम्प्रदाय के संबंध में उन्होंने कहा-''सम्प्रदाय बुरी नहीं है, अपितु सम्प्रदायवाद बुरा है। सम्प्रदाय तो एक व्यवस्था प्रणाली है। हम सम्प्रदायवाद से बचें एवं परिवार, समाज, राष्ट्र तथा समग्र मानव जाति की खूब सेवा करें, यही हमारा प्राथमिक कर्त्तव्य है।'' अन्त में कविता की कड़ी में भावविभोर होते हुए कहा- ''इस बसे बसाये डेरे को, इक रोज उठाना पड़ता है। आखिर में इस धरती से इक रोज सभी को जाना पड़ता है।''

इस कार्यक्रम में बैंगलोर के जैन समाज के गणमान्य एवं वरिष्ठ जन उपस्थित थे। कार्यक्रम का सफल संचालन श्री नवरतनमल जी भंसाली ने किया।

गौतमचन्द ओस्तवाल

आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की आगामी परीक्षा २८ जुलाई २००२ को

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड द्वारा कक्षा 1 से 10 तक की लिखित परीक्षा 28 जुलाई 2002 को दोपहर 12 से 3 बजे तक देश-विदेश के लगभग 200 केन्द्रों पर आयोजित की जाएगी।

परीक्षार्थियों को प्रवेश-पत्र भेजे जा चुके हैं। केन्द्राधीक्षकों को परीक्षार्थियों

के नाम, रोल नम्बर की सूची भेज दी गई है। यदि किन्हीं कारणों से परीक्षार्थियों को प्रवेश-पत्र न मिल सकें तो भी सूची के आधार पर वे अपने निर्धारित केन्द्र पर परीक्षा दे सकते हैं। सभी परीक्षार्थियों से अनुरोध है कि निश्चित समय पर अपने-अपने केन्द्रों पर परीक्षा देने अवश्य पहुंचें, परीक्षा में कोई भी अनुपस्थित न रहे, परीक्षा के दौरान अधीक्षक एवं निरीक्षक के आदेशों का पालन करें।

अधीक्षकों एवं निरीक्षकों से भी अनुरोध है कि वे प्रामाणिक तरीके से परीक्षाएँ समय पर सम्पन्न कराने में अपना महत्त्वपूर्ण सहयोग प्रदान करावें तथा परीक्षा के दिन ही उत्तरपुस्तिकाएँ अच्छी तरह पैकिंग कर बोर्ड के प्रधान कार्यालय जोधपुर को भिजवाने की कृपा करावें। परीक्षा संबंधी अन्य जानकारी के लिये निम्न फोन नम्बर पर सम्पर्क करें-कार्यालय-0291-630490, विमला मेहता, संयोजक-435637, नवरतन डागा, सचिव-98280-32215

दक्षिण भारत में धार्मिक प्रचार-प्रसार यात्रा

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर की चेन्नई शाखा द्वारा दक्षिण भारत के कुम्भकोणम, तंजावुर, मायावरम, सिरकाली, कोलिंगम, चिदम्बरम, कटलुर, पाण्डिचेरी, नलीकुप्पम, पनरुटी, विरुदायलम, उलुंदरपेट, कलाकुरची, त्रिकोइलुर, तिरुणामलै आदि लगभग 15 क्षेत्रों में धार्मिक प्रचार-प्रसार कार्यक्रम आयोजित किया गया।

इस प्रचार-प्रसार यात्रा में सभी स्थानों पर नियमित सामायिक व स्वाध्याय करने की प्रेरणा प्रदान करने के साथ नये स्वाध्यायी तैयार करने एवं पर्युषण के समय स्वाध्यायी आमन्त्रित करने की प्रेरणा की गई।

प्रचार-प्रसार यात्रा में चेन्नई शाखा के संयोजक श्री दुलीचन्द जी बोहरा, सह संयोजक श्री ज्ञानचन्द जी बाघमार, वरिष्ठ सुश्रावक श्री शांतिलाल जी चौधरी, चिन्तादरीपेठ, युवारत्न श्री प्रकाश जी मूथा, आलन्दुर ने अपनी महत्त्वपूर्ण सेवाएँ प्रदान की। *सुशीला बोहरा, संयोजक, रिखबचन्द मेहता, सचिव*

अहिंसा के सिपाही चाहिए

अन्तर्राष्ट्रीय अहिंसा अकादमी को अहिंसा आंदोलन के लिए अहिंसा के सिपाहियों की आवश्यकता है। युद्ध के लिए सेना में भर्ती खुल गई है। वहाँ नौकरी पाने के लिए रिश्वत या सिफारिश की आवश्यकता हो सकती है। लेकिन हमें अहिंसा आंदोलन के लिए जो सिपाही चाहिए, उन्हें न रिश्वत देने की जरूरत है और न सिफारिश लगवाने की। बस हमें चाहिए, उनकी अहिंसा में निष्ठा और अहिंसा अभियान के विभिन्न प्रकल्पों के लिए ''समय दान''। जो भी महानुभाव जीवदया, पर्यावरण सुरक्षा, सहिष्णुता, सद्भावनापूर्ण तथा तनावमुक्त जीवन शैली के विकास के लिए, नशे की प्रवृत्ति रोकने तथा शाकाहार को बढ़ावा देने की प्रवृत्तियों एवं आतंकवाद और उग्रवाद के विरुद्ध जन जागरण में अपने समय का योगदान देने

के इच्छुक हों, जो इन मुद्दों पर लेख लिख सकें, विभिन्न ऐजेन्सियों, व्यक्तियों एवं संस्थाओं से पत्राचार कर सकें, आवश्यक कानूनी कार्यवाही करने में मदद कर सकें, अपनी संस्थाओं, परिवारों या मौहल्लों में इन मूल्यों को लागू करने/करवाने में प्रयास कर सकें, उन सबको हार्दिक आमन्त्रण है।

यदि आपकी संस्था इस किसी कार्य में संलग्न हो, तो हम आपसे सहयोग एवं समन्वय करने को तैयार है। *-रतन जैन, अन्तर्राष्ट्रीय अहिंसा अकादमी, ८७३, ईस्ट पार्क रोड, अजमल खाँ पार्क के सामने, करोल बाग, नई दिल्ली- ११०००५, फोन नं. ३५३६३१७, ३६१३५४७, फैक्स ३६३२२६३*

अहिंसात्मक कार्यों की व्यापकता के लिए अहिंसा पुरस्कारों की घोषणा

अहिंसात्मक कार्यों की व्यापकता एवं प्राणिमित्र कार्यकताओं व चेतनाशील पत्रकारों के समर्पित अहिंसात्मक प्रयासों के उत्साहवर्द्धन की दृष्टि से श्रमण भगवान महावीर स्वामी की जन्म जयन्ती के अवसर पर अखिल भारतीय सुधर्म अहिंसा प्रचार समिति, भवानीमण्डी द्वारा विभिन्न अहिंसा पुरस्कारों की घोषणा की गई है। अहिंसा, सदाचार, शाकाहार, निर्व्यसनता व समाज सेवा के क्षेत्र में राष्ट्रीय स्तर पर उत्कृष्ट कार्य करने वाले कार्यकर्ताओं को ''सर्वश्रेष्ठ अहिंसा कार्यकर्ता अवार्ड'' एवं पत्रकारों/ संवाददाताओं को ''श्रेष्ठ रचनाकार अवार्ड'' से सम्मानित किया जाएगा।

उक्त पुरस्कारों में 11 पुरस्कार अहिंसा प्रेमी कार्यकर्ताओं एवं तीन पुरस्कार पत्रकारों को प्रदान किये जायेंगे। पुरस्कार स्वरूप पाँच हजार रुपये नकद, स्मृति चिह्न, प्रशस्तिपत्र भव्य समारोह में प्रदान किये जायेंगे। उक्त पुरस्कारों की विस्तृत जानकारी एवं पुरस्कार प्रविष्टि प्रेषित करने हेतु अहिंसा प्रेमी कार्यकर्ता निम्नलिखित पते पर सम्पर्क करें-*प्राणिमित्र श्री नितेश जी नागोता जैन, राष्ट्रीय संचालक-अ.भा. सुधर्म अहिंसा प्रचार समिति, १७५-जैन बोर्डिंग हाउस, भवानीमण्डी-३२६५०२ (राज.)*

स्वयंभू पुरस्कार-२००२

दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीर जी द्वारा संचालित अपभ्रंश साहित्य अकादमी, जयपुर के वर्ष 2002 के स्वयंभू पुरस्कार के लिए अपभ्रंश साहित्य से संबंधित विषय पर हिन्दी अथवा अंग्रेजी में रचित रचनाओं की चार प्रतियां 30 सितम्बर 2002 तक आमन्त्रित हैं। इस पुरस्कार में 21001/- एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान किया जायेगा।

31 दिसम्बर 1996 से पूर्व प्रकाशित तथा पहले से पुरस्कृत कृतियाँ सम्मिलित नहीं की जायेंगी।

यह सूचित करते हुए हर्ष है कि वर्ष 2001 का स्वयंभू पुरस्कार डॉ. विद्यावती जैन, आरा (बिहार) को उनकी कृति 'पज्जुण्ण चरिउ' पर दिनांक 27.4. 2002 को श्री महावीरजी में महावीर जयन्ती के वार्षिक मेले के अवसर पर प्रदान

किया गया। – *डॉ. कमलचन्द सोगाणी, संयोजक*

अहिंसा प्रचार-प्रसार सामग्री निःशुल्क प्राप्त करें

अहिंसा, सदाचार, शाकाहार, निर्व्यसनता, वृक्षारोपण एवं विविध विषयों पर अखिल भारतीय सुधर्म अहिंसा प्रचार समिति, भवानीमण्डी द्वारा 50 से भी अधिक प्रकार के 2 लाख से भी अधिक स्टीकर तैयार किये गये हैं जिन्हें देशभर में निःशुल्क प्रचारार्थ वितरित किया जा रहा है। अहिंसा प्रचार-प्रसार के क्षेत्र में कार्यरत कार्यकर्ता अहिंसा प्रचार सामग्री की निःशुल्क प्राप्ति के लिए पोस्टेज खर्च 12 रुपये के डाक टिकट अपने पूर्ण पते के साथ प्रेषित कर इस पते पर सम्पर्क करें– *अहिंसारत्न श्री नितेश जी नागोता जैन, राष्ट्रीय संचालक-अ.भा. सुधर्म अहिंसा प्रचार समिति, १७५- जैन बोर्डिंग हाउस, भवानीमण्डी-३२६५०२ (राज.)*

महावीर पुरस्कार वर्ष २००२ एवं ब्र. पूरणचन्द रिद्धिलता लुहाड़िया पुरस्कार २००२

प्रबन्धकारिणी कमेटी, दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीर जी द्वारा संचालित जैनविद्या संस्थान, श्री महावीरजी के वर्ष 2002 के महावीर पुरस्कार के लिए जैनधर्म, दर्शन, इतिहास, साहित्य, संस्कृति आदि से संबंधित किसी भी विषय की पुस्तक/शोध प्रबंध की चार प्रतियाँ दिनांक 30 सितम्बर 2002 तक आमन्त्रित हैं। इस पुरस्कार में प्रथम स्थान प्राप्त कृति को 21001/– एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान किया जायेगा तथा द्वितीय स्थान प्राप्त कृति को ब्र. पूरणचन्द रिद्धिलता लुहाड़िया साहित्य पुरस्कार 5001/– एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान किया जायेगा। 31 दिसम्बर, 1998 के पश्चात् प्रकाशित पुस्तक ही इसमें सम्मिलित की जा सकती है।

यह सूचित करते हुए हर्ष है कि वर्ष 2001 का महावीर पुरस्कार प्रो. (डॉ.) राजाराम जैन, आरा (बिहार) को उनकी कृति ''पुण्यास्रव कथा (कोष)'' तथा ब्र. पूरणचन्द रिद्धिलता लुहाड़िया साहित्य पुरस्कार नाथूराम डोंगरीय जैन, अवनीन्द्र को उनकी कृति 'समीचीन सार्वधर्म सोपान' पर दिनांक 27.4.2002 को श्री महावीरजी में महावीर जयन्ती के वार्षिक मेले के अवसर पर प्रदान किया गया।

नियमावली तथा आवेदन-पत्र का प्रारूप प्राप्त करने के लिए संस्थान कार्यालय, दिगम्बर जैन नसियाँ भट्टारकजी, सवाईरामसिंह रोड, जयपुर-4 से पत्र व्यवहार करें।– *डॉ. कमलचन्द सोगाणी, संयोजक*

संक्षिप्त-समाचार

चेन्नई- आचार्यप्रवर 1008 श्री हस्तीमल जी म.सा. के 11वें स्मृति-दिवस पर 20 मई 2002 को साहुकार पेट स्थित जैन भवन के प्रांगण में परमविदुषी महासती श्री निरंजनाश्री जी म.सा. आदि ठाणा 5 के सान्निध्य में एकाशन,उपवास,आयम्बिल एवं सामूहिक सामायिक-साधना का आराधन हुआ। वक्ताओं ने आचार्यप्रवर के संयमी जीवन एवं सामायिक-स्वाध्याय पर विचार प्रस्तुत किए।इस पावन प्रसंग पर

जरूरतमंद विकलांग भाई-बहिनों के लिए कृत्रिम हाथ एवं पाँव वितरित किए गए।
- गौतमचन्द हुण्डीवाल, मंत्री

धुलिया- चाँद सुमन छात्रवृत्ति शिक्षण संस्था, 1777 गली नं. 2, धुलिया (महा.) फोन नं. 0256-233070 द्वारा प्रतिवर्ष कॉलेज में अध्ययनरत जरूरतमंद जैन ओसवाल छात्रों को छात्रवृत्ति प्रदान की जाती है। इच्छुक छात्र उपर्युक्त पते से आवेदन-पत्र मंगवाकर शीघ्र भरकर भेजें।-मंत्री

जोधपुर- श्री साधुमार्गी जैन संघ, जोधपुर के नवनिर्मित समता भवन का 20 जून 2002 को उद्घाटन कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। यह भवन कमला नेहरू नगर, प्रथम विस्तार में बना है।

पाली-मारवाड़- पाली शहर में फिजियोथेरेपी केन्द्र के संचालन हेतु योग्य एवं अनुभवी फिजियो थेरेपिस्ट की आवश्यकता है। योग्यता एवं अनुभव प्रमाण-पत्रों के साथ आवेदन करें- महावीरराज मेहता, मन्त्री-गुरुगजेन्द्र सेवा समिति, सुराणा मार्केट, पाली-306401(राज.), फोन नं. 23608(घर), 30491(ऑ.)

बैंगलोर- महावीर भवन जैन स्थानक अशोक नगर में वैशाख शुक्ला 8 दिनांक 20 मई 2002 को इतिहास मार्तण्ड, युगद्रष्टा आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. की 11वीं पुण्यतिथि सामूहिक सामायिक एवं स्वाध्याय साधना के साथ आचार्य श्री रामेश की आज्ञानुवर्तिनी महासती श्री ललितप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 4 के सान्निध्य में मनायी गयी। साध्वी वृन्द के अतिरिक्त इस अवसर पर श्री गौतमचन्द जी ओस्तवाल, श्री चेतनप्रकाश जी डूंगरवाल, श्री नवरतन जी भंसाली, श्री मोहनलाल जी चोपड़ा आदि ने गुरुदेव के जीवन एवं दर्शन पर विचार प्रकट किए। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री भोपालचन्द जी पगारिया ने की। श्री सोहनलाल जी सिपाणी, श्री भीकमचन्द जी गादिया एवं श्री चेतनप्रकाश जी डूंगरवाल सम्मानित अतिथि थे।-गौतमचन्द ओस्तवाल

बधाई / चुनाव

जोधपुर- श्री हिमांशु जैन सुपुत्र श्रीमती इन्दु कवाड़ एवं श्री आनन्दप्रकाश जी कवाड़ ने माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान की सैकेण्डरी परीक्षा 2002 में 92.67

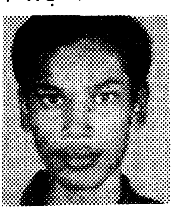

प्रतिशत अंक प्राप्त कर योग्यता सूची में 11 वाँ स्थान प्राप्त किया है। जोधपुर संभाग में उसका प्रथम स्थान रहा है। व्यावहारिक अध्ययन में उच्च अंक प्राप्त करने के साथ धार्मिक अध्ययन में अग्रणी है। सामायिक सूत्र, प्रतिक्रमण सूत्र, पच्चीस बोल, सड़सठ बोल के साथ दशवैकालिक सूत्र के 7 अध्ययन भी अधीत हैं। आचार्य प्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी महासती श्री सुशीला जी एवं महासती श्री शारदा जी के सांसारिक भ्राता (मामा पुत्र) हिमांशु को अपने धर्मनिष्ठ माता-पिता से सत्संस्कार मिले हैं।

जोधपुर-सुश्री मधुरिका जैन सुपुत्री श्रीमती मधु एवं डॉ. धर्मचन्द जैन(सम्पादक-जिनवाणी) ने माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान की सैकेण्डरी परीक्षा सन् 2002 में

91.67 प्रतिशत अंक प्राप्त कर योग्यता सूची में 17वाँ स्थान प्राप्त किया है। बादलचन्द सुगनकंवर चोरड़िया उच्च माध्यमिक विद्यालय की छात्रा मधुरिका ने 600 में से 550 अंक अर्जित किए हैं।

जयपुर- केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मन्त्रालय की राष्ट्रीय चयन समिति द्वारा 'राजीव गांधी मानव सेवा पुरस्कार' 2001 के लिए राजसमन्द के श्री मोहनलाल जैन का चयन किया गया है। पुरस्कार स्वरूप उन्हें एक लाख रुपये की राशि नकद दी जाएगी। श्री जैन को यह पुरस्कार बालकों के विकास एवं कल्याण के क्षेत्र में कार्य करने पर दिया गया । महात्मा गांधी और आचार्य तुलसी को अपना आदर्श मानने वाले मोहनभाई बच्चों को भगवान का दर्जा देते हैं।

चेन्नई- श्री एस.एस. जैन संघ, साहुकार पेट, चेन्नई के चुनाव में श्री रिखबचन्द

जी लोढ़ा को अध्यक्ष, श्री गौतमराज जी सुराणा एवं श्री जवरीलाल जी कटारिया को उपाध्यक्ष, श्री अखेचन्द जी भिड़कचा को मंत्री, श्री मोहनलाल जी कोठारी को सहमंत्री तथा श्री बाबूलाल जी बोकड़िया को कोषाध्यक्ष निर्वाचित किया गया है।

श्री राजेन्द्रप्रसाद जैन एडवोकेट एवं दिलीप नागौरी सम्मानित

अ.भा. अहिंसा प्रचार समिति के संस्थापक, वरिष्ठ समाजसेवी एवं जागरूक लेखक श्री राजेन्द्र प्रसाद जी जैन 'एडवोकेट', भवानीमण्डी को सादड़ी मारवाड़ में आयोजित सुधर्म संस्कार शिविर के समापन के अवसर पर विद्या बाल मण्डली सोसायटी, मेरठ के द्वारा सम्मानित किया गया। श्री जैन के द्वारा अहिंसा के क्षेत्र में किए गए उत्कृष्ट कार्यों के लिए प्रदत्त इस सम्मान में उन्हें 21 हजार रुपये नकद एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान किए गए। स्वास्थ्य की प्रतिकूलता के कारण वे स्वयं समारोह में उपस्थित नहीं हो सके। उनके प्रतिनिधि श्री नितेश जी नागोता ने उक्त सम्मान स्वीकार किया। - *कालूलाल आलेचा*

बैंगलोर- श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के नये अध्यक्ष सुश्रावक श्री गणेशमल जी भण्डारी मनोनीत हुए हैं तथा श्री जैन रत्न युवक परिषद् के नये अध्यक्ष श्री हरीश कुमार जी सांखला बने हैं। पूर्व अध्यक्ष श्री भोपालचन्द जी पगारिया एवं युवक परिषद् के पूर्व अध्यक्ष श्री शांतिलाल जी लोढ़ा ने उनका तुरखिया भवन में आयोजित समारोह में स्वागत किया।

उपर्युक्त अवसर पर बम्बोरा के युवा स्वाध्यायी श्री दिलीप जी नागौरी को भी 21 हजार रुपये की सम्मान राशि एवं प्रशस्ति पत्र देकर साफा पहनाया गया । श्री नागौरी विगत डेढ दशक से धार्मिक अध्यापन और स्वाध्याय प्रवृत्ति से जुड़े हुए हैं। *सुरेशचन्द्र सींग*

श्रद्धांजलि

सवाईमाधोपुर- धर्मपरायण सुश्राविका श्रीमती बरदीबाई जैन धर्मपत्नी स्व. श्री कल्लूलाल जी जैन का 27 मई 2002 को देहावसान हो गया। आपका सम्पूर्ण जीवन धर्म-साधना एवं सेवा में व्यतीत हुआ। सवाईमाधोपुर में महिलाओं को धार्मिक क्रियाओं से जोड़ने में उनकी सक्रिय भूमिका रही। आप श्राविका समिति की संस्थापक अध्यक्ष थीं और दीर्घकाल तक इस पद पर कार्य किया। आपने अनेक बार वर्षीतप किया तथा अन्य फुटकर तपस्याओं की तो गणना ही नहीं है। आप चारों खन्धों का पालन करती थीं। साधु-साध्वियों की सेवा में सदैव तत्पर रहती थीं। आचार्यप्रवर पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा., आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के प्रति उनकी अगाध आस्था एवं भक्ति थीं। अन्य सन्त-सतियों की सेवा में भी वे उदारतापूर्वक तत्पर रहती थीं। सवाईमाधोपुर में आने वाले सन्त-सती बरदीबाई से अपरिचित नहीं रहते थे। समाज में किसी भी भाई-बहिन के बीमार होने का समाचार सुनते ही वे तत्काल उनकी सेवा में पहुंचती थीं। सवाईमाधोपुर क्षेत्र की वे एक आदर्श श्राविका थीं। - विजयकुमार जैन

सवाईमाधोपुर- श्रीमती कल्याणी देवी धर्मपत्नी श्री भंवरलाल जी जैन (समिधी वाले) का 11 मई 2002 को 66 वर्ष की अवस्था में स्वर्गवास हो गया। धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती जैन नियमित सामायिक-स्वाध्याय के साथ तप-त्याग में अग्रणी थी। आप आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. की परमभक्त थीं एवं रत्नवंश के प्रति समर्पित थीं। आप रत्नवंश में नवदीक्षिता साध्वी श्री वृद्धिप्रभा जी म.सा. की सांसारिक ताईजी थीं। आप अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़कर गई हैं।

जोधपुर- धर्मपरायणा सेवाभावी सुश्राविका श्रीमती उगमादेवी जी सुराना धर्मपत्नी श्री लूणकरण जी सुराना का 29 मई 2002 को स्वर्गवास हो गया। आप धर्मनिष्ठ, व्यवहार कुशल एवं सेवाभावी श्राविका थीं। बारनी में पधारने वाले सन्त-सतीवृन्द की सेवाभक्ति में वे सदैव अग्रणी रहती थीं। व्रत-नियमों में उनकी अटूट आस्था थीं। स्वधर्मि-वात्सल्य के सेवाभाव के साथ उनका अतिथि सत्कार भुलाया नहीं जा सकता।

अजमेर- श्री पारसमल जी कटारिया सुपुत्र स्व. श्री इन्दरचन्द जी कटारिया का 52 वर्ष की आयु में 15 मई 2002 को सड़क दुर्घटना में असामयिक निधन हो गया। आपका पूरा परिवार आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. एवं आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के प्रति श्रद्धानत है। आप अनन्य भक्त होने के साथ कर्त्तव्यपरायण, सरलस्वभावी एवं मृदुभाषी थे। आप अपने पीछे पत्नी, एक पुत्र एवं एक पुत्री छोड़कर गये हैं। सामायिक-स्वाध्याय में आपकी अतीव रुचि थी। गत 10 वर्षों से वैशालीनगर में संचालित रविवारीय प्रार्थनामण्डल के आप सक्रिय कार्यकर्ता थे। - जीतमल कटारिया

जोधपुर- श्रद्धानिष्ठ, धर्मनिष्ठ एवं कर्त्तव्यपरायण सुश्रावक श्री सायरमल जी रेड का 5 जून 2002 को रात्रि में देहान्त हो गया। रेड परिवार की आचार्य भगवन्त पूज्य श्री 1008 श्री हस्तीमल जी म.सा. एवं उनके आज्ञानुवर्ती सन्त-सतियों के प्रति अगाध आस्था एवं अनुपम भक्ति है। श्रद्धा-भक्ति और सेवा-भावना के पारिवारिक संस्कार आपके जीवन में रचे-पचे रहे। आप सन्त-सतीवृन्द के दर्शन-वन्दन एवं मांगलिक श्रवण के निमित्त नियमित रूप से धर्मस्थान में उपस्थित होने वाले श्रावकों में से थे। संघ-सेवा, सन्त-सती सेवा एवं स्वधर्मि-वात्सल्य-सेवा में आपकी सदा शुभ भावना रहती थी। व्रत-नियमों के परिपालन में आपकी सदैव सजगता रही।

जोधपुर- श्रीमती धापकंवर जी धर्मपत्नी स्व. श्री तिलराज जी खिंवसरा का

वैशाख शुक्ला 9 दिनांक 5 मई 2001 को 100 वर्ष की आयु पूर्ण करने पर देहावसान हो गया। आपने तीन वर्षीतप किए। प्रतिदिन 3 से 5 सामायिक सहारा लिए बिना करना आपका नित्य क्रम था। आपने अनेक बेले, तेले एवं प्रतिवर्ष अठाई तप के साथ 21 दिवसीय तप भी किया। 70 वर्ष पूर्व धोवन पानी एवं रात्रि चौविहार त्याग का नियम ले लिया था। आपने जीवनकाल का अधिकांश समय साधु-साध्वियों के सान्निध्य में रहकर बिताया। आप अपने पीछे पुत्र जवरीमल, पुत्रवधू श्रीमती बुद्धकंवर, पौत्र, प्रपौत्र, दौहित्र, प्रदौहित्र आदि का भरापूरा परिवार छोड़कर गई हैं।

भोपालगढ़- श्री धर्मचन्द जी कांकरिया सुपुत्र श्री गुदड़मल जी कांकरिया का युवावय में 17 जून 2002 को आकस्मिक निधन हो गया। संघ-सेवा और सन्त-सती सेवा में उनकी अच्छी भावना थी। वे जागरूक एवं सक्रिय श्रावक रत्न थे। विगत एक वर्ष से उनका स्वास्थ्य ठीक नहीं था। *- अरुणा मेहता*

भरतपुर- श्रीमती हप्पीबाई जैन धर्मपत्नी स्व. श्री भौंरी लाल जी जैन का 91 वर्ष

की आयु में 11 मई 2002 चौदस के दिन मोहल्ला गोपालगढ़ में स्वर्गवास हो गया। आप स्थानकवासी स्वाध्याय संघ, भरतपुर की सक्रिय सदस्या थीं। आपका जीवन सामायिक-स्वाध्याय, व्रत, नियम में समर्पित रहा। आप सरल स्वभावी, मृदुभाषी एवं सेवाभावी थी तथा आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. एवं आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. की अनन्य भक्त थीं। आप अपने पीछे भरा-पूरा परिवार छोड़ कर गयी हैं।

दुर्ग (छत्तीसगढ़)- सुश्राविका श्रीमती बख्तावरी देवी जी बोथरा धर्मपत्नी श्री राणीदान जी बोथरा का 4 मई 2002 को हृदयगति रुक जाने से 62 वर्ष की उम्र में निधन हो गया। आपने 62 अठाई, 2 मासखमण तप, 21, 15, 11 एवं 7 दिवसीय

तपस्याएँ की हैं। चातुर्मास काल में एकान्तर तप एवं बेले-बेले की तपस्या सम्पन्न की है। गत 35 वर्षों से आप रात्रिभोजन त्याग, जमीकंद त्याग, नित्य सामायिक, घड़ी-घड़ी के पच्चक्खाण आदि अनेक धार्मिक नियम एवं व्रत-प्रत्याख्यान कर रही थीं। आप अपने पीछे धर्मशील परिवार छोड़कर गई हैं। आपकी भावनानुसार मृत्यूपरान्त नेत्रदान किये गए।

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं के प्रति सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जिनवाणी, अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके परिवारजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं।

राष्ट्रीय समाचार

वैज्ञानिक अब्दुल कलाम भारत के नये राष्ट्रपति होंगे

वैज्ञानिक ए.पी.जे. अब्दुल कलाम एवं डॉ. (श्रीमती) लक्ष्मी सहगल ने राष्ट्रपति पद हेतु नामांकन-पत्र भर दिए हैं। डॉ. अब्दुल कलाम को विजयश्री मिलना सुनिश्चित सा है। कलाम मुस्लिम समुदाय से होकर भी असाम्प्रदायिक विचारों के व्यक्ति हैं। वे अविवाहित हैं, शाकाहारी हैं तथा प्रक्षेपास्त्र निर्माण में उनका महत्त्वपूर्ण योगदान है।

आचार्य श्री विजयमहोदयसूरीश्वर जी का देहावसान

अहमदाबाद- आचार्य श्री रामचन्द्रसूरीश्वर जी के पट्टधर आचार्य श्री विजयमहोदय सूरीश्वर जी महाराज का अल्प बीमारी के पश्चात् 28 अप्रेल 2002 को अहमदाबाद में स्वर्गवास हो गया। संवत् 1990 में आपने गृहत्याग कर प्रव्रज्या अंगीकार की थी तथा आचार्य श्री रामचन्द्रसूरि जी के दिवंगत होने के पश्चात् आचार्यपद पर प्रतिष्ठित हुए। आपमें गुरु के प्रति समर्पण भाव, विनयशीलता आदि अनेक गुण थे।

श्री पार्श्वनाथ जैन चिकित्सालय सेवा में समर्पित

ब्यावर- महासती श्री उमराव कुंवर जी 'अर्चना' की प्रेरणा से निर्मित श्री पार्श्वनाथ जैन चिकित्सालय एवं शोध संस्थान का उद्घाटन 26 मई 2002 को राजस्थान के मुख्यमंत्री श्री अशोक जी गहलोत द्वारा किया गया। उदयपुर रोड, ब्रह्मानन्द धाम के समीप लगभग 1.5 करोड़ की लागत से इस आधुनिकतम चिकित्सालय भवन का निर्माण हुआ है। योजना 5 करोड़ की है। चिकित्सालय में नेत्र लैंस-प्रत्यारोपण, प्रसूति एवं शिशु तथा सामान्य चिकित्सा निदान का कार्य प्रारम्भ हो गया है। चिकित्सालय में छः आउटडोर, दो ऑपरेशन थियेटर, तीन जनरल वार्ड एवं तेरह कॉटेज रूम हैं। सम्पूर्ण चिकित्सालय एयर कूल्ड है। समारोह की अध्यक्षता उद्योगपति श्री मांगीलाल जी सुराणा, सिकन्दराबाद ने की।

-मदनसिंह कुमट

कहीं आप अनजाने में गैर शाकाहारी वस्तु का प्रयोग तो नहीं कर रहे?

विभिन्न जीवदया प्रेमी व्यक्तियों और संगठनों तथा उपभोक्ता अधिकारों के लिए प्रयत्नशील संस्थाओं ने समय-समय पर सरकार को ज्ञापन देकर दबाव बनाया कि खाद्य पदार्थों में (जैसे डबलरोटी, बिस्कुट, केक, पेस्ट्री, आईसक्रीम, नूडल्स, चटनी, टूथपेस्ट, साबुन, शैम्पू) किस-किस वस्तु का उपयोग हुआ है, उसकी जानकारी उपभोक्ताओं को दी जाए। देखने में यह आया है कि इन कुछ वस्तुओं के निर्माण में अंडे इत्यादि गैर शाकाहारी वस्तुओं का उपयोग होता है और इसकी स्पष्ट सूचना न मिलने के कारण अनजाने में शाकाहारी लोग भी इन वस्तुओं का बेहिचक प्रयोग कर रहे हैं। एक लम्बे संघर्ष के बाद अंततोगत्वा 4 अक्टूबर 2001 को भारत सरकार ने एक अधिसूचना जारी की है, जिसके अनुसार जिन वस्तुओं का उत्पादन *४ अक्टूबर २००१ के बाद हुआ है और जिन पर चाकलेट रंग में चौकोर निशान • के अंदर गोल निशान अंकित है, उन वस्तुओं के निर्माण में गैर शाकाहारी वस्तुओं का प्रयोग हुआ है।* अतः सभी से अपील है कि वे इस नियम की जानकारी अधिक से अधिक व्यक्तियों को प्रदान करें। यदि आपको कहीं यह शक हो या जानकारी हो कि किसी वस्तु के निर्माण में गैर शाकाहारी वस्तु का प्रयोग हुआ है, लेकिन उत्पादक ने इस चिह्न को उस वस्तु पर अंकित नहीं किया है, तो आप इसकी शिकायत निम्नलिखित पते पर भेजें -*Prevention of Food Adulteration, Director General Of Health Services, Nirman Bhawan, New Delhi-110001-प्रो. रतन जैन, महामंत्री- जैन महासभा, दिल्ली, ५९९१, अशोक विहार फेज २, दिल्ली-११००५२, दूरभाष- ७२१९५६४४*

साधु-श्रावक का अनुराग

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.

साधु-साध्वी का श्रावक-श्राविकाओं की भक्ति पर अनुराग हो जाना जीवन को आगे बढ़ाने में सहायक बनता है, लेकिन वह अनुराग सीमा तक रहे तभी स्वयं साधक की साधना निर्मल रह सकेगी, साथ ही वह सामने वालों को भी ऊँचा उठा सकेगा। गृहस्थ का त्यागी वर्ग के प्रति धर्म राग, प्रेम या अनुराग जितना अधिक होगा, उतना ही आरम्भ परिग्रह से गृहस्थ को दूर हटा सकेगा और शान्ति के नजदीक रख सकेगा। किन्तु साधु का आपसे ज्यादा राग हो जाय, ज्यादा निकटता बढ़ने लगे, तो उचित नहीं होगा।

अतः साधु के अनुराग की सीमा है। हमारा आपके साथ अनुराग सीमातीत होगा तो हमारी संयम मर्यादा को वह गौण कर देगा। परन्तु आपकी हमारे प्रति अनुराग की सीमा नहीं होनी चाहिये, वह असीम होना चाहिये।

-गजेन्द्र व्याख्यान माला, भाग-२ से

साभार-प्राप्ति-स्वीकार

500/-रुपये जिनवाणी पत्रिका की आजीवन-सदस्यता हेतु प्रत्येक

8674 श्री प्रमोद जी जैन, दिल्ली
8783 डॉ. रमेश कुमार जी छाजेड़, थाने (ईस्ट), मुम्बई (महा.)
8785 श्री विबुधेश कुमार जी जैन, मानसरोवर, जयपुर (राज.)
8836 श्री संजय जी जैन, सूरत (गुजरात)
8840 Shri D.R. Mehta, Ahmedabad (Gujrat)
8841 Shri Jabarchand Ji Lalchand Ji Kataria, Guledgudd, Bagalkoth (K.T.)

300/-जिनवाणी पत्रिका की आजीवन-सदस्यता हेतु प्रत्येक
(अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद् की योजना के अन्तर्गत)

8675 श्री रवीन्द्र कुमार जी जैन, जयपुर (राज.)
8676 श्री रवीन्द्र कुमार जी जैन, अलीगढ़, टोंक (राज.)
8677 श्री आशीष कुमार जी जैन,कोटा (राज.)
8678 श्री दिनेशचन्द जी जैन, जयपुर (राज.)
8679 श्री अमित कुमार जी जैन, अलवर (राज.)
8680 श्री राजेश कुमार जी जैन, शाहगढ़, सागर (म.प्र.)
8681 श्री अखिल जी जैन, जयपुर (राज.)
8682 श्री शीतल जी जैन, जयपुर (राज.)
8683 श्री अनिल कुमार जी जैन, जयपुर (राज.)
8684 श्री राजेश कुमार जी जैन, सांगानेर, जयपुर (राज.)
8685 श्री दलपत के. जैन जी, मुम्बई (महा.)
8686 श्री सुनील कुमार जी मुनोत, अहमदाबाद (गुजरात)
8687 श्रीमती बदनकंवर जी मेहताबसिंह जी मेहता, जयपुर (राज.)
8688 श्री पामेन्द्रसिंह जी रणजीतसिंह जी लोढ़ा, जोधपुर (राज.)
8689 श्री पीयूष जी विजय जी लोढ़ा, जोधपुर (राज.)
8690 श्री करण कुमार जी संजय जी. सालेचा, बालोतरा, बाड़मेर (राज.)
8691 श्री अभिनव जी लक्ष्मीचन्द जी मेहता, जोधपुर (राज.)
8692 श्री सौरभ जी सुनि जी जैन, जोधपुर (राज.)
8693 श्री रोहित जी पी.एम. गांग जी, जोधपुर (राज.)
8694 श्री संजय जी आर.एस. मेहता जी, जोधपुर (राज.)
8695 श्री सौरभ जी मूलचन्द जी डोसी, जोधपुर (राज.)
8696 पुनीत कुमार जी नरेश कुमार जी संकलेचा, पाली मारवाड (राज.)
8698 Shri Romil Ji Rajeev Kumar Ji Mehta, Kolkata (W.B.)
8699 श्री कुणाल जी कैलाश जी मेहता, जोधपुर (राज.)
8700 श्री अभिषेक जी अजय जी मेहता, जोधपुर (राज.)
8701 श्री अंकित जी गौतमचन्द जी मोदी, जोधपुर (राज.)
8702 श्री पंकज जी अशोक जी कोठारी, जोधपुर (राज.)
8703 श्री सिद्धार्थ जी चन्द्रशेखर जी बच्छावत, जोधपुर (राज.)
8704 श्री नमन जी सुधीर जी भण्डारी, जोधपुर (राज.)
8705 श्री महक जी विरेन्द्र जी सिंघवी, जोधपुर (राज.)

8706 श्री रचित जी राजेन्द्र जी भंसाली, जोधपुर (राज.)
8707 श्री जितेन्द्र जी बाबूलाल जी जैन, जोधपुर (राज.)
8708 श्री सुरेन्द्र जी संचेती, जोधपुर (राज.)
8709 श्री सी.पी. संचेती, जोधपुर (राज.)
8710 श्री महेन्द्र जी भण्डारी, जोधपुर (राज.)
8711 श्री सुनिल जी धारीवाल, जोधपुर (राज.)
8712 श्री संजय जी सिंघवी, जोधपुर (राज.)
8713 श्री अभिषेक जी राजेश जी जैन, जोधपुर (राज.)
8714 C.M. Trading & Co. Salur, Viginagaram (A.P.)
8715 Shri Ganpatraj Ji Mangilal Ji Baghmar, Chennai (T.N.)
8716 Shri Mahaveer Ji Parasmal Ji Bhandari, Chennai (T.N.)
8717 Shri Surajprakash Ji Kanyalal Ji Lalwani, Chennai (T.N.)
8718 Shri Hastimal Ji Shantilal Ji Gadia, Chennai (T.N.)
8719 Shri Kanchan Ji Himmatmal Ji Lodha, Chennai (T.N.)
8720 Shri Prasannchand Ji J. Mangilal Ji Bohra, Chennai (T.N.)
8721 Shri Kishore Kumar Ji Dakaliya, Chennai (T.N.)
8722 Shri Ashok Ji Sohanlal Ji Bokdia, Chennai (T.N.)
8723 Shri Bhagchand Ji Deepchand Ji Dhabaria, Chennai (T.N.)
8724 Shri Jambukumar Ji Mahaveerchand Ji Nabariya, Chennai (T.N.)
8725 Shri Pradeep Ji Jawahar D. Mehta Ji, Chennai (T.N.)
8726 Shri Jaswantraj Ji GumanmalJi Bagmar, Chennai (T.N.)
8727 Shri Laduchand Ji Kewelchand Ji Bhandari, Chennai (T.N.)
8728 Shri Ranjeetmal Ji Gokulchand Ji Kothari, Chennai (T.N.)
8729 Shri Sampatraj Ji Sohanlal Ji Loonwat, Chennai (T.N.)
8730 Shri Kamal Ji N.M. Kankaria Ji, Chennai (T.N.)
8731 Shri Prakashmal Ji Sagarmal Ji Mehta, Chennai (T.N.)
8732 Shri Prasanchand Ji Ranveerchand Ji Bhandari, Chennai (T.N.)
8733 Shri Rikhachand Ji Sleraj Ji Jain, Chennai (T.N.)
8734 Shri AshokKumar Ji Suganchand Ji Jain, Chennai (T.N.)
8735 Shri S.S. Jain Sangh, Chennai (T.N.)
8736 Shri Goutamchand Ji Mangilal Ji Jain, Chennai (T.N.)
8737 Shri Shantilal Ji Bhanwarlal Ji Betala, Chennai (T.N.)
8738 Shri Bhopalraj Ji BhanwarlalJi Betala, Secundarbad (A.P.)
8739 श्री नेमीचन्द जी तातेड़, रिया बड़ी, नागौर (राज.)
8740 Shri Padam Ji Mohanlal Ji Golecha, Chennai (T.N.)
8741 Shri Mahaveerchand Ji K.L. Merlecha Ji. Chennai (T.N.)
8742 Shri Vardhaman Ji Nanmal Ji Bohra, Chennai (T.N.)
8743 Shri Trilokchand Chathurbhuj Ji Sethiya. Chennai (T.N.)
8744 Shri Moolchand Ji Chathurbhuj Ji Sethiya. Chennai (T.N.)
8745 Shri Gulabchand Ji S. Kewalchand Ji Jain. Chennai (T.N.)
8746 Shri Shanti Ji T. Babulal Ji Deui. Chennai (T.N.)

8747 Shri Ashokchand Ji S. Champalal Ji Jain, Chennai (T.N.)
8748 Shri Mahaveerchand Ji Alpuchand Ji, Chennai (T.N.)
8749 Shri Goutamchand Ji Ramlal Ji Kawad, Chennai (T.N.)
8750 Shri Rajesh Kumar Ji Moolraj Ji Singhvi, Chennai (T.N.)
8751 Shri Mahendra Kumar Ji Foolchand Ji Dhoka, Secundrabad (A.P.)
8752 श्री जवाहरलाल जी चुन्नीलाल जी सालेचा, अहमदाबाद (गुजरात)
8753 Shri B.P. Geesulal Ji Pukhraj Ji Bohra, Banavara, Hassan (K.T.)
8754 Shri Durgchand Ji Khetmal Ji Lunawat, Chennai (T.N.)
8755 Shri P.R.B. Bafna Ji, Chennai (T.N.)
8756 Shri Abhay Kumar Ji Bhur, Kolkata (W.B.)
8757 Shri Lalitha Ji Mahaveerchand Ji Sabdada, Chennai (T.N.)
8758 श्रीमती गरिमा जी राजन जी जैन, फरीदाबाद (हरियाणा)
8759 श्री सज्जनराज जी चामड़, जोधपुर (राज.)
8760 श्री लोकेश जी ज्ञानचद जी जैन, सवाईमाधोपुर (राज.)
8761 श्री सतीश जी महेन्द्रकुमार जी जैन, आलनपुर, सवाईमाधोपुर (राज.)
8762 श्री ऋषभ जी ओमप्रकाश जी जैन, खेरदा, सवाईमाधोपुर (राज.)
8763 श्री युवराज जी हेमचन्द जी मेहता, जयपुर (राज.)
8764 श्री दीपक जी गणपतलाल जी सिंघवी, वजीराबाद, दिल्ली
8765 श्री पारसमल जी नथमल जी भण्डारी, जोधपुर (राज.)
8766 श्री अशोक जी मेहता, अहमदाबाद (गुंजरात)
8767 श्री बीजराज जी चौपड़ा, पाली मारवाड़ (राज.)
8768 श्री पी.एल. जी पारसमल जी चौरड़िया, मुम्बई (महा.)
8769 श्री दिनेश जी भंवरलाल जी कानुगा, जोधपुर (राज.)
8770 श्री वी.सी. जी एस. सी. जी सिंघवी, जोधपुर (राज.)
8771 श्री रणजीचन्द जी मेहता, जोधपुर (राज.)
8772 श्री श्यामसुन्दर जी गोयल, जोधपुर (राज.)
8773 श्री प्रकाश जी मोहनोत, जोधपुर (राज.)
8774 श्री नितेश जी नागोता जैन, भवानीमण्डी (राज.)
8775 श्रीमती सुधा जी अशोक कुमार जी भंसाली, जोधपुर (राज.)
8776 श्री मुदित जी डॉ. महेन्द्र जी सिंघवी, उदयपुर (राज.)
8777 श्री ज्ञानचन्द जी पश्विनी, पाली (राज.)
8778 श्री लेखराज जी जैन, आगर (मालवा) म.प्र.
8779 श्री धर्मवीर जी शान्तिचन्द जी मेहता, जोधपुर (राज.)
8780 अनिल जी घेवरचन्द जी जैन, जोधपुर (राज.)
8781 Smt. Pushpa Ji Ganpatraj Ji, Chennai (T.N.)
8782 श्रीमती बसन्ती देवी जी गांधी, चन्द्रपुर (महा.)
8784 श्री महावीर प्रसाद जी घनश्याम जी जैन, कुण्डेरा, सवाईमाधोपुर (राज.)
8786 श्री महावीर जी सम्पतराज जी संचेती, पाली–मारवाड़ (राज.)
8787 Shri Ajay Ji Bothra, Bangalore(Karnataka)
8788 Shri Jain Lalith Ji Yeshwanthraj Ji Sankhla, Bangalore(Karnataka)
8789 Shri Jain D. Deepak Ji Devraj Ji Chopda. Bangalore(Karnataka)

8790 Shri Jain Manohar Ji Devraj Ji Chopda, Bangalore(Karnataka)
8791 Shri Kiranraj Ji Bhikamchand Ji Chopda, Bangalore(Karnataka)
8792 Shri Narendra Kumar Dharmchand Ji Bohra Bangalore(Karnataka)
8793 Shri Jain Ashok Ji D. Devraj Ji jain, Bangalore(Karnataka)
8794 Shri Naginchand Ji Hukamchand Ji Khincha, Bangalore(Karnataka)
8795 Shri Adarsh Vidya Sangh, Bangalore(Karnataka)
8796 Shri Pushraj Ji Harakchand Ji Singhvi, Bangalore(Karnataka)
8797 Shri Mahaveerchand Ji Manakchand Ji Lodha, Chennai(T.N.)
8798 श्री नरेन्द्र जी सुमेरमल जी साण्ड, जोधपुर (राज.)
8799 श्री राजेन्द्र जी गुलाबचन्द जी बाफना, पूना (महा.)
8800 श्री श्री महावीर जी प्रकाश जी जैन, मुम्बई (महा.)
8801 Shri Ugamraj Ji Deoraj Ji Mehta, Kolkata (W.B.)
8802 श्री सुरेश जी पारसमल जी चौपड़ा, मुम्बई (महा.)
8803 श्री गणपत जी आशाराम जी मेहता, जोधपुर (राज.)
8804 श्री दीपक जी आशाराम जी मेहता, अहमदाबाद (गुजरात)
8805 श्री महेन्द्र कुमार जी ज्ञानचन्द जी मुणोत, मुम्बई (महा.)
8806 श्री शान्तिलाल जी मांगीलाल जी मूथा, मुम्बई (महा.)
8807 श्री मदनलाल जी बनवारीलाल जी ललवानी, मुम्बई (महा.)
8808 श्री बसन्त जी जौहरीमल जी मुणोत, मुम्बई (महा.)
8809 श्री कमल जी मेघराज जी कोठारी, मुम्बई (महा.)
8810 श्री भोजराज एम. जी मनोहरराज जी बोथरा, मुम्बई (महा.)
8811 श्री चन्दन जी नैनसुख जी छाजेड़, मुम्बई (महा.)
8812 श्री अभय जी राजमल जी संचेती, मुम्बई (महा.)
8813 श्री जम्बुकुमार जी ताराचन्द जी वैद, मुम्बई (महा.)
8814 श्री पी.सी. जी नयन जी सिंघवी, रायपुर (छत्तीसगढ़)
8815 श्री राकेश जी रमणीकलाल जी शाह, मुम्बई (महा.)
8816 श्री संजय जी टी.सी. गोडका जी, मुम्बई (महा.)
8817 श्री एस. सी. जी मूलचन्द जी जैन, मुम्बई (महा.)
8818 श्री गौरव जी अशोक जी जैन, दिल्ली
8819 श्री नरेश जी जैन, दिल्ली
8820 श्री मनीष जी माणक जी जैन, किशनगढ़, अजमेर (राज.)
8821 श्री सुमीत जी सुरेन्द्र जी जैन, मुम्बई (महा.)
8822 श्री नरेश जी संतोष कुमार जी जैन, मुम्बई (महा.)
8823 श्री राजेश जी विमलचन्द जी गोठी, मुम्बई (महा.)
8824 श्री सुनील जी बाबूलाल जी मोदी, मुम्बई (महा.)
8825 श्री जे.एस. चौधरी जी, मुम्बई (महा.)
8826 श्री श्रीपतसिंह जी गोखरू, मुम्बई (महा.)
8827 श्री राजीव जी टीकमचन्द जी हीरावत, मुम्बई (महा.)
8828 Shri B.C. Golecha Ji.Chennai (T.N.)
8829 श्री दिलीप जी पोखरणा, लातूर (महा.)
8830 Shri Padamchand Ji Modi. Guwahati (Assam)

8831 Shri Ramgopal Ji Sharma, Guwahati (Assam)
8832 Shri Ramlal Ji Chordia, Guwahati (Assam)
8833 Shri Ramchandra Ji Sancheti, Guwahati (Assam)
8834 Shri Jaskaran Ji Phoolphagar, Guwahati (Assam)
8835 Shri B.D. Sipani Ji, Dimapur (Nagaland)
8837 Shri Suresh Ji Golecha, Bangalore (K.T.)
8838 Shri Mahaveer Chand Ji Daga, Bangalore (K.T.)
8839 Shri Shantilal Ji A. Jain, Bangalore (K.T.)

जिनवाणी को साभार-प्राप्त

1100/– श्री शान्तिलाल जी दुलीचन्द जी खाबिया, मैसूर, अपने सुपुत्र राजेश कुमार का विवाह छाया कुमारी सुपुत्री श्री नथमल जी बम्ब, मैसूर वाले के साथ 30.4.2002 को सम्पन्न होनें की खुशी में।

500/– श्री रिखचन्द जी लोढ़ा (निवासी कुचेरा), चेन्नई, श्री एस.एस. जैन संघ, साहुकारपेट के अध्यक्ष चुने जाने पर जिनवाणी को सप्रेम भेंट।

500/– श्री शांतिलाल जी जैन, चौरू जिला– टोंक(राज.), पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के सान्निध्य में धर्मपत्नी श्रीमती शान्तिदेवी जी जैन का वर्षीतप पारणा सानन्द सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में जिनवाणी को सप्रेम भेंट।।

380/– श्री माणकचन्द जी धरमचन्द जी देवड़ा, बैंगलोर, श्री महावीरचन्द जी गोलछा की सुपुत्री सौ. कां. प्रीति संग विजय जी के शुभ विवाह के उपलक्ष्य में जिनवाणी को सप्रेम भेंट।

252/– श्री प्रेमराज जी बेताला,गुवाहाटी (आसाम), सुपौत्री सौ. कां. डिम्पल (सुपुत्री श्री राजेन्द्र कुमार जी बेताला) का शुभ विवाह दिनांक 26 मई 2002 को पिडियारा निवासी स्व. श्री बिरधीचन्द जी सुराणा के सुपुत्र श्री विनोद कुमार जी के लाडले चि. श्री नीरज कुमार जी (वर्तमान निवासी शिलांग) के साथ गुवाहाटी में सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में।

251/– श्री बाबूलाल जी जैन, भरतपुर, अपने सुपौत्र (सुपुत्र श्री रजनीश जी जैन) के जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में जिनवाणी को सप्रेम भेंट।

251/– श्री शांतिलाल जी डाकलिया, श्रीमती उजासबाई जी डाकलिया, जोधपुर, अपने पिताश्री श्रीमान् मांगीलाल जी डाकलिया(डांगियावास वाले) के 23 मार्च 02 को स्वर्गगमन की स्मृति में।

250/– श्री मांगीलाल जी शान्तिलाल जी गोलेछा, बेंगलोर, अपने सुपुत्र श्री महावीरचन्द जी गोलेछा सौ. कां. प्रीति संग विजय जी के शुभ विवाह के उपलक्ष्य में जिनवाणी को सप्रेम भेंट।

101/– श्री राजेन्द्र कुमार जी नरेन्द्र कुमार जी जैन, भरतपुर, पूज्य माताजी श्रीमती हप्पीबाई जी की पुण्य स्मृति में।

101/– श्री रामबिलास जी जैन (कुण्डेरा वाले), जयपुर, धर्मपत्नी कंचनदेवी जी जैन की पुण्य स्मृति में।

101/– श्री रघुनाथ दास जी जैन, सवाईमाधोपुर, अपनी माता श्रीमती बरदीबाई जी धर्मपत्नी स्व. श्री कल्लूलाल जी जैन की पुण्य स्मृति में।

101/– श्री चंचलमल जी गांग एवं श्रीमती केसर जी गांग, जोधपुर, मास्टर श्री राहुल जी

गांग सुपुत्र श्री राजेश जी गांग के छठे जन्मदिवस के उपलक्ष्य में।

101/– श्रीमती उजासबाई जी डाकलिया धर्मपत्नी श्री शांतिलाल जी डाकलिया, जोधपुर, सुपुत्री सुश्री अंकिता द्वारा राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की दसवीं कक्षा अंग्रेजी माध्यम से प्रथम श्रेणी (78 प्रतिशत) में उत्तीर्ण करने की खुशी में।

101/– श्रीमती कपूरी देवी, डॉ. धर्मचन्द जी, ऋषभचन्द जी जैन, अलीगढ़, जिला–टोंक(राज.), श्री टीकमचन्द जी एवं अरूणा जी के सुपुत्र के जन्मोपलक्ष्य की खुशी में सप्रेम भेंट।

101/– डॉ. धर्मचन्द जी, मधु जी जैन, जोधपुर, सुपुत्री सुश्री मधुरिका द्वारा राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की दसवीं कक्षा में 91.67 प्रतिशत अंक प्राप्त करने की प्रसन्नता में।

100/– श्री महावीर प्रसाद जी रविन्द्र कुमार जी जैन, साहड़ी, चि. देवेन्द्र कुमार की शादी के उपलक्ष्य में।

100/– गुप्त दान।

100/– श्री दयाचन्द जी जैन, हरसाना, जिला– अलवर, सुपुत्र चि. डॉ. मुकेश जी जैन का शुभ विवाह सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में।

गजेन्द्र निधि से साभार-प्राप्त

2,00,000/– गजेन्द्र निधि, मुम्बई से जिनवाणी को सप्रेम भेंट।

जीवदया हेतु साभार-प्राप्त

151/= श्री धर्मेन्द्र कुमार जी मोहनलाल जी मुणोत, अमरावती, नवकार महामन्त्र के अखण्ड जाप विधि–विधान से पूर्ण होने के उपलक्ष्य में जीव दया में भेंट।

100/– श्री रूपचन्द जी उत्तमचन्द जी संचेती, प्रिंपी (ब्राह्मणशेवगे) महाराष्ट्र, स्वरूपचन्द जी संचेती व इनकी सुपुत्री चन्द्रकला टाटिया के दुर्घटना से बाल बाल बचने पर जीवदया में सप्रेम भेंट।

हस्ती सम्मान-समारोह हेतु साभार-प्राप्त

11000/–स्वाध्याय संघ, मिन्ट स्ट्रीट, चेन्नई, विशिष्ट स्वाध्यायी सम्मान वर्ष 2002 के लिए आर्थिक सहयोग राशि सप्रेम भेंट।

स्वाध्याय संघ, जोधपुर को साभार-प्राप्त

500/– गुप्त दान। एक सुश्राविका द्वारा मुम्बई में आचार्यप्रवर के दर्शनार्थ आने की खुशी में सप्रेम भेंट।

समग्र जैन चातुर्मास सूची २००२ का प्रकाशन

सम्पूर्ण जैन समाज के चारों समुदायों (श्वेताम्बर, मूर्तिपूजक, स्थानकवासी तेरापंथी एवं दिगम्बर) के लगभग 12 हजार जैन साधु–साध्वियों के सन् 2002 के चातुर्मास स्थलों की सूचना देने वाली चातुर्मास सूची का शीघ्र प्रकाशन किया जा रहा है। सम्बद्ध सभी जानकारी चातुर्मास प्रारम्भ होने के पूर्व इस पते पर भिजवाएँ–

बाबूलाल जैन 'उज्ज्वल' सम्पादक, १०५ तिरुपति अपार्टमेण्ट, आकुर्ली क्रोस रोड नं. १, रेलवे स्टेशन के पास, कांदिवली (पूर्व) मुम्बई-४००१०१, फोन नं. ८८७१२७८

पर्युषण पर्वाराधना हेतु स्वाध्यायी आमन्त्रित कीजिए

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर विगत 57 से भी अधिक वर्षों से सन्त-सतियों के चातुर्मासों से वंचित गांव/शहरों में 'पर्वाधिराज पर्युषण पर्व' के पावन अवसर पर धर्माराधन हेतु योग्य, अनुभवी एवं विद्वान स्वाध्यायियों को बाहर क्षेत्र में भेजकर जिनशासन एवं समाज की महती सेवा करता आ रहा है। इस वर्ष भी उन क्षेत्रों में जहां जैन सन्त-सतियों के चातुर्मास नहीं हैं, स्वाध्यायी बन्धुओं को भेजने की व्यवस्था है। इस वर्ष पर्युषण पर्व 03 सितम्बर से 10 सितम्बर 2002 तक रहेंगे। अतः देश-विदेश के इच्छुक संघ के अध्यक्ष/मंत्री निम्नांकित बिन्दुओं की जानकारी के साथ अपना आवेदन पत्र दिनांक 31 जुलाई 2002 तक इस कार्यालय को अवश्य प्रेषित करने का श्रम करावें। पहले प्राप्त आवेदन पत्रों को प्राथमिकता दी जायेगी।

1. गांव/शहरका नाम..............जिला.............प्रान्त...............
2. श्री संघ का नाम व पूरा पता...
3. संघाध्यक्ष का नाम व पता..
4. संघ मंत्री का नाम व पता...
5. संबंधित जगह पहुंचने के विभिन्न साधन.............................
6. समस्त जैन घरों की संख्या...
7. क्या आपके यहां धार्मिक पाठशाला चलती है?.........................
8. क्या आपके यहां स्वाध्याय का कार्यक्रम नियमित चलता है?..........
9. पर्युषण सेवा संबंधी आवश्यक सुझाव.................................
10. अन्य विशेष विवरण...

आवेदन करने का पता-संयोजक/सचिव, श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, प्रधान कार्यालय-घोड़ों का चौक, जोधपुर- 342001 (राज.) फोन नं. 624891

स्वाध्यायियों के लिये आवश्यक सूचना

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर के समस्त स्वाध्यायियों को सूचित करते हुए परम प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है कि आगामी पर्वाधिराज पर्युषण पर्व 3 सितम्बर से 10 सितम्बर 2002 तक मनाये जायेंगे। आप सभी स्वाध्यायी बन्धुओं से निवेदन है कि आप पर्युषण पर्व में अवश्य पधारकर अपनी अमूल्य सेवायें संघ को प्रदान करावें। बाहर गांव पधारने से आपकी धर्म-साधना सुचारू रूप से होगी ही, अन्य भाई-बहिनों की साधना में भी आप निमित्त बन सकेंगे।

अतः आपसे निवेदन है कि आप अपनी पर्युषण स्वीकृति स्वाध्याय संघ कार्यालय-घोड़ों का चौक, जोधपुर-342001 (राज.) फोन नं. 624891 के पते पर अवश्य भिजवाने का श्रम करावें।

सुशीला बोहरा
संयोजक

रिखबचन्द मेहता
सचिव

हमारी प्रार्थना के केन्द्र में यदि वीतराग होंगे तो निश्चित रूप से हमारी मनोवृत्तियों में प्रशस्तता और उच्च स्थिति आयेगी।

-आचार्य श्री हस्ती

With Best Compliments From :

JIN GEMS

DIAMONDS, PRECIOUS & SEMI PRECIOUS STONES

12th Floor, Flat 'C'
Mass Resources Dev. Bldg.
12, Humphrey's Avenue
T.S.T. Kowloon, Hongkong
✆ 23671373, Fax : 23671511
MOBILE : 94327311, 92594051
E-mail : jingems@ctimail.com

Rajendra Daga

JAI MAHAVEER

JAI GURU HASTI

With Best Compliments From :

P. MANGILAL HARISH KUMAR KAVAD

GURU HASTI GOLD PALACE

No. 5, CAR STREET, POONAMALLEE
CHENNAI-600 056
PHONE : 6272609

BANKERS : PHONE / 6272906

No. 5 A, CAR STREET,
POONAMALLEE
CHENNAI-600 056

Gurudev

SURANA

Financial Corporation (India) Limited

Group of Surana

Since 1971

A Multi Faceted Finance Company
With Fraternity Feel, Holding Hands
With Customers in Their Success

Just Contact For

- **Hire Purchase**
- **Leasing**
- **Bills Discounting**
- **Foreign Exchange**

Invites Deposits from Public

Call

Phone : 8525596 (6 Lines) Fax : 044-8520587
Internet ID : suranaco@md3.vsnl.net.in
Sprint E-mail ID : surana.chh@rmd.sprintrpg.ems.vsnl.net.in
Regd Cum.Corp. H.O.: No. 16, Whites Road,. II Floor,
Royapettah, Chennai - 600 014

Branches :

★ Bangalore ★ Coimbatore ★ Ernakulam ★
★ Kollidam ★ New Delhi ★

शान्ति और समता के लिए न्याय-नीतिपूर्वक धर्म का आचरण ही श्रेयस्कर है।

"आचार्य श्री हस्ती"

With Best Compliments From :

EVEREST GEMS LTD.

12-A-2,CHINA INSURANCE BUILDING,

48, CAMERON ROAD,
T.S.T. KOWLOON
HONG-KONG

TEL : 23681199
FAX : 23671357

Director : Sunil Lunawat
Rajesh Kothari

With Best Compliments From :

धन रोग और शोक दोनों का घर है,
जबकि धर्म रोग और शोक दोनों को
काटने वाला है।
- आचार्य श्री हस्ती

HIMA GEMS

14-A, KOK-PAH MANSION
58-60, CAMERON ROAD,
T.S.T. KOWLOON
HONG-KONG

Director
HEMANT SANCHETI

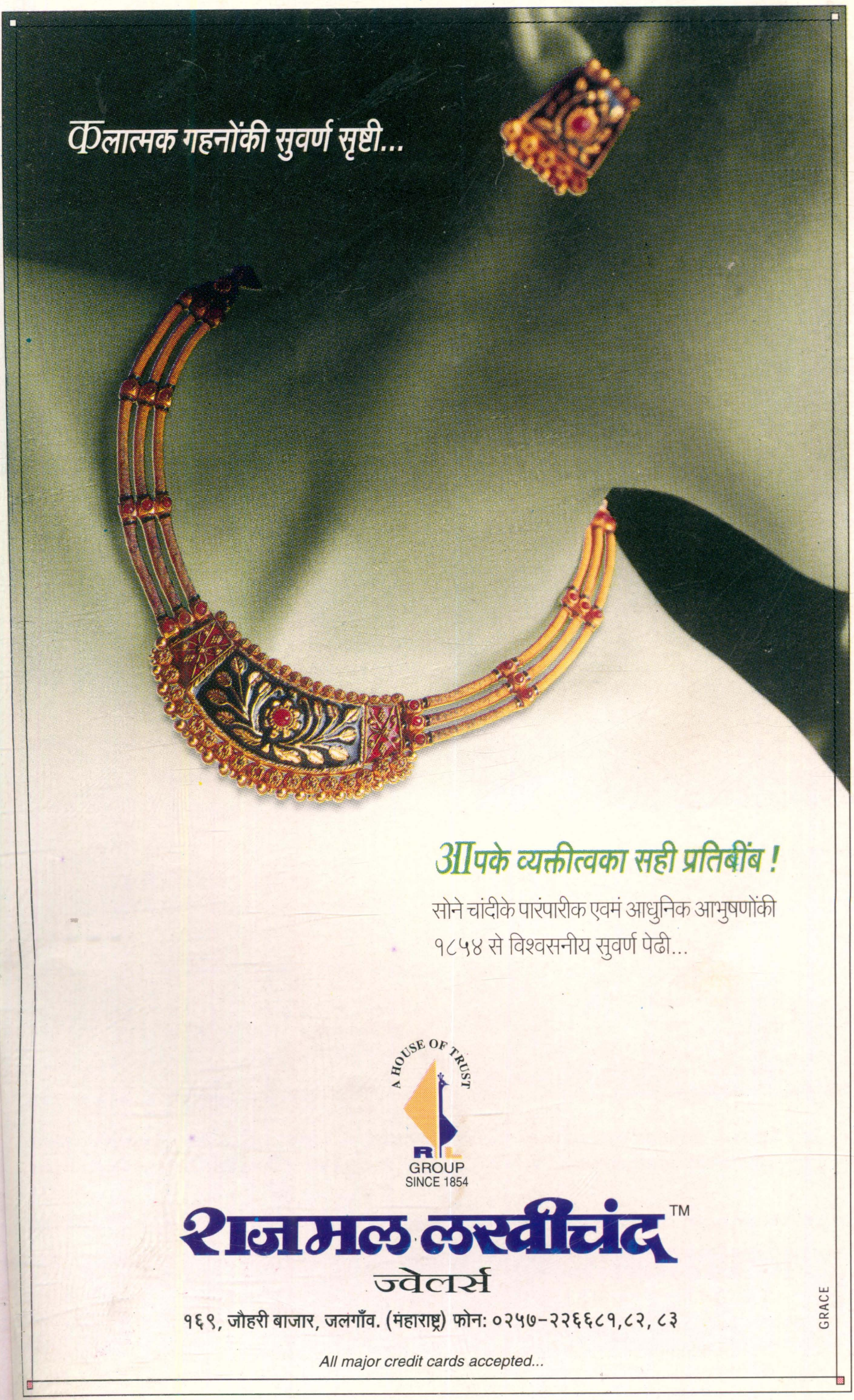

कलात्मक गहनोंकी सुवर्ण सृष्टी...
आपके व्यक्तीत्वका सही प्रतिबींब !
सोने चांदीके पारंपारीक एवमं आधुनिक आभुषणोंकी
१८५४ से विश्वसनीय सुवर्ण पेढी...
A HOUSE OF TRUST
RL
GROUP
SINCE 1854
राजमल लखीचंद TM
ज्वेलर्स
१६९, जौहरी बाजार, जलगाँव. (महाराष्ट्र) फोन: ०२५७-२२६६८१,८२, ८३
GRACE
All major credit cards accepted...

भारत सरकार द्वारा प्रदत्त पंजीकृत संख्या 3653/57 डाक पंजीयन संख्या RJ/2803/02

Home next to everything you need.
And far from everything you don't.

KALPATARU HABITAT
DR. S.S. RAO ROAD, PAREL

- Twin 23 storeyed luxury apartment blocks
- 2 &3 BHK apartments and 4 BHK penthouses
- Swimming pool, clubhouse & gym
- Squash court & tennis court
- Landscaped gardens & modern security systems

KALPATARU RESIDENCY
OPPOSITE CINE PLANET, SION CIRCLE

- Premium 18 storeyed towers with 2 & 3 BHK flats
- Swimming pool, squash court & gym
- Clubhouse, party lounge & landscaped gardens
- Basement and open car parking
- Tower A nearing completion

KARMA KSHETRA
NEAR SHANMUKHANANDA HALL, KING'S CIRCLE

- 25 storeyed tower with 2 wings
- 2 BHK apartments
- Landscaped gardens
- Ample car parking and modern security systems

Centrally located, they are near schools, banks, supermarkets, movie halls... And once you step in, you'll leave the hectic world outside. There'll be just you and a feeling that says, 'Relax, you are home'.

The projects are under construction/nearing completion. For details call 281 7171/282 2679/284 4102.

TRITON/2002/KCL/036

KALPA-TARU

111, Maker Chambers IV, Nariman Point, Mumbai 400 021.
Fax: 204 1548/288 4778. E-mail: sales@kalpataru.com or
visit us at www.kalpataru.com

प्रकाशचन्द डागा, मन्त्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर की ओर से संजय मित्तल द्वारा दी डायमण्ड प्रिन्टिंग प्रेस, एम.एस.बी. का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशचन्द डागा द्वारा प्रकाशित तथा सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, बापू बाजार, जयपुर (राज.) से प्रकाशित। प्रधान सम्पादक डॉ. धर्मचन्द जैन।